RNI No. UPHIN/2000/3766 ISSN No. 2581-3528 | ₹:20

केशव संवाद

कार्तिक-मार्गशीर्ष विक्रम सम्वत् 2078 (नवम्बर -2021)

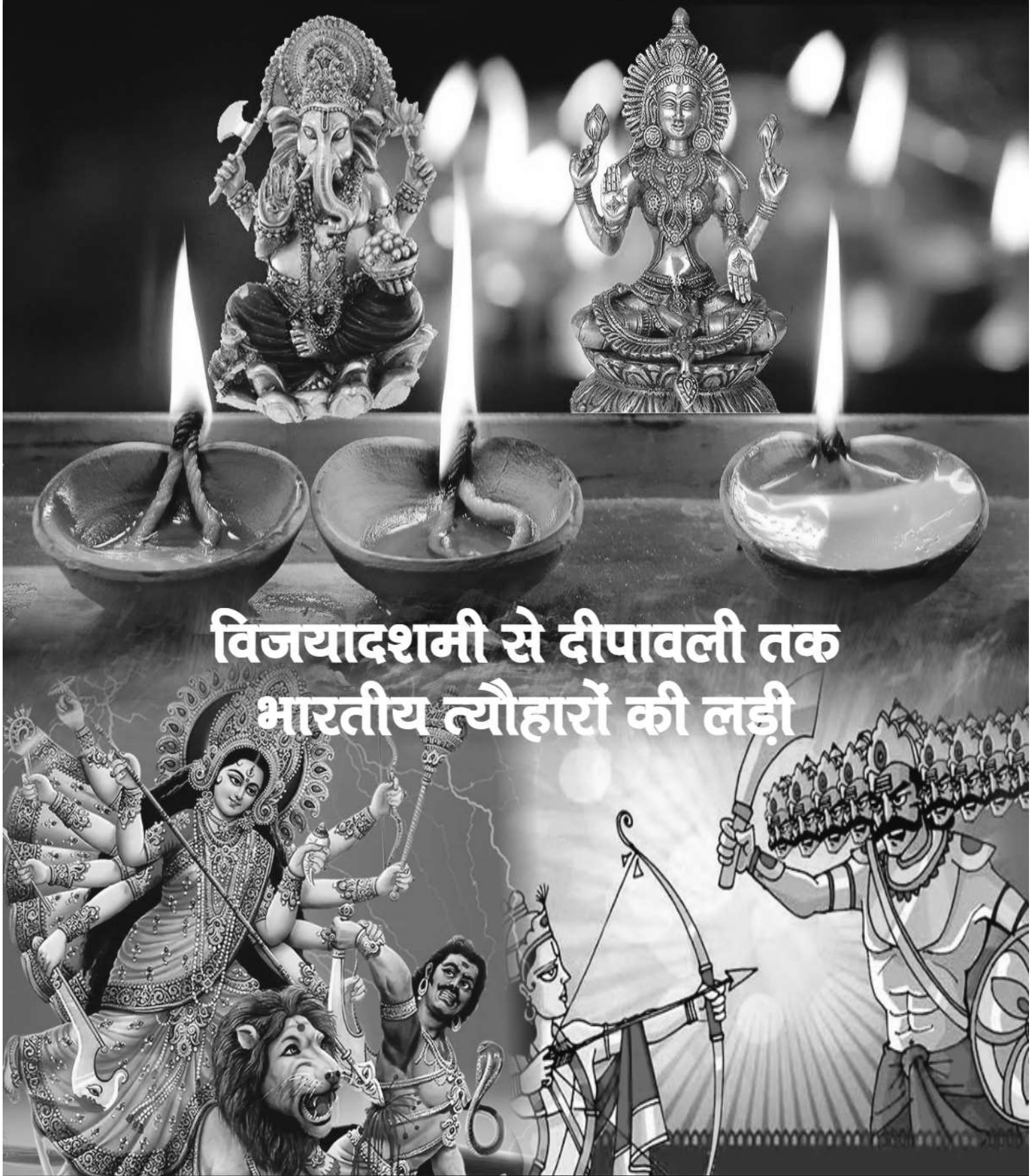

विजयादशमी से दीपावली तक भारतीय त्यौहारों की लड़ी

एक जनपद एक उत्पाद
उत्तर प्रदेश

सबके साथ खड़ी है सरकार

औद्योगिक इकाइयों की समस्याओं के समाधान की नई पहल

एमएसएमई साथी पोर्टल/एप

एप के माध्यम से उद्यमी अपनी औद्योगिक इकाइयों के संचालन एवं अन्य गतिविधियों से संबंधित समस्याओं और सुझावों को सरकार तक पहुंचा सकते हैं।

एमएसएमई साथी पोर्टल/एप की विशेषताएं

• एमएसएमई की स्थापना का पूर्ण मार्गदर्शन • उपयोग एवं नेविगेशन में आसान • त्वरित समस्या निवारण में सहायक • उच्च अधिकारियों की सतत निगरानी • संबंधित विभाग से नोडल ऑफिसर नियुक्त • सिर्फ एक क्लिक में उत्तर प्रदेश के विभिन्न औद्योगिक अवसरों की जानकारी

मिशन शक्ति
नारी सुरक्षा
नारी सम्मान
नारी स्वावलंबन

मिशन रोज़गार

अधिक जानकारी के लिए
www.msmesathi.in पर विजिट करें।
टोल फ्री नं. 1800-1800-888

आज ही एमएसएमई साथी एप डाउनलोड करें

Download on the App Store

GET IT ON Google Play

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम तथा निर्यात प्रोत्साहन विभाग, उत्तर प्रदेश

हर शनिवार व रविवार करें मच्छरों पर वार

"स्वस्थ रहने की पहली शर्त है 'स्वच्छता'। प्रदेश में संचालित किए जा रहे 'स्वच्छता अभियान' से विषाणु जनित रोगों पर नियंत्रण पाया गया है। आइए, घर एवं कार्यस्थल के आसपास नियमित सफाई रखकर मच्छर जनित बीमारियों की रोकथाम में अपनी महती भूमिका निभाएं।"

- योगी आदित्यनाथ
मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

डेंगू से बचाव के उपाय

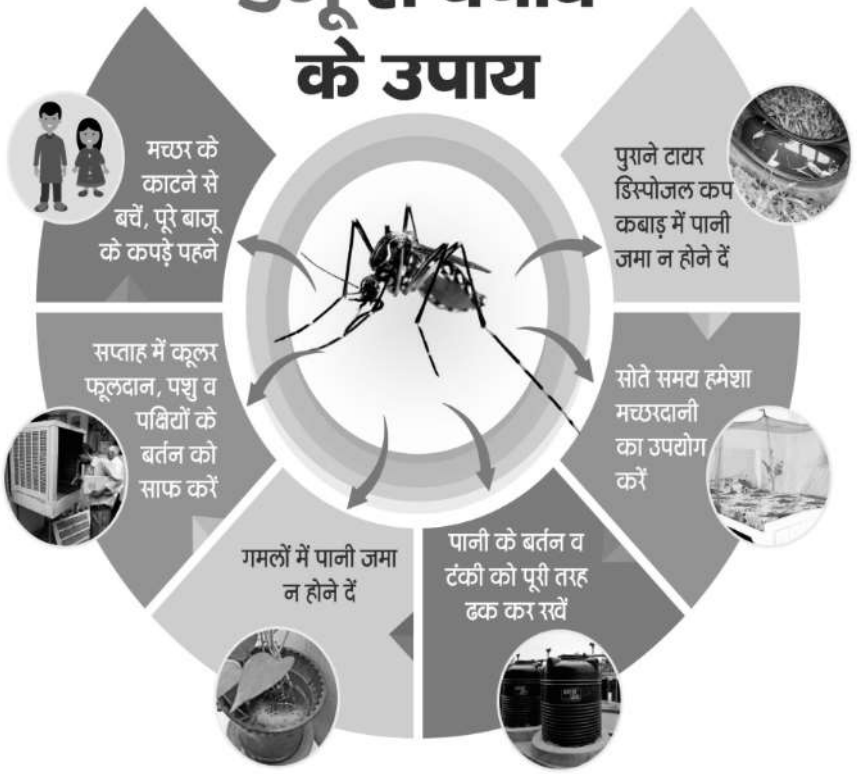

यदि तेज बुखार के साथ सिर दर्द/आँखों के पीछे दर्द, जोड़ों और मांसपेशियों में दर्द, त्वचा पर लाल चकत्ते और थकान हो तो तुरन्त अपने नजदीकी स्वास्थ्य केन्द्र पर जाकर निःशुल्क उपचार कराएं

5 सितम्बर, 2021 से पूरे प्रदेश में सफाई-स्वच्छता-स्वास्थ्य संबंधी विशेष अभियान

प्रत्येक जनपद में एक वरिष्ठ अधिकारी की नोडल अधिकारी के रूप में तैनाती

माननीय जनप्रतिनिधियों के मार्गदर्शन में निगरानी समितियों के सहयोग से पूरे प्रदेश में अभियान का पर्यवेक्षण

इन बातों का रखें ध्यान

डबल मास्क पहनें

एक-दूसरे से दो गज की दूरी रखें

साबुन या सैनिटाइजर से बार-बार हाथ धोएं

प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाएं

टीका जीत का
कोविड वैक्सीन समय पर लगवाएं

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

ISSN No. 2581-3528

संपादकीय.....

15 अक्टूबर, विजयादशमी उत्सव पर परम पूज्य सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी ने अपने उद्‌बोधन में देश की आजादी के समय को याद करते हुए कहा कि अगस्त 1947 को हम स्वाधीन हुए। हमने अपने देश के सूत्र को आगे चलाने के लिए स्वयं के हाथों में लिए। स्वाधीनता से स्वतंत्रता की ओर हमारी यात्रा का वह प्रारंभ बिंदु था। हम सब जानते हैं कि हमें यह स्वाधीनता रातों रात नहीं मिली। स्वतंत्र भारत का चित्र कैसा हो इसकी, भारत की परंपरा के अनुसार समान सी कल्पनाएँ मन में लेकर, देश के सभी क्षेत्रों से सभी जाति वर्गों से निकले वीरों ने त्याग, तपस्या और बलिदान के हिमालय खड़े किये, दासता के दंश को झेलता समाज भी एक साथ उनके साथ खड़ा रहा, तब शान्तिपूर्ण सत्याग्रह से लेकर सशस्त्र संघर्ष तक सारे पथ स्वाधीनता के पड़ाव तक पहुँच पाये।

सौ करोड़ टीकाकरण के लक्ष्य को प्राप्त करना देश के सामर्थ्य को दर्शाता है। मजबूत इच्छाशक्ति एवं सामंजस्य के दम पर भारत ने पूरे विश्व में अपनी दक्षता और क्षमता को स्थापित कर दिया। यह बताता है कि भारतीयों का विश्वास व हौसला बुलंद है। जहां इस महामारी के शुरुआती दौर में हम बिल्कुल ही अनपढ़ से थे, आज उसके गुरु बन चुके हैं। यह संभव तभी हुआ जब सफल नेतृत्व ने देशवासियों के आत्मविश्वास को जगाया तथा राज्य सरकार एवं केंद्र सरकार ने आपसी समन्वय बनाकर चुनौती को स्वीकार किया। सबसे बड़े टीकाकरण अभियान में स्वास्थ्य कर्मी, टीका निर्माण कंपनी व अन्य कर्मचारियों ने बहुत ही प्रशंसनीय कार्य किया। हालांकि अन्य विषयों की भांति यह विषय भी कलुषित राजनैतिक विचार से अछूता नहीं रहा एवं देश के भीतर ही कई मत उत्पन्न हो गए फिर भी देश की जनता ने जो ठाना उसे पूरा किया। जनता को इसका भी ध्यान देना होगा कि कोरोना अभी खत्म नहीं हुआ है बल्कि कम हुआ है इसलिए सतर्कता व सावधानी आवश्यक है। विजयादशमी से लेकर दीपावली तक त्यौहारों की इस लड़ी में सभी प्रोटोकॉल का पालन करते हुए आनंद लें।

एक तरफ सौ करोड़ टीकाकरण पूरा करने के लक्ष्य को प्राप्त करने की खुशी, वहीं दूसरी तरफ कश्मीर व बांग्लादेश की घटनाएं दिल को स्तब्ध करने वाली हैं। जहां हिंदू समुदाय को निशाना बनाकर उन पर हमला किया जा रहा है। बांग्लादेश में हिन्दुओं पर हुए हमले की घटना बांग्लादेश के साथ-साथ भारत के लिए भी चिंता का विषय है। 1974 में हुई पहली जनगणना के समय बांग्लादेश में हिंदू आबादी 13.5 प्रतिशत थी लेकिन 2011 में 8.5 प्रतिशत रह गई है।

कश्मीर में जिस प्रकार गैर कश्मीरियों को निशाना बनाया जा रहा है और हिंदू व सिखों पर हमला किया जा रहा है वह राष्ट्रीय सुरक्षा का प्रश्न है। निश्चित रूप से केंद्र व राज्य सरकार के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती है। इस प्रकार की शर्मनाक घटनाएं देश के सामाजिक सद्‌भाव पर चोट पहुंचाने का कार्य करती हैं। ऐसी घटनाओं के सहारे देशद्रोही ताकतें अपनी राजनैतिक रोटियां सेकने लगती हैं और समाज में बंटवारे की राजनीति के साथ जहर घोलने का कार्य करती हैं। ऐसी स्थिति में एकजुटता आवश्यक है क्योंकि कोरोना महामारी की जंग तो जीत लेंगे परंतु ऐसी दूषित मानसिकता, सांप्रदायिक उन्माद व आतंकवाद के खिलाफ जंग कैसे जीतेंगे? आशा है कि नागरिकों में राष्ट्र प्रथम के भाव सृजित करने एवं सेना के आधुनिकीकरण से निर्दोष नागरिकों एवं सैनिकों के बलिदान के सिलसिले पर शीघ्र विराम लगेगा.....

केशव संवाद पत्रिका का नवम्बर अंक विभिन्न पहलु को अपने आप में समाये हुए आपके समक्ष प्रस्तुत है। आशा है कि प्रस्तुत अंक सुधि पाठकों की अपेक्षाओं पर खरा उतरेगा।

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं...

संपादक

ISSN No. 2581-3528

केशव संवाद

RNI No. UPHIN/2000/3766

ISSN No. 2581-3528

नवम्बर, 2021
वर्ष : 21 अंक : 11

प्रबंध निदेशक
अणंज कुमार त्यागी

संपादक
कृपाशंकर

कार्यकारी संपादक
डॉ. प्रियंका सिंह

संपादक मंडल
डॉ. प्रदीप कुमार, डॉ. अखिलेश मिश्र,
डॉ. नीलम कुमारी, रामकुमार शर्मा
डॉ. मनमोहन सिंह, अनीता चौधरी
अनुपमा अग्रवाल, प्रमोद मल्होत्रा

पृष्ठ संयोजन
वीरेंद्र पोखरियाल

संपादकीय कार्यालय
प्रेरणा शोध संस्थान न्यास
सी-56/20 सेक्टर-62, नोएडा -201301
फोन नं. 0120 4565851, 2400335
ईमेल : keshavsamvad@gmail.com
वेबसाइट : www.prernanews.in

स्वामी पंकज कुमार की ओर से
मुद्रक/प्रकाशक सुखवीर प्रकाश द्वारा
चंद्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क प्रा. लि.
नोएडा से मुद्रित तथा केशव भवन
105, आर्यनगर सूरजकुंड रोड
मेरठ से प्रकाशित

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निपटारा मेरठ की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों/फोरम में मान्य होगा। संपादक

विषय सूची

परम पूज्य सरसंघचालक जी का उद्बोधन.....06

सेवा के उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता संघ – अनुपमा अग्रवाल.....12

मीडिया राष्ट्र और समाज के प्रति अधिक ... – डॉ. अनिल निगम.....14

चुप रहने की शक्ति – नरेन्द्र सिंह भदौरिया.....15

सोशल मीडिया की जद में असावधान भारत – आशीष कुमार 'अंशु'.....16

नागरिक पत्रकारिता और उसका उत्तरदायित्व –मोहित कुमार.....18

विजयादशमी से दीपावली तक त्योहारों की.. – ज्योति सिंह.....20

सनातन धर्म में हर पल पर्व होता है – रवि पाराशर.....24

बॉलिबुड समीक्षा – अतुल गंगवार.....25

कैसे बने डिफेंस रिपोर्टर – अनीता चौधरी.....26

ग्वालियर दुर्ग का समृद्ध चौथा द्वार – संदीप कुमार श्रीवास्तव.....28

अक्टूबर अंक की समीक्षा – डॉ. प्रियंका सिंह.....29

मीडिया सुर्खियां – प्रतीक खरे.....30

प्रेरणा दिवस – डेस्क.....32

पाठकगण पत्रिका के बारे में अपने सुझाव एवं प्रतिक्रिया, 'संपादक के नाम पत्र' शीर्षक से ई-मेल (keshavsamvad@gmail-com) के माध्यम से भेज सकते हैं। चुने हुए पत्रों को पत्रिका के अगले अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

ISSN No. 2581-3528

परम पूज्य सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी का उद्‌बोधन

यह वर्ष हमारी स्वाधीनता का 75 वां वर्ष है। 15 अगस्त 1947 को हम स्वाधीन हुए। हमने अपने देश के सूत्र देश को आगे चलाने के लिए स्वयं के हाथों में लिए। स्वाधीनता से स्वतंत्रता की ओर हमारी यात्रा का वह प्रारंभ बिंदु था। हम सब जानते हैं कि हमें यह स्वाधीनता रातों रात नहीं मिली। स्वतंत्र भारत का चित्र कैसा हो इसकी, भारत की परंपरा के अनुसार समान सी कल्पनाएँ मन में लेकर, देश के सभी क्षेत्रों से सभी जातिवर्गों से निकले वीरों ने तपस्या त्याग और बलिदान के हिमालय खडे किये। दासता के दंश को झेलता समाज भी एक साथ उनके साथ खडा रहा। तब शान्तिपूर्ण सत्याग्रह से लेकर सशस्त्र संघर्ष तक सारे पथ स्वाधीनता के पड़ाव तक पहुँच पाये। परन्तु हमारी भेद जर्जर मानसिकता, स्वधर्म स्वराष्ट्र और स्वतंत्रता की समझ का अज्ञान, अस्पष्टता, ढुलमुल नीति, तथा उनपर खेलने वाली अंग्रेजों की कूटनीति के कारण विभाजन की कभी शमन न हो पाने वाली वेदना भी प्रत्येक भारतवासी के हृदय में बस गई। हमारे संपूर्ण समाज को विशेष कर नयी पीढ़ी को इस इतिहास को जानना, समझना तथा स्मरण रखना चाहिए। किसी से शत्रुता पालने के लिए यह नहीं करना है। आपस की शत्रुताओं को बढ़ाकर उस इतिहास की पुनरावृत्ति कराने के कुप्रयासों को पूर्ण विफल करते हुये, खोयी हुई एकात्मता व अखंडता हम पुनः प्राप्त कर सकें इस लिये वह स्मरण आवश्यक हैं ।

सामाजिक समरसता : एकात्म व अखण्ड राष्ट्र की पूर्व शर्त समताधिष्ठित भेदरहित समाज का विद्यमान होना है। इस कार्य में बाधक बनती जातिगत विषमता की समस्या हमारे देश की पुरानी समस्या है। इस को ठीक करने के लिए अनेक प्रयास अनेक ओर से, अनेक प्रकार से हुए। फिर भी यह समस्या सम्पूर्णतः समाप्त नहीं हुई है। समाज का मन अभी भी जातिगत विषमता की भावनाओं से जर्जर है। देश के बौद्धिक वातावरण में इस खाई को पाट कर परस्पर आत्मीयता व संवाद को बनाने वाले स्वर कम हैं, बिगाड़ करने वाले अधिक हैं। यह संवाद सकारात्मक हो इसपर ध्यान रखना पड़ेगा। समाज की आत्मीयता व समता आधारित रचना चाहने वाले सभी को प्रयास करने पड़ेंगे। सामाजिक तथा कौटुम्बिक स्तर पर मेलजोल को बढ़ाना होगा। कुटुम्बों की मित्रता व मेलजोल सामाजिक समता व एकता को बढ़ावा दे सकता है। सामाजिक समरसता के वातावरण को निर्माण करने का कार्य संघ के स्वयंसेवक सामाजिक समरसता गतिविधियों के माध्यम से कर रहे हैं।

स्वातंत्र्य तथा एकात्मता : भारत की अखण्डता व एकात्मता की श्रद्धा व मनुष्यमात्र की स्वतंत्रता की कल्पना तो शतकों की परंपरा से अब तक हमारे यहां चलती आई है। उसके लिए खून पसीना बहाने का कार्य भी चलता आया है। यह वर्ष श्री गुरु तेग बहादुर जी महाराज के प्रकाश का 400 वां वर्ष है। उनका बलिदान भारत में पंथ संप्रदाय की कट्टरता के कारण चले हुए अत्याचारों को समाप्त करने के लिए व अपने अपने पंथ की उपासना करने का स्वातंत्र्य देते हुए सबकी उपासनाओं को सन्मान व स्वीकार्यता देने वाला इस देश का परंपरागत तरीका फिर से स्थापन करने के लिए ही हुआ था। वे हिन्द की चादर कहलाए। प्राचीन समय से समय की उथल–पुथल में भारत की उदार सर्वसमावेशक संस्कृति का प्रवाह अखंड चलता रखने के लिए प्राण

ISSN No. 2581-3528

अर्पण करने वाले वीरों की आकाशगंगा के वे सूर्य थे। हमारे उन महान पूर्वजों का मन में बसा गौरव, जिस भारत माता के लिये उनका जीवन लगा उस मातृभूमि की अविचल भक्ति, तथा उन्हीं के द्वारा संरक्षित व परिवर्तित हमारी उदार सर्व समावेशी संस्कृति ये हमारे राष्ट्र जीवन के अनिवार्य आधार हैं।

भारतवर्ष की कल्पना में स्वतंत्र जीवन का एक निश्चित अर्थ है । शतकों पहले महाराष्ट्र में संत ज्ञानेश्वर महाराज हो गए उनके द्वारा रचित पसायदान में वे कहते हैं...

जे खळांची व्यंकटी सांडों। तयां सत्कर्मी रति वाढो।

भूतां परस्परें पडो, मैत्र जीवाचें। ।

दुरितांचे तिमिर जावो। विश्व स्वधर्मसूर्यें पाहो

जो जे वांच्छील तो ते लाहो। प्राणिजात । ।

अर्थात दुष्टों का टेढ़ापन जाए, उनकी प्रवृत्ति सदाचार में बढ़े, जीवों में परस्पर मित्र भाव हो, संकटों का अंधेरा छठ जाए, सब में स्वधर्म का बोध जगे तथा सब की सब मनोकामनाएँ पूरी हों ।

यही बात आधुनिक काल में गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर द्वारा रचित सुप्रसिद्ध कविता में दूसरे शब्दों में कही गई है...

चित्त जेथा भयशून्य उच्च जेथा शिर,
ज्ञान जेथा मुक्त, जेथा गृहेर प्राचीर

आपन प्रांगणतले दिवस–शर्वरी वसुधारे राखे नाइ खण्ड क्षूद्र करि।

जेथा वाक्य हृदयेर उत्समूख हते उच्छसिया उठे जेथा निर्वारित स्रोते,

देशे देशे दिशे दिशे कर्मधारा धाय अजस्र सहस्रविध चरितार्थाय।

जेथा तूच्छ आचारेर मरू–वालू–राशि विचारेर स्रोतपथ फेले नाइ ग्रासि–

पौरूषेरे करेनि शतधा नित्य जेथा तूमि सर्व कर्म चिंता–आनंदेर नेता ।

निज हस्ते निर्दय आघात करि पिता भारतेरे सेइ स्वर्गे करो जागृत ।।

श्री. शिवमंगलसिंह सुमन जी ने इसे हिंदी में भाषान्तरित किया है–

जहां चित्त भय से शून्य हो, जहां हम गर्व से माथा ऊँचा करके चल सकें, जहां ज्ञान मुक्त हो।

जहां दिन रात विशाल वसुधा को खंडों में विभाजित कर छोटे और छोटे आंगन न बनाए जाते हों, जहाँ हर वाक्य हृदय की गहराई से निकलता हो।

जहाँ हर दिशा में कर्म के अजस्त्र नदी के स्रोत फूटते हों, और निरंतर अबाधित बहते हों।

जहाँ विचारों की सरिता तुच्छ आचारों की मरू भूमि में न खोती हो।

जहाँ पुरूषार्थ सौ सौ टुकड़ों में बँटा हुआ न हो।

जहां पर सभी कर्म, भावनाएँ, आनंदानुभुतियाँ तुम्हारे अनुगत हों। हे पिता, अपने हाथों से निर्दयता पूर्ण प्रहार कर

उसी स्वातंत्र्य स्वर्ग में इस सोते हुए भारत को जगाओ ।

देश के स्वातंत्र्योत्तर जीवन के इस कल्पना चित्र के संदर्भ में जब परिस्थितियाँ देखते हैं तो स्वाधीनता से स्वतंत्रता तक हमारी यात्रा अभी जारी है, पूरी नहीं हुई है यह ध्यान में आता है। भारत की प्रगति तथा विश्व में सम्मानित स्थान पर उसका पहुँचना जिनको अपने निहित स्वार्थों के खिलाफ लगता है ऐसे दुनिया में कुछ तत्व हैं। कुछ देशों में उनका बल भी है। भारत में सनातन मानवता के मूल्यों के आधार पर विश्व की धारणा करने वाला धर्म प्रभावी होता है तो स्वार्थी तत्वों के कुत्सित खेल बंद हो जाएंगे। विश्व को उसका खोया हुआ संतुलन व परस्पर मैत्री की भावना देने वाला धर्म का प्रभाव ही भारत को प्रभावी करता है। यह ना हो पाए इसीलिए भारत की जनता, भारत की वर्तमान स्थिति, भारत का इतिहास, भारत की संस्कृति, भारत में राष्ट्रीय नवोदय का आधार बन सकने वाली शक्तियाँ, इन सबके विरुद्ध असत्य कुत्सित प्रचार करते हुए, विश्व को तथा भारत के जनों को भी भ्रमित करने का काम चल रहा है। अपनी पराजय तथा संपूर्ण विनाश का भय इन शक्तियों के आंखों के सामने होने के कारण अपनी शक्तियों को सम्मिलित करते हुए विभिन्न रूप में, प्रकट तथा प्रच्छन्न रूप से ध्यान में आने वाले स्थूल तथा ध्यान में ना आने वाले सूक्ष्म प्रयास चल रहे हैं। उन सबके द्वारा निर्मित छल कपट तथा भ्रमजाल से सजगतापूर्वक स्वयं को तथा समाज को बचाना होगा।

सारांश में कहना हो तो दुष्टों की टेढी बुद्धि अभी भी वैसी ही है और अपने दुष्कर्मों को नये नये साधनों के माध्यम से आगे बढ़ाने के प्रयास में लगी है। निहित स्वार्थों के चलते तथा अहंकारी कट्टरपंथियों के चलते कुछ समर्थन जुटा लेना, लोगों की अज्ञानता का लाभ उठाकर उन्हें असत्य के आधार पर भ्रमित करना, उनकी वर्तमान अथवा काल्पनिक समस्याओं के आधार पर उन्हें भडकाना, समाज में किसी प्रकार से व किसी भी कीमत पर असंतोष, परस्पर विरोध, कलह, आतंक और अराजकता उत्पन्न कर अपने ढलते प्रभाव को फिर समाज पर थोपने का उनका कुत्सित मन्तव्य पहले ही उजागर हो चुका है।

अपने समाज में व्याप्त 'स्व' के बारे में अज्ञान, अस्पष्टता तथा अश्रद्धा के साथ–साथ आजकल विश्व में बहुत गति से प्रचारित होती जा रही कुछ नयी बातें भी इन स्वार्थी शक्तियों के कुत्सित खेलों के लिए सुविधाजनक बनी है। बिटक्वाइन जैसा अनियंत्रित चलन प्रच्छन्न आर्थिक स्वैराचार का माध्यम बन कर सभी देशों की अर्थव्यवस्थाओं के लिए एक चुनौती बन सकता है। ओटीटी प्लैटफॉर्म पर कुछ भी प्रदर्शित होगा और कोई भी उसे देखेगा ऐसी स्थिति है। अभी ऑनलाइन शिक्षा चलानी पडी। बालकों का मोबाइल पर देखना भी नियम सा बन गया। विवेकबुद्धि तथा उचित नियंत्रण का अभाव इन सभी नये वैध अवैध साधनों के सम्पर्क में समाज को किधर व कहाँ तक ले जाएगा यह कहना कठिन है, परन्तु देश के विरोधी तत्व इन साधनों का क्या उपयोग करना चाहते हैं यह सब जानते हैं। इसलिए ऐसी सभी बातों पर समय रहते हुए उचित नियंत्रण का प्रबंध शासन को करना चाहिए।

कुटुंब प्रबोधन : परन्तु इन सब बातों के परिणामकारक नियंत्रण के लिए अपने–अपने घर में ही उचित अनुचित तथा करणीय अकरणीय का विवेक देनेवाले संस्कारों का वातावरण बनाना होगा। अनेक व्यक्ति, संगठन तथा संत महात्मा इस कार्य को कर रहे हैं। हम भी अपने

ISSN No. 2581-3528

कुटुम्ब में इस प्रकार की चर्चा संवाद प्रारम्भ कर सहमति बना सकते हैं। कुटुम्ब प्रबोधन गतिविधि के माध्यम से संघ के स्वयंसेवक भी यह कार्य कर रहे हैं। 'मन का ब्रेक उत्तम ब्रेक' ऐसा एक वाक्य आपने सुना या पढा होगा। भारतीय संस्कारजगत पर सभी ओर से हमले के द्वारा हमारे जीवन में श्रद्धा के निखन्दन तथा भ्रष्ट स्वैराचार के बीजारोपण का जो भीतरघात चल रहा है उसके सभी उपायों का आधार यही विवेकबुद्धि होगी।

कोरोना से संघर्ष : कोरोना विषाणु के आक्रमण के तीसरी लहर का सामना करने की पूरी तैयारी रखते हुए हम अपनी स्वतंत्रता के 75 वर्ष भी मनाने की तैयारियां कर रहे हैं। कोरोना की दूसरी लहर में समाज ने फिर एक बार अपने सामूहिक प्रयास के आधार पर कोरोना बीमारी के प्रतिकार का उदाहरण खडा किया। इस दूसरी लहर ने अधिक मात्रा में विनाश किया तथा युवा अवस्था में ही कई जीवनों का ग्रास कर लिया। परन्तु ऐसी स्थिति में भी प्राणों की परवाह न करते हुए जिन बंधु भगिनियों ने समाज के लिए सेवा का परिश्रम किया वे वास्तव में अभिनंदनीय है। और संकटों के बादल भी पूरी तरह छटे नहीं है। कोरोना की बीमारी से हमारा संघर्ष अभी समाप्त नहीं हुआ, यद्यपि तीसरी लहर का सामना करने की हमारी तैयारी लगभग पूरी हो चुकी है। बड़ी मात्रा में टीकाकरण हो चुका है, उसे पूर्ण करना पड़ेगा। समाज भी सावधान है, और संघ के स्वयंसेवक तथा समाज के अनेक सज्जन तथा संगठनों ने गांव स्तर तक, कोरोना के संकट से संघर्ष में समाज को सहायता करने वाले, सजग रखने वाले कार्यकर्ताओं के समूहों का प्रशिक्षण कर लिया है। हमारी तैयारी पूरी है तथा इस संकट का संभवतः यह आखिरी चरण, बहुत तीव्र नहीं होगा ऐसी आशा करने की गुंजाइश भी है। परंतु किसी भी अनुमान पर निर्भर न रहते हुए पूर्ण सजगता के साथ तथा सरकारों के निर्णयों का अनुशासन पूर्वक पालन करते हुए हमें चलना होगा।

लगता है कि कोरोना के चलते समाज के क्रियाकलापों को बंद रखने की न शासन की मनःस्थिति है न समाज की। कोरोना की गत दो लहरों में लॉकडाउन के कारण आर्थिक क्षेत्र की काफी हानि हुई है। उसको पूरा करते हुए देश के अर्थ तंत्र को पहले से भी अधिक गति से आगे बढ़ाने की चुनौती हम सब लोगों के सामने है। उसके लिए चिंतन तथा प्रयास भी चल रहे है। अपने भारतीय आर्थिक क्षेत्र में आज कोरोना के कारण उपस्थित आर्थिक संकट का सामना करने का आत्मविश्वास व सामर्थ्य दिखाई देता है। कुछ क्षेत्रों से यह बात भी सुनाई दे रही है कि बहुत द्रुत गति से व्यापार तथा अर्थायाम पूर्ववत हो रहा है ठीक से सबकी सहभागिता शासन प्राप्त कर लें तो उपरोक्त संकट का सामना देश कर लेगा यह विश्वास लगता हैं। परंतु यह हमारे लिए अपने 'स्व' पर आधारित तंत्र का चिंतन, मनन तथा रचना करने का अवसर भी बन सकता है।

समाज में भी स्व का जागरण तथा आत्मविश्वास बढ़ रहा है यह दिख रहा है। श्रीराम जन्मभूमि मंदिर के लिए धन संग्रह अभियान के समय देखा गया सार्वत्रिक उत्साहपूर्ण तथा भक्तियुक्त प्रतिसाद इसी 'स्व' के जागरण का लक्षण है। उसका स्वाभाविक परिणाम समाज के पुरुषार्थ का अनेक क्षेत्रों में प्रगटीकरण होने में होता है। हमारे खिलाड़ियों ने टोकियो ऑलंपिक में 1 स्वर्ण, 2 रौप्य (रजत) व 4 कांस्य पदक जीतकर तथा पॉरा ऑलंपिक में 5 स्वर्ण, 8 रौप्य (रजत) तथा 6 कांस्य पदक जीतकर अत्यंत अभिनंदनीय विजय तथा पुरुषार्थ का परिचय दिया है। देश में सर्वत्र हुए उनके अभिनन्दन में हम सभी

सहभागी है।

स्वास्थ्य के प्रति हमारी दृष्टि : हमारे पास हमारे 'स्व' की परंपरा से आयी हुई दृष्टि व ज्ञान आज भी उपयोगी है यह इसी कोरोना की परिस्थिति ने दिखा दिया। हमारे परंपरागत जीवन शैली की रोगों के प्रतिबंध में तथा आयुर्वेदिक औषधियों की कोरोना के प्रतिकार व उपचार में प्रभावी भूमिका को हमने अनुभव किया। हमारे विशाल देश में प्रत्येक व्यक्ति को सुलभता से मिल सके तथा सस्ते दामों में उपलब्ध हो ऐसी चिकित्सा व्यवस्था आवश्यक है यह हम सब लोग जानते हैं, अनुभव करते हैं। भौगोलिक विस्तार तथा जनसंख्या की दृष्टि से विशाल इस देश में हमें रोगमुक्ति के साथ ही आयुर्वेद के स्वास्थ्यवृत्त का भी विचार करना पड़ेगा।

आहार, विहार, व्यायाम तथा चिंतन के हमारे परंपरागत विधि निषेध के आधार पर ऐसा जीवन, जिसकी शैली से ही रोगों का उपद्रव ही न हो या कम से कम हो, ऐसा वातावरण खड़ा किया जा सकता है। हमारी वह जीवनशैली पर्यावरण से पूर्ण सुसंगत तथा संयम आदि दैवी गुणसंपदा प्रदान करने वाली है। कोरोना बीमारी के दौर में सार्वजनिक कार्यक्रम, विवाह आदि कार्यक्रम सब प्रतिबंधित थे। उन्हें हमें सादगी से ही निभाना पड़ा। दिखने वाले उत्साह व रौनक में कमी तो आयी, परन्तु हम धन, ऊर्जा, तथा अन्य संसाधनों की फिजूलखर्ची से बच गये और पर्यावरण पर उसका सीधा अनुकूल परिणाम भी हमने प्रत्यक्ष अनुभव किया। अब परिस्थितियों के पूर्ववत होने पर इस अनुभव से बोध लेकर हमें उन अपनी मूल जीवनशैली के अनुसार उन फिजूलखर्ची व तामझामों से बचते हुए पर्यावरण–सुसंगत जीवनशैली में ही कायम होना चाहिए। पर्यावरण से सुसंगत जीवनशैली के प्रचार प्रसार कार्य बहुतों के द्वारा चल ही रहा है। संघ के स्वयंसेवक भी पर्यावरण संरक्षण गतिविधि द्वारा पानी बचाना, प्लास्टिक छुडाना तथा पेड लगाना इन आदतों को लोगों में डालने का प्रयास कर रहे हैं।

ISSN No. 2581-3528

आयुर्वेद सहित आज उपलब्ध सभी चिकित्सा पद्धतियों के उपयोग से, छोटी मोटी तथा प्राथमिक चिकित्सा का प्रबंध प्रत्येक व्यक्ति को अपने गांव में ही उपलब्ध हो सकता है। द्वितीय चरण की चिकित्सा, खंड स्तर पर हम व्यवस्थित करते हैं तो जिला स्तर पर तृतीय स्तर की चिकित्सा व महानगरों में अति प्रगट विशिष्ट चिकित्सा ऐसा प्रबंध किया जा सकता है। चिकित्सा पद्धति के अहंकार से ऊपर उठकर सभी चिकित्सा पद्धतियों का यथातथ्य नियोजन करने से प्रत्येक व्यक्ति को उसके लिए सस्ती, सुलभ, परिणामकारक चिकित्सा प्रदान करने की व्यवस्था बन सकती है।

हमारी आर्थिक दृष्टि : प्रचलित अर्थचिंतन आज नई समस्याओं का सामना कर रहा है, जिन का समाधानकारक उत्तर अन्य देशों के पास नहीं है। यांत्रिकीकरण से बढ़ती बेरोजगारी, नीतिरहित तकनीकी के कारण घटती मानवीयता व उत्तरदायित्व के बिना प्राप्त सामर्थ्य यह उनके कुछ उदाहरण हैं। भारत से अर्थव्यवस्था के तथा विकास के नए मानक की अपेक्षा व प्रतीक्षा संपूर्ण विश्व को है । हमारी विशिष्ट आर्थिक दृष्टि हमारे राष्ट्र के प्रदीर्घ जीवनानुभव तथा देश–विदेश में सम्पन्न किए गए आर्थिक पुरुषार्थ से बनी है। उसमें सुख का उद्गम मनुष्य के अंदर माना गया है। सुख वस्तुओं में नहीं होता है। सुख केवल शरीर का भी नहीं होता है। शरीर, मन, बुद्धि, आत्मा चारों को एक साथ सुख देने वाली मनुष्य, सृष्टि, समष्टि का एक साथ विकास करते हुए उसको परमेष्ठी की ओर बढ़ाने वाली अर्थ–काम को धर्म के अनुशासन में चलाकर मनुष्य मात्र की सच्ची स्वतंत्रता को बढ़ावा देने वाली अर्थव्यवस्था हमारे यहाँ अच्छी मानी गई है। हमारे आर्थिक दृष्टि में उपभोग नहीं संयम का महत्व है। भौतिक साधन संपत्ति का मनुष्य विश्वस्त है, स्वामी नहीं। सृष्टि का वह अंग है, स्वयं की आजीविका के लिये सृष्टि का दोहन करने के साथ ही उसका संरक्षण संवर्धन भी उसका कर्तव्य है ऐसी हमारी मान्यता है। वह दृष्टि एकांतिक नहीं है। केवल पूंजीपति अथवा व्यापारी अथवा उत्पादक अथवा श्रमिक के एकतरफा हित की नहीं है। इन सब को ग्राहकसहित एक परिवार जैसा देखते हुए सब के सुखों की, संतुलित, परस्पर संबंधों पर आधारित वह दृष्टि है। उस दृष्टि के आधार पर विचार करते हुए, विश्व के आज तक के अनुभव से जो नया सीखा है, अच्छा सीखा है तथा आज की हमारी देश काल परिस्थिति से सुसंगत है, उसको साथ जोडते हुये ऐसी एक नई आर्थिक रचना को हम अपने देश में खड़ी करके दिखाएं, यह समय की आवश्यकता है। समग्र व एकात्म विकास के नये धारणाक्षम प्रतिमानका प्रकटीकरण होना स्वाधीनता का स्वाभाविक परिणाम है, 'स्व' की दृष्टि का चिरप्रतीक्षित आविष्कार है।

जनसंख्या नीति : देश के विकास की बात सोचते हैं तो और एक समस्या सामने आती है जिससे सभी चिंतित हैं ऐसा लगता है। गति से बढ़नेवाली देश की जनसंख्या निकट भविष्य में कई समस्याओं को जन्म दे सकती है। इसलिए उसका ठीक से विचार होना चाहिये। वर्ष 2015 में रांची में संपन्न अ. भा. कार्यकारी मंडल की बैठक ने इस विषय पर एक प्रस्ताव पारित किया है।

जनसंख्या वृद्धि दर में असंतुलन की चुनौती : देश में जनसंख्या नियंत्रण हेतु किये विविध उपायों से पिछले दशक में जनसंख्या वृद्धि दर में पर्याप्त कमी आयी है। लेकिन, इस सम्बन्ध में अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल का मानना है कि 2011 की जनगणना के पांथिक आधार (Religious ground) पर किये गये विश्लेषण से विविध संप्रदायों की जनसंख्या के अनुपात में जो परिवर्तन सामने आया है, उसे देखते हुए जनसंख्या नीति पर पुनर्विचार की आवश्यकता प्रतीत होती है। विविध सम्प्रदायों की जनसंख्या वृद्धि दर में भारी अन्तर, अनवरत विदेशी घुसपैठ व मतांतरण के कारण देश की समग्र जनसंख्या विशेषकर सीमावर्ती क्षेत्रों की जनसंख्या के अनुपात में बढ़ रहा असंतुलन देश की एकता, अखंडता व सांस्कृतिक पहचान के लिए गंभीर संकट का कारण बन सकता है।

विश्व में भारत उन अग्रणी देशों में से था जिसने 1952 में हीं जनसंख्या नियंत्रण के उपायों की घोषणा की थी, परन्तु सन् 2000 में जाकर ही वह एक समग्र जनसंख्या नीति का निर्माण और जनसंख्या आयोग का गठन कर सका। इस नीति का उद्देश्य 2.1 की 'सकल प्रजनन–दर' की आदर्श स्थिति को 2045 तक प्राप्त कर स्थिर व स्वस्थ जनसंख्या के लक्ष्य को प्राप्त करना था। ऐसी अपेक्षा थी कि अपने राष्ट्रीय संसाधनों और भविष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए प्रजनन–दर का यह लक्ष्य समाज के सभी वर्गों पर समान रूप से लागू होगा। परन्तु 2005–06 का राष्ट्रीय प्रजनन एवं स्वास्थ्य सर्वेक्षण और सन् 2011 की जनगणना के 0–6 आयु वर्ग के पांथिक आधार पर प्राप्त आँकड़ों से 'असमान' सकल प्रजनन दर एवं बाल जनसंख्या अनुपात का संकेत मिलता है। यह इस तथ्य में से भी प्रकट होता है कि वर्ष 1951 से 2011 के बीच जनसंख्या वृद्धि दर में भारी अन्तर के कारण देश की जनसंख्या में जहाँ भारत में उत्पन्न मतपंथों के अनुयायियों का अनुपात 88 प्रतिशत से घटकर 83.8 प्रतिशत रह गया है वहीं मुस्लिम जनसंख्या का अनुपात 9.8 प्रतिशत से बढ़ कर 14.23 प्रतिशत हो गया है।

इसके अतिरिक्त, देश के सीमावर्ती प्रदेशों तथा असम, पश्चिम बंगाल व बिहार के सीमावर्ती जिलों में तो मुस्लिम जनसंख्या की वृद्धि दर राष्ट्रीय औसत से कहीं अधिक है, जो स्पष्ट रूप से बंगलादेश से अनवरत घुसपैठ का संकेत देता है। माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा

ISSN No. 2581-3528

नियुक्त उपमन्यु हजारिका आयोग के प्रतिवेदन एवं समय–समय पर आये न्यायिक निर्णयों में भी इन तथ्यों की पुष्टि की गयी है। यह भी एक सत्य है कि अवैध घुसपैठियें राज्य के नागरिकों के अधिकार हड़प रहे है तथा इन राज्यों के सीमित संसाधनों पर भारी बोझ बन सामाजिक–सांस्कृतिक, राजनैतिक तथा आर्थिक तनावों का कारण बन रहे हैं।

पूर्वोत्तर के राज्यों में पांथिक आधार पर हो रहा जनसांख्यिकीय असंतुलन और भी गंभीर रूप ले चुका है। अरुणाचल प्रदेश में भारत में उत्पन्न मत–पंथों को मानने वाले जहाँ 1951 में 99.21 प्रतिशत थे वे 2001 में 81.3 प्रतिशत व 2011 में 67 प्रतिशत ही रह गये हैं। केवल एक दशक में ही अरूणाचल प्रदेश में ईसाई जनसंख्या में 13 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। इसी प्रकार मणिपुर की जनसंख्या में इनका अनुपात 1951 में जहाँ 80 प्रतिशत से अधिक था वह 2011 की जनगणना में 50 प्रतिशत ही रह गया है। उपरोक्त उदाहरण तथा देश के अनेक जिलों में ईसाईयों की अस्वाभाविक वृद्धि दर कुछ स्वार्थी तत्वों द्वारा एक संगठित एवं लक्षित मतांतरण की गतिविधि का ही संकेत देती है।

अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल इन सभी जनसांख्यिकीय असंतुलनों पर गम्भीर चिंता व्यक्त करते हुए सरकार से आग्रह करता है कि–

1. देश में उपलब्ध संसाधनों, भविष्य की आवश्यकताओं एवं जनसांख्यिकीय असंतुलन की समस्या को ध्यान में रखते हुए देश की जनसंख्या नीति का पुनर्निर्धारण कर उसे सब पर समान रूप से लागू किया जाए।

2. सीमा पार से हो रही अवैध घुसपैठ पर पूर्ण रूप से अंकुश लगाया जाए। राष्ट्रीय नागरिक पंजिका (National Register of Citizens) का निर्माण कर इन घुसपैठियों को नागरिकता के अधिकारों से तथा भूमि खरीद के अधिकार से वंचित किया जाए।

अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल सभी स्वयंसेवकों सहित देशवासियों का आवाहन करता है कि वे अपना राष्ट्रीय कर्तव्य मानकर जनसंख्या में असंतुलन उत्पन्न कर रहे सभी कारणों की पहचान करते हुए जन–जागरण द्वारा देश को जनसांख्यिकीय असंतुलन से बचाने के सभी विधि सम्मत प्रयास करें।

ऐसे विषयों के प्रति जो भी नीति बनती हो, उसके सार्वत्रिक संपूर्ण तथा परिणामकारक क्रियान्वयन के लिये अमलीकरण के पूर्व व्यापक लोकप्रबोधन तथा निष्पक्ष कार्यवाई आवश्यक रहेगी सही स्थिति में असंतुलित जनसंख्या वृद्धि के कारण देश में स्थानीय हिन्दू समाज पर पलायन का दबाव बनने की, अपराध बढ़ने की घटनाएँ सामने आयी हैं। पश्चिम बंगाल में हाल ही के चुनाव के बाद हुई हिंसा में हिन्दू समाज की जो दुरवस्था हुई उसका, शासन प्रशासन द्वारा हिंसक तत्वों के अनुनय के साथ वहां का जनसंख्या असंतुलन यह भी एक कारण था। इसलिए यह आवश्यक है कि सबपर समान रूप से लागू हो सकने वाली नीति बने। अपने छोटे समूहों के संकुचित स्वार्थों के मोहजाल से बाहर आकर सम्पूर्ण देश के हित को सर्वोपरि मानकर चलने की आदत हम सभी को करनी ही पड़ेगी।

वायव्य सीमा पार....: और एक परिस्थिति, जो अप्रत्याशित तो नहीं थी, परंतु अनुमान से पहले ही आकर खडी हुई है, वह है अफगानिस्तान में तालिबान की सरकार बनना! उनका अपना पूर्वचरित्र– जुनूनी कट्टरता तथा अत्याचार व इस्लाम के हवाले से दहशतगर्दी – तो अपने आपमें ही सबको तालिबान के बारे में आशंकित करने के लिये पर्याप्त है। अब तो उनके साथ चीन, पाकिस्तान तथा तुर्कस्थान भी जुडकर एक अपवित्र गठबंधन बन गया है। अब्दाली के बाद एक बार फिर हमारी वायव्य सीमा हमारी गंभीर चिंता का विषय बन रही है। तालिबान की ओर से कभी शांति की तो कभी काश्मीर की बात होती रही है। संकेत यह है, हम आश्वस्त बन कर नहीं रह सकते। हमें अपनी सामरिक तैयारी को सभी ओर की सीमाओं पर पूर्ण रूप से चुस्त दुरुस्त तथा सजग रखना है। ऐसी स्थिति में देश के अंदर की सुरक्षा, व्यवस्था तथा शान्ति की ओर भी शासन, प्रशासन तथा समाज को पूर्ण सजगता व सिद्धता रखनी होगी। सुरक्षा में स्वनिर्भरता तथा सायबर सुरक्षा जैसे नये विषयों में अद्यतन उच्च स्थिति प्राप्त करने के प्रयास की गति बहुत बढ़ानी होगी। सुरक्षा के विषय में हमें शीघ्रातिशीघ्र स्वनिर्भर होना होगा। बातचीत का रास्ता खुला रखते हुए भी तथा हृदयपरिवर्तन होता है इस आस्था को न नकारते हुए भी सब संभावनाओं के लिए तैयार रहना होगा। इस संकट की पृष्ठभूमि में जम्मू–काश्मीर के लोगों का भारत के साथ भावनिक सात्मीकरण भी द्रुतगति से होने की आवश्यकता ध्यान में आती है। राष्ट्रीय मनोवृत्ती के नागरीकों का मनोबल तोडने के लिये तथा अपने आतंक के साम्राज्य को पुर्नस्थापित करने के लिए जम्मू कश्मीर में आतंवादियों ने उन नागरिकों की – विशेषकर हिंदुओं की – लक्षित हिंसा का मार्ग फिर अपनाया है। नागरिक इस स्थिति का सामना धैर्यपूर्वक कर रहे है व निश्चित ही करते रहेंगे, परन्तु आतंकवादियों की गतिविधि का बंदोबस्त व समाप्ति के प्रयासों में अधिक गति लाने की आवश्यकता है।

हिन्दू मंदिरों का प्रश्न : राष्ट्र की एकात्मता, अखण्डता, सुरक्षा, सुव्यवस्था, समृद्धि तथा शान्ति के लिये चुनौती बनकर आनेवाली अथवा लायी गयी अन्तर्गत अथवा बाह्य समस्याओं के प्रतिकार की तैयारी रखने के साथ साथ हिन्दू समाज के कुछ प्रश्न भी हैं। जिन्हें सुलझाने का कार्य होने की आवश्यकता है। हिंदू मंदिरों की आज की स्थिति यह ऐसा एक प्रश्न है। दक्षिण भारत के मन्दिर पूर्णतः वहां की सरकारों के अधीन हैं। शेष भारत में कुछ सरकार के पास, कुछ पारिवारिक निजी स्वामित्व में, कुछ समाज के द्वारा विधिवत् स्थापित विश्वस्त न्यासों की व्यवस्था में हैं। कई मंदिरों की कोई व्यवस्था ही नहीं ऐसी स्थिति है। मन्दिरों की चल/अचल सम्पत्ति का अपहार होने की कई घटनाएँ सामने आयी हैं। प्रत्येक मन्दिर तथा उसमें प्रतिष्ठित देवता के लिए पूजा इत्यादि विधान की परंपराएँ तथा शास्त्र अलग अलग विशिष्ट है, उसमें भी दखल देने के मामले सामने आते हैं। भगवान का दर्शन, उसकी पूजा करना, जातपातपंथ न देखते हुए सभी

ISSN No. 2581-3528

श्रद्धालु भक्तों के लिये सुलभ हों, ऐसा सभी मन्दिरों में नहीं है, यह होना चाहिये। मन्दिरों के, धार्मिक आचार के मामलों में शास्त्र के ज्ञाता विद्वान, धर्माचार्य, हिन्दू समाज की श्रद्धा आदि का विचार लिए बिना ही निर्णय किया जाता है ये सारी परिस्थितियाँ सबके सामने हैं। 'सेक्युलर' होकर भी केवल हिन्दू धर्मस्थानों को व्यवस्था के नाम पर दशकों शतकों तक हडप लेना, अभक्त/अधर्मी/विधर्मी के हाथों उनका संचालन करवाना आदि अन्याय दूर हों, हिन्दू मन्दिरों का संचालन हिन्दू भक्तों के ही हाथों में रहे तथा हिन्दू मन्दिरों की सम्पत्ति का विनियोग भगवान की पूजा तथा हिन्दू समाज की सेवा तथा कल्याण के लिए ही हो, यह भी उचित व आवश्यक है। इस विचार के साथ साथ ही हिन्दू समाज के मन्दिरों का सुयोग्य व्यवस्थापन तथा संचालन करते हुए, मन्दिर फिर से समाज जीवन के और संस्कृति के केन्द्र बनाने वाली रचना हिन्दू समाज के बल पर कैसी बनायी जा सकती है, इसकी भी योजना आवश्यक है।

हमारी एकात्मता के सूत्र : शासन प्रशासन के व्यक्ति अपना कार्य करेंगे तो भी सभी राष्ट्रीय क्रियाकलापों में समाज की मन, वचन तथा कर्म से सहभागिता महत्वपूर्ण होती है। कई समस्याओं का निदान तो केवल समाज की पहल से ही हो सकता है। इस लिये उपरोक्त समस्याओं के संदर्भ में समाज के प्रबोधन के साथ ही समाज के मन, वचन व आचरण की आदतों में परिवर्तन की आवश्यकता है। अतएव इस अपने प्राचीन काल से चलते आये सनातन राष्ट्र के अमर स्वत्त्व की जानकारी, समझदारी पूरे समाज में ठीक से बननी चाहिए। भारत की सभी भाषिक, पांथिक, प्रांतीय, विविधताओं को पूर्ण स्वीकृति, सम्मान, तथा विकास के सम्पूर्ण अवसर के सहित एक राष्ट्रीयता के सनातन सूत्रमें गूँथ कर जोड़ने वाली हमारी संस्कृति है। इसके अनुरूप हमें बनना चाहिए। अपने मत, पंथ, जाति, भाषा, प्रान्त आदि छोटी पहचानों के संकुचित अहंकार को हमें भूलना होगा। बाहर से आये सभी सम्प्रदायों के माननेवाले भारतीयों सहित सभी को यह मानना, समझना होगा कि हमारी आध्यात्मिक मान्यता व पूजा की पद्धति की विशिष्टता के अतिरिक्त अन्य सभी प्रकार से हम एक सनातन राष्ट्र, एक समाज, एक संस्कृति में पले बढ़े समान पूर्वजों के वंशज हैं। उस संस्कृति के कारण ही हम सब अपनी अपनी उपासना करने के लिए स्वतंत्र हैं। अपने मनसे हर कोई यहाँ अपनी उपासना तय कर सकता है। यह इतिहास का तथ्य है कि परकीय आक्रमणकारियों के साथ कुछ उपासनाएँ भी भारत में आयीं। परंतु यह सत्य है कि आज भारत में उन उपासनाओं को मानने वालों का रिश्ता आक्रामकों से नहीं, देश की रक्षा के लिये उनसे संघर्ष करने वाले हिन्दू पूर्वजों से है। अपने समान पूर्वजों में हमारे सबके आदर्श हैं। इस बात की समझ रखने के कारण ही इस देश ने कभी हसनखाँ मेवाती, हाकिमखान सूरी, खुदाबख्श तथा गौसखाँ जैसे वीर, अशफाकउल्लाखान जैसे क्रांतिकारी देखें। वे सभी के लिए अनुकरणीय हैं। अलगाव की मानसिकता, संप्रदायों की आक्रामकता, दूसरों पर वर्चस्व स्थापित करने की आकांक्षा तथा छोटे स्वार्थों की संकुचित सोच से बाहर आकर देखेंगे तो ध्यान में आयेगा कि दुनियाँ पर टूट पड़े कट्टरता, असहिष्णुता, आतंकवाद, द्वेष, दुश्मनी तथा शोषण के प्रलय से तारनहार केवल भारत, उसमे उपजी फलीफूली यह सनातन हिन्दू संस्कृति तथा सबका स्वीकार कर सकने वाला हिन्दू समाज है।

संगठित हिन्दू समाज : हमारे देश के इतिहास में यदि कुछ परस्पर कलह, अन्याय, हिंसा की घटनाएँ घटी हैं, लम्बे समय से कोई अलगाव, अविश्वास, विषमता अथवा विद्वेष पनपता रहा हो, अथवा वर्तमान में भी ऐसा कुछ घटा हो, तो उसके कारणों को समझकर उनका निवारण करते हुए फिर वैसी घटना न घटे, परस्पर विद्वेष, अलगाव दूर हों, तथा समाज जुड़ा रहे ऐसी वाणी व कृति होनी चाहिए। हमारे भेदों तथा कलहों का उपयोग कर हमें विभाजित कर रखने वाले, परस्पर प्रामाणिकता पर अविश्वास उत्पन्न करनेवाले, हमारी श्रद्धा को नष्टभ्रष्ट करना चाहने वाले तत्व घात लगाकर हमारी भूल होने की प्रतीक्षा कर रहे हैं यह समझ कर चलना होगा। भारत के मूल मुख्य राष्ट्रीय धारा के नाते हिन्दू समाज यह तब कर सकेगा जब उसमें अपने संगठित सामाजिक सामर्थ्य की अनुभूति, आत्मविश्वास व निर्भय वृत्ति होगी। इसलिये आज जो अपने को हिंदू मानते हैं उनका यह कर्तव्य होगा कि वे अपने व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक जीवन तथा आजीविका के क्षेत्र में आचरण से हिन्दू समाज जीवन का उत्तम सर्वांगसुन्दर रूप खडा करें। सब प्रकार के भय से मुक्त होना होगा। दुर्बलता ही कायरता को जन्म देती है। व्यक्तिगत स्तर पर हमें शारीरिक, बौद्धिक तथा मानसिक बल, साहस, ओज, धैर्य तथा तितिक्षा की साधना करनी ही होगी। समाज का बल उसकी एकता में होता है, समाज के सामूहिक हित की समझदारी तथा उसके प्रति सबकी जागरुकता में होता है। समाज में विभेद उत्पन्न करने वाले विचार, व्यक्ति, समूह, घटना, उकसावे इन से सावधान रहकर समाज को सभी प्रकार के आपसी कलहों से दूर रखने बचाने में सभी को तत्पर रहना आवश्यक है। यह बलोपासना किसी के विरोध या प्रतिक्रिया में नहीं। यह समाज की स्वाभाविक अपेक्षित अवस्था है। बल, शील, ज्ञान तथा संगठित समाज को ही दुनियाँ सुनती है। सत्य तथा शान्ति भी शक्ति के ही आधार पर चलती है। बलशील संपन्न तथा निर्भय बनाकर, 'ना भय देत काहू को, ना भय जानत आप' ऐसे हिन्दू समाज को खडा करना पडेगा। जागरुक, संगठित, बलसंपन्न व सक्रिय समाज ही सब समस्याओं का समाधान है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ यही कार्य निरंतर गत 96 वर्षों से कर रहा है, तथा कार्य की पूर्ति होने तक करते रहेगा। आज के इस शुभ पर्व का भी यही संदेश है। नौ दिन देवों ने व्रतस्थ होकर, शक्ति की आराधना करते हुए, सभी की शक्तियों का संगठन बनाया। तभी विभिन्न रूपों में मानवता की हानि करने वाला संकट संपूर्ण विदीर्ण हो गया। आज विश्व की परिस्थिति की भारत से अनेक अपेक्षाएँ हैं, और भारत को उसके लिए सिद्ध होना है। हमारे समाज की एकता का सूत्र अपनी संस्कृति, समान पूर्वजों के गौरव का मन में उठने वाला समान तरंग, तथा अपने इस परम पवित्र मातृभूमि के प्रति विशुद्ध भक्तिभाव यही है। हिंदू शब्द से वही अर्थ अभिव्यक्त होता है। हम सब लोग इन तीन तत्वों से तन्मय होकर, अपनी–अपनी विशिष्टता को हमारी इस अन्तर्निहित सनातन एकता का श्रंगार बनाकर संपूर्ण देश को खड़ा कर सकते हैं, हम को करना चाहिए। यही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का कार्य है। उस तपस्या में आप सबके योगदान की समिधा भी अर्पण करें ऐसा आवाहन करते हुए मैं अपना निवेदन समाप्त करता हूँ।

भ्रांति जनमन की मिटाते क्रांति का संगीत गाते
एक के दशलक्ष होकर कोटियों को हैं बुलाते
तुष्ट माँ होगी तभी तो विश्व में सम्मान पाकर।
बढ रहे हैं चरण अगणित बस इसी धुन में निरन्तर
चल रहे हैं चरण अगणित ध्येय के पथ पर निरन्तर।

भारत माता की जय ■

सेवा के उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता संघ

यह पहला अवसर नहीं है जब संघ के स्वयंसेवकों ने देवदूत बनकर सेवा कार्यों को अंजाम दिया हो इससे पहले भी देश में घटित होने वाली प्राकृतिक आपदाओं एवं दुर्घटनाओं में संघ के कार्यकर्ता सदैव मजबूत स्तम्भ के रूप में आमजन के साथ खड़े नजर आते रहे हैं। आज जब देश वैश्विक महामारी से जूझ रहा है और ऐसे में लोग गैरों की सहायता व सहयोग करना तो दूर अपनों का सहारा नहीं बन पा रहे, बीमारी के कारण घरों में कैद होकर रह गए हैं ऐसी विषम परिस्थिति में स्वयंसेवक अपनी जान की परवाह किए बगैर आगे आएं।

अनुपमा अग्रवाल
पत्र लेखिका एवं समाज सेविका

कोरोना महामारी की भयावहता को भांपते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का गतवर्ष मार्च महीने में, संक्रमण को नियंत्रित करने के उद्देश्य से देश को लॉकडाउन करने का निर्णय निश्चित ही एक सराहनीय कदम था। लॉकडाउन जैसे महत्वपूर्ण निर्णय ने देश में मौत के आंकड़ों को निश्चित ही नियंत्रित रखा परन्तु इस समयावधि में गरीब, दिहाड़ी मजदूर,

निराश्रित बुजुर्ग एवं बेसहारा लोगों को अवश्य ही आर्थिक एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानियों का सामना करना पड़ा। जिस समय सरकार जनता से संक्रमण को नियंत्रित करने के लिए घरों में रहने का आह्वान कर रही थी तथा कुछ लोग मौत के डर से बाहर नहीं निकल रहे थे उस समय संघ के स्वयंसेवक सुरक्षा मानकों का पालन करते हुए स्वयं की चिंता किये बगैर दिन रात सेवा कार्यों में लगे हुए थे। संघ के कार्यकर्ता विभिन्न सेवा प्रकल्पों के माध्यम से जरूरतमंद लोगों तक सहायता पहुंचाने के अतिरिक्त आपदा प्रबंधन में सरकार के साथ कंधे से कंधा मिलाकर सेवा कार्यों को अंजाम देते नजर आ रहे थे। यह स्थिति केवल भारत ही नहीं बल्कि उन देशों में भी देखने को मिली जहां संघ की शाखाएं लगती हैं।

यह पहला अवसर नहीं है जब संघ के स्वयंसेवकों ने देवदूत बनकर सेवा कार्यों को अंजाम दिया हो इससे पहले भी देश में घटित होने वाली प्राकृतिक आपदाओं एवं दुर्घटनाओं में संघ के कार्यकर्ता सदैव मजबूत स्तम्भ के रूप में आमजन के साथ खड़े नजर आते रहे हैं। आज जब देश वैश्विक महामारी से जूझ रहा है और ऐसे में लोग गैरों की सहायता व सहयोग करना तो दूर अपनों का सहारा नहीं बन पा रहे या कहें बीमारी के कारण घरों में कैद होकर रह गए हैं ऐसी विषम परिस्थिति में स्वयंसेवक अपनी जान की परवाह किए बगैर औरों के कष्टों को दूर करने में लगे हुए हैं। जरूरतमंद लोगों तक भोजन, मास्क, सेनेटाइजर, काढ़े के पैकिट,राशन किट एवं दवा आदि की व्यवस्था एवं सतत वितरण वास्तव में, अनुकरणीय है। नर सेवा को ही नारायण सेवा मानने वाले, देश के लगभग 529 जिलों के 30 लाख से अधिक स्वयंसेवकों ने कोरोना काल में, हर स्तर पर सेवा कार्यों में अंजाम दिया। संघ ने देशभर में न केवल 2442 निःशुल्क आइसोलेशन सेंटर चलाये बल्कि अलग–अलग जिलों के 240 स्थानों पर कोविड अस्पतालों में प्रशासन के साथ मिलकर कार्य किया। इसके अतिरिक्त महानगरों से लेकर कस्बों तक संघ कार्यकर्ताओं ने टीम बनाकर डॉक्टर और मरीज के बीच स्थानीय स्तर पर ऑनलाइन संवाद की व्यवस्था का जिम्मा भी उठाया। संघ कार्यकर्ताओं ने

ISSN No. 2581-3528

स्वेच्छिक रक्तदान शिविर आयोजित कर,जरूरतमंद लोगों के लिए न् केवल रक्त, प्लाज्मा की व्यवस्था की बल्कि कोरोना काल में मनुष्यों के साथ आवारा पशु पक्षियों के भोजन पानी का भी भरपूर ख्याल रखा।

कोरोना की दूसरी लहर में बड़ी संख्या में अनाथ हुए बच्चों के रहन सहन एवं निःशुल्क शिक्षा की जिम्मेदारी उठाने की सर्वप्रथम पहल संघ के द्वारा ही की गई। वैक्सीन लगवाने के लिए लोगों को जागरूक करना, दाह संस्कारों में इस्तेमाल लकड़ी की खपत को कम करने हेतु कम दामों में उपलब्ध गोबर की ईंट (उपले) का इस्तेमाल करने पर जोर देना, स्वच्छता को ध्यान में रखते हुए कॉलोनियों में स्वयं सेनेटाइजेशन का बीड़ा उठाना तथा आगे आने वाली कोरोना की तीसरी लहर के प्रति लोगों को सचेत करने का कार्य भी स्वयंसेवक लगातार कर रहे हैं।

कोरोना काल में मारे गए ऐसे लोग जिनका अंतिम संस्कार उनके अपने, गरीबी या कहें भय के कारण नहीं कर रहे थे,संघ के स्वयंसेवकों ने आगे आकर हिन्दू रीति–रिवाज से ससम्मान उनका अंतिम संस्कार सम्पन्न कराया। आपदा काल में ऐसा कोई क्षेत्र नहीं था जो संघ कार्यकर्ताओं के सेवा कार्यों से अछूता बचा हो। सेवा कार्य करते हुए कई सौ कार्यकर्ता संक्रमित भी हुए जिनमें से कई को अपनी जान से भी हाथ धोना पड़ा बावजूद इसके कार्यकर्ताओं के जोश एवं उत्साह में कोई कमी नहीं आयी और न सेवा कार्यों में कोई व्यवधान। बीमारों को दवा उपलब्ध कराना हो या भूखों को भोजन, बुजुर्गों को आवश्यक सामग्री उपलब्ध करानी हो या गरीबों को राशन किट, निराश्रित अथवा लावारिस लाशों का अंतिम संस्कार हो या विस्थापित मजदूरों की चिंता, ऑनलाइन परामर्श सेवा हो या अस्थियों का विसर्जन, आइसोलेशन सेंटर की व्यवस्था हो या ऑक्सीजन सिलेंडर की व्यवस्था सभी कार्यों को संघ के कार्यकर्ताओं ने तन,मन,धन तीनों प्रकार से बखूबी अंजाम दिया। तीसरी लहर की संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए संघ कार्यकर्ताओं ने नगर व खण्ड स्तर पर 'आरोग्य मित्र' नामक समूह बनाकर कोरोना को मात देने की तैयारी भी शुरू कर दी है। इस समूह में चिकित्सक, व्यापारी, सामाजिक कार्यकर्ता, प्राथमिक चिकित्सा में दक्ष सेवक अथवा सेविका आदि को शामिल किया गया है ताकि महामारी के समय आइसोलेशन सेंटरों पर व्यवस्थाओं का उचित प्रबन्धन किया जा सके।

देश के लगभग ५२९ जिलों के ३० लाख से अधिक स्वयंसेवकों ने कोरोना काल में, हर स्तर पर सेवा कार्यों में अंजाम दिया। संघ ने देशभर में न केवल २४४२ निःशुल्क आइसोलेशन सेंटर चलाये बल्कि अलग-अलग जिलों के २४० स्थानों पर कोविड अस्पतालों में प्रशासन के साथ मिलकर कार्य किया।

कल तक वामपंथी विचारधारा या विशेष समुदाय के लोग जो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को सांप्रदायिक, हिंदूवादी, फांसीवादी संगठन के तौर पर आलोचना करते थे। कोरोना काल में संघ के कार्यों को देखकर उनके विचारों में भी परिवर्तन आया है कई घुर विरोधियों ने तो संघ की प्रशंसा भी की जिनमें से पत्रकार बरखा दत्त ने मुंबई की बस्तियों में संघ के कार्यों की न् केवल प्रशंसा की बल्कि महत्वपूर्ण कदम भी बताया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के मीडिया विंग इंद्रप्रस्थ विश्व संवाद केंद्र प्रमुख अरुण आनंद के अनुसार खालिदा बेगम नाम की मुस्लिम महिला ने कोरोना काल में जम्मू कश्मीर में संघ के सेवा कार्यो से प्रभावित होकर 5 लाख रुपये संगठन को देने का फैसला किया। खालिदा चाहती थी कि उनके द्वारा दान की गई धनराशि को सेवा भारती के माध्यम से जम्मू कश्मीर के गरीबों और जरूरतमंदों पर व्यय की जाए। यह धन राशि उन्होंने हज पर जाने के लिए एकत्रित की थी पर वहां न् जा पाने के कारण उस धन राशि को सेवा कार्यों में समर्पित कर दिया।

'सेवा परमो धर्मः' 'नर सेवा, नारायण सेवा' जैसे ध्येय वाक्यों को चरितार्थ करते संघ के कार्यकर्ता विगत डेढ़ वर्ष से सेवा कार्यों में लगे हुए हैं। देश व समाज की रक्षा हेतु अपना जीवन होम करते कार्यकर्ताओं का समर्पण एवं सेवा भाव तथा विशेष तौर पर कोरोना काल में एक एक जीवन को बचाने के लिए कार्यकर्ताओं को जद्दोजहद करते अनवरत देखा गया। संघ के सेवा कार्य, केवल महानगरों तक ही सीमित न् रह कर प्रत्येक नगर बस्ती तक में, जहां प्रशासनिक मदद नहीं पहुँच पा रही थी उन तक संपन्न किए जा रहे थे। संघ जाति, पंथ, समुदाय व रंग देखकर सेवा कार्य नहीं करता बल्कि जो संकट में है वंचित है उनकी सेवा करना उसकी परिधि में आता है। यह वह संगठन है जो प्रतिष्ठा और सम्मान से दूर अदृश्य होकर लोगों की सेवा में जुटा है और लगातार सेवा कार्य कर रहा है।

माना अगम अगाध सिंधु है,संघर्षों का पार नहीं है!
किन्तु डूबना मझधारों में, साहस को स्वीकार नहीं है,
जटिल समस्या सुलझाने को नूतन अनुसंधान न भूले!! ■

ISSN No. 2581-3528

मीडिया राष्ट्र और समाज के प्रति अधिक संवेदनशील बने

डॉ. अनिल निगम
डीन, पत्रकारिता तथा जनसंचार विभाग
आईआईएमटी कॉलेज, ग्रेटर नोएडा

पूर्व में एक कहावत थी कि ''साहित्य समाज का दर्पण होता है।'' लेकिन आज अगर यह कहा जाए कि ''मीडिया समाज का दर्पण है।'' तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है। आज मीडिया की समाज में भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है। समाज के सभी वर्गों को निष्पक्ष तरीके से सूचित, शिक्षित और प्रेरित करने का अहम दायित्व मीडिया का ही होता है। आमजन की मीडिया से अपेक्षाएं भी बहुत बढ़ गई हैं। ऐसे में सवाल है कि क्या मीडिया अपना काम सही तरीके से कर पा रहा है? क्या मीडिया अपनी जिम्मेदारी से विमुख हो रहा है? क्या मीडिया में भ्रष्टाचार की जड़ें जम चुकी हैं? क्या आज मेन स्ट्रीम मीडिया से ज्यादा सशक्त सोशल मीडिया हो चुका है? ऐसे अनेक प्रश्न हैं जिन पर गंभीर चिंतन, मनन और मंथन करने की आवश्यकता है।

मीडिया का आशय उस तकनीक से है जिसका मूल उद्देश्य लोगों तक बड़े पैमाने पर संदेश पहुंचाना अथवा उनको शिक्षित करना है। यह जनता तक पहुंचने के लिए संचार का प्राथमिक साधन है। मीडिया के सबसे सामान्य साधन समाचार–पत्र, पत्रिकाएं, रेडियो, टेलीविजन और इंटरनेट के माध्यम से प्रकाशित होने वाले चैनल, न्यूज पोर्टल आदि हैं। मीडिया समाज में 'ओपिनियन मेकर' की भूमिका अदा करता है। वर्तमान में शासन करने का सर्वोत्तम तंत्र लोकतंत्र है और लोकतंत्र में मीडिया को चौथा स्तंभ माना जाता है। हालांकि भारतीय संविधान में शासन के तीन स्तंभों–व्यवस्थापिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका का स्पष्ट उल्लेख है लेकिन मीडिया को चौथे स्तंभ के तौर पर मान्यता प्राप्त नहीं है। भारत में मीडिया अपना कार्य संविधान के अनुच्छेद 19 (1ए) के अंतर्गत नागरिकों को प्रदत्त भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के मौलिक अधिकार के तहत ही करता है।

निःसंदेह, मीडिया ने भारत में कई अवसरों पर जिम्मेदार और सशक्त भूमिका निभाई है। अगर हम देश की आजादी के पहले की बात करें तो हम पाते हैं कि मीडिया पूरी तरह से मिशनरी थी और उसने अपने मिशन–आजादी को पाने के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। वर्ष 1947 के बाद भी पत्रकारिता काफी सजग और सशक्त रही। उसने विकास, महंगाई, बेरोजगारी और भ्रष्टाचार जैसे मुद्दों को सही तरीके से उठाकर अपने पत्रकारिता धर्म को निभाया। सर्वाधिक ताजा उदाहरण तो कोरोना काल का ही है, जिसमें पत्रकारों ने उस समय जब देश में हर व्यक्ति अपने घरों के अंदर कैद था, अपनी जान की परवाह न करते हुए दिलेरी के साथ लोगों को पल–पल की जानकारी दी।

लेकिन मीडिया का काम लोगों को महज सूचनाएं देना नहीं होता, उसकी समाज और देश के प्रति बहुत अहम जिम्मेदारी होती है। यह ऐसा माध्यम है जो आम जनता की आवाज को बुलंद करता है। मीडिया को अभिव्यक्ति की आजादी प्राप्त है, पर इसका आशय कतई यह नहीं है कि वह ऐसी चीजों को भी प्रकाशित अथवा प्रसारित करना शुरू कर दे जिससे देश की संप्रभुता, एकता–अखंडता और राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरा पैदा हो जाए। आज लोग सही सूचनाएं प्राप्त करने के लिए मीडिया का सहारा लेते हैं, लेकिन दुर्भाग्यपूर्ण है कि कई ऐसे उदाहरण हैं जिसमें मीडिया का गैर जिम्मेदाराना रवैया देखने को मिला है।

आज मीडिया खासतौर से इलेक्ट्रानिक और डिजीटल मीडिया संस्कृति और संस्कार विहीन सूचनाएं अथवा सामग्री परोसकर लोगों का मनोरंजन कर रहा है। टीवी सीरियल और ओटीटी प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से मिलने वाला मनोरंजन समाज के लोगों को कमजोर, भ्रष्ट और अस्वस्थ बना रहा है। टीवी चौनल दिन–रात (24 घंटे) प्रसारण कर रहे हैं। इनके बीच में आपसी होड़ मची हुई है कि वे अधिसंख्य दर्शकों को किस तरह से अपनी ओर खींच लें। धारावाहिकों का चलन बढ़ चुका है और गृहणियों, बुजुर्गों एवं घर पर ही रहने वाले लोगों के लिए धारावाहिक उनके जीवन के अभिन्न हिस्सा बन चुके हैं। अगर यह मीडिया अपनी जिम्मेदारी को निभाते हुए स्वस्थ मनोरंजन प्रस्तुत करता तो समाज को विकृतियों और कुरीतियों से मुक्त किया जा सकता है। पर यह बेहद अफसोसजनक है कि कुछ चैनलों को छोड़कर अधिसंख्य चैनल अत्यंत घटिया सामग्री परोस रहे हैं। इन धारावाहिकों में नायक–नायिका का कोई चरित्र नहीं है। उनमें हिंसा, बलात्कार, अवैध संबंध, धोखेबाजी की भरमार है। एक तरीके से ये समाज को कमजोर और नैतिकता विहीन बनाने के कार्य में लगे हुए हैं।

समाज से भ्रष्टाचार को दूर करना भी मीडिया की अहम जिम्मेदारी है। लेकिन वर्ष 2000 और 2010 के दशक में पेड न्यूज ने मीडिया को भी भ्रष्टाचार में डूबो दिया और सच्चाई पर आधारित खबरें देने की जगह लोगों को मनगढ़ंत खबरें दी जाने लगीं। अनेक पत्रकार 'पीत पत्रकारिता' के मकड़जाल में उलझ चुके हैं। वे अधिकारियों और नेताओं से साठगांठ कर खबरों को तोड़–मरोड़कर प्रस्तुत कर रहे हैं। इसके चलते पाठक और दर्शक भी भ्रमित हो जाता है कि वह प्रकाशित अथवा प्रसारित की जाने वाली खबरों पर भरोसा करे या अथवा नहीं। यही नहीं, भारत में कोविड की दूसरी लहर के दौरान कुछ मीडिया संस्थानों ने विदेशी शक्तियों के साथ मिलकर भारत की छवि को खराब करने के प्रयास किए।

निःसंदेह, मीडिया को संचालित करने के लिए राजस्व अनिवार्य है। इसके लिए प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक और डिजीटल मीडिया को विज्ञापन चाहिए। विज्ञापन का रेट अखबारों की प्रसार संख्या अथवा चैनलों की टीआरपी तय करती है। कई बार टीआरपी की होड़ में मीडिया 'बाजारू' हो जाता है। संस्थान को चलाने के लिए मीडिया का बाजार से प्रभावित होना तो ठीक है पर उसका 'बाजारू' होना बेहद खतरनाक है। 'बाजारू' होने का आशय है कि सही या गलत कुछ भी हो, मीडिया को सिर्फ बाजार ही नियंत्रित करेगा। यह पूरी तरह से अनुचित है। यह मीडिया की जिम्मेदारी और सरोकार से विमुखता का प्रतीक है।

लोगों की विश्वसनीयता के चलते ही मीडिया को लोकतंत्र का प्रहरी माना जाता है। संप्रति, मीडिया पर लोकतंत्र की रक्षा का बहुत बड़ा दायित्व है। इसलिए मीडिया की शुचिता और निष्पक्षता बनाए रखना बहुत आवश्यक है। यह काम सरकारी तंत्र करता है तो इससे अभिव्यक्ति की आजादी पर सवालिया निशान लग जाएगा। ऐसे में आवश्यक है कि मीडिया खुद पहल करे। उसे आत्मशुद्धि कर स्वयं को अधिक विश्वसनीय, राष्ट्र और समाज के प्रति संवेदनशील, सजग और दायित्वान बनाना होगा ताकि मीडिया की छवि पर कोई दाग न लगे। ■

ISSN No. 2581-3528

चुप रहने की शक्ति

नरेन्द्र सिंह भदौरिया
वरिष्ठ पत्रकार

जाने क्यों उनकी चुप्पी पर सबका ध्यान केन्द्रित था। अयोध्या में 06 दिसम्बर 1992 को ढाँचा ध्वंश हुआ। भारत स्तब्ध था। अपने ढंग से हर कोई तूलिका से रंग भर रहा था। कोई अभिशप्त तो कोई दुखी था। वातावरण में चीत्कार करके देश के बहुसंख्यक समाज को नीचा दिखाने पर तुले लोग मेंड़ों– मुँडेरों पर चढ़कर चिल्ला रहे थे। भारत की इस घटना को संसार के हर नीतिज्ञ, कूटचिन्तक, विचारक, लेखक ने अपनी धारणाओं के दर्पण में देखा था। कल्याण सिंह ने मुख्यमन्त्री पद से स्वतः त्यागपत्र दे दिया था। देश भर की भाजपा सरकारों को एक झटके में कांग्रेस की नरसिंहराव सरकार ने उखाड़ डाला था। किंकर्तव्यविमूढ़ता की स्थिति उन लोगों के लिए थी जो इस घटना पर झेंप रहे थे। तीन दिन के लम्बे मौन के बाद चौथे दिन कल्याण सिंह ने सहायक के माध्यम से कुछ लोगों को प्रातः घर बुलाया। मैं भी उनमें से एक था। मुझे लगा कि कुछ पत्रकारों से अपनी बात कहना चाहते होंगे। पहुँचकर देखा तो बरामदे की चार कुर्सियों में तीन भरी थीं। कल्याण सिंह के दो वरिष्ठ मित्र पूर्व मन्त्री ही वहां थे। एक कुर्सी रिक्त थी। मेरे बैठते ही कल्याण सिंह ने कहा नरेन्द्र जी कहिये मुझे क्या करना चाहिए। तीन दिन से मैं सबकी सुन रहा हूँ। अभी और मौन रहने का मन कर रहा है। चुप रहने से क्या होगा ? इतना कहते ही वहां बैठे एक मन्त्री ने मुझे बड़े विचित्र भाव से निहारा। मैंने कहा जिसके पास कहने को कुछ न हो वह मौन रहे। पर जो अपनी बात को अच्छी अभिव्यक्ति दे सकता हो वह कब तक मौन रहेगा।

इतनी देर में मुझे समझ में आ गया कि कल्याण सिंह जी अभी कुछ दिन और चुप रहने को तैयार हो चुके हैं। तभी दूसरे पूर्व मन्त्री ने धीरे से कहा–जो राह बड़ों ने दिखायी है उस पर चलना ठीक लगता है। उनके इतना कहने के बाद कुछ पलों की चुप्पी मुझे गहराई तक यह अनुभूति करा गयी कि शेर माँद से बाहर आना तो चाहता है पर चेष्टा करने से सकुचा रहा है।

कल्याण सिंह के हृदय की धड़कन और धमनियों के रक्त की गति अन्य संकेत दे रही थी। उनके भीतर का नायकत्व क्लान्त नहीं था। उन्होंने शान्ति की मुद्रा किसी विवशता में ओढ़ रखी थी। जिससे बाहर झाँके बिना सांस लेना उनको बहुत अखर रहा था।

कल्याण सिंह की गहरी आंखों में कुछ घटाओं की हलचल से ऐसी बिजली कौंध रही थीं जिसे अब और थामा नहीं जा सकता था। मैंने संकोच की भीति लाँघी और कहा कि नायक यदि अपनी भूमिका बदल कर खलनायक के चरित्र को अभिनीत करने का हठ करे तो उसे बहुत भारी पड़ता है। तब दर्शक उसी पर टूट पड़ते हैं कि तूने यह क्या किया। कल्याण सिंह जी तुरन्त उठ खड़े हुए। उन्होंने कहा मुझे अब चुप नहीं रहना। अपने सहायक को बुलाकर कहा आज ही डेढ़ बजे पत्रकारों को यहीं (माल एवेन्यू) बुला लो। दोनों नेता उठकर चले गये। मैं चलने लगा तो बहुत स्नेह से कहा आप रुक जाइये। मैं स्नान कर लूँ फिर बातें होंगी। लौटकर वह बैठे और एक प्रेस नोट तैयार कराया। तीन पंक्तियां लिखी थीं – जो ढाँचा ढहा वह कलंक का ढाँचा था। जिसे भारत के गौरव को मिटाने के लिए खड़ा किया गया था। उसके ध्वस्त होने पर मुझे गर्व है। कल्याण सिंह जी के आवास पर पत्रकारों का ऐसा बड़ा जमघट पहले किसी ने नहीं देखा होगा। उन तीन पँक्तियों में उन्होंने देश विदेश में रह रहे सहमे हिन्दू समाज को बड़ी संजीवनी दे दी थी। अनेक पीढ़ियां उनके साहस को सराहती रहेंगी।

केवल कुछ लोग लगभग पांच सौ वर्ष की लम्बी सहिष्णुता की ऐसी परिणिति को सहन नहीं कर पा रहे थे। विदेशी लुटेरा बाबर अफगनिस्तान से भाड़े के चन्द लड़ाकों की टुकड़ी लेकर खैबर दर्रे से घुसा था। सहिष्णुता की चादर ओढ़े इस देश में उसे सब ओर हंसते खेलते निश्चिन्त लोग दिखे। समाज की सम्पन्नता और समरसता से वह हतप्रभ था। पराये देश से आये खूँख्वार बेढंगे परिवेश के लोगों का किसी ने प्रतिरोध नहीं किया। शान्ति की तन्द्रा भी अच्छी नहीं होती यदि शत्रु को पहचानने की सुध न रहे। बाबर ने भाँप लिया कि यह देश दासता की ओढ़नी में सिमट कर सोने को तैयार है। बाबर ने जहाँ तहाँ बरबस युद्ध छेड़े। वैभव की छोटी गठरियों में लिपटे लोग हारते रहे।

राजशाहियां टूटटी रहीं। तो बाबर का अहंकार सिर चढ़ गया। भरतपुर के निकट हुए युद्ध में जब विराट हिन्दू सेना को हराने में बाबर सफल हुआ तो भी डरा था कि मैदान के बाहर खड़े लोगों की भीड़ कहीं उस पर टूट न पड़े। पर उसे तब बड़ा अचरज हुआ जब यह भीड़ बाबर की विजय पर तालियाँ पीटने लगी। इसी बाबर के आदेश पर हिन्दू धर्म को समूल विनष्ट करने का अभियान 1528 से प्रारम्भ हुआ था। तभी अयोध्या में विशाल श्रीराम जन्मभूमि पर बना श्रीहरिमन्दिर ध्वस्त कर उसी के ध्वंसावशेषों से बाबरी ढाँचा खड़ा कर दिया गया था। कल्याण सिंह जी की जीवन यात्रा बड़े उतार चढ़ाव से होकर बढी। वह अदम्य साहस के धनी थे। कहते थे मैं शिक्षक था। उस शाम गन्ने के खेत पर काम कर रहा था। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक जी आये और मुझसे अगले दिन अलीगढ़ चलने को कहा। तभी तय हुआ कि राजनीतिक पारी के लिए आगे बढ़ना है। उन्होंने जीवन में अनेक साहसिक निर्णय किये । कुछ के खट्टे तो अधिकांशतः मीठे अनुभव उन्हें हुए होंगे। पंच तत्व की काया धरा में छोड़ कर अनन्त में स्थिर हुए कल्याण सिंह जी को लोग दीर्घकाल तक एक प्रबल नायक के रूप में स्तुत्य मानते रहेंगे। उनकी अनेक स्मृतियां विलक्षणता के गुणों से भरी हैं। ■

ISSN No. 2581-3528

सोशल मीडिया की जद में 'असावधान भारत' का भविष्य

भारत के अंदर देखने को मिल रहा है कि जो बच्चे संसाधनहीन हैं, जो एक अनचाहे प्रतिस्पर्धा में डाल दिए गए, उनके मन में एक अलग तरह की ग्रंथि आ रही है। स्मार्ट फोन ना होने की वजह से उन्हें लगता है कि वे जीवन के एक आधारभूत संसाधन से वंचित रह गए हैं। जबकि वास्तव में ऐसा है नहीं।

आशीष कुमार 'अंशु'
स्वतंत्र पत्रकार

भारत की सवा अरब जनसंख्या में आधे से अधिक आबादी के पास फोन है। यह संख्या 70 करोड़ के आस–पास बैठती है। इन 70 करोड़ में से 25 करोड़ लोगों की जेब में स्मार्टफोन है। इस स्मार्टफोन ने समानान्तर मीडिया की हैसियत हासिल कर चुके सोशल मीडिया का एक मजबूत जाल रचने में मदद की है। वर्तमान में 15.5 करोड़ लोग हर महीने फेसबुक पर आते हैं और 16 करोड़ लोग व्हाट्सऐप पर। इस प्रतिस्पर्धा में आज कल कूऐप भी शामिल हो गया है और ट्विटर को जबर्दस्त टक्कर दे रहा है। इसके अलावा इंस्टाग्राम से लेकर टेलीग्राम तक तमाम सोशल नेटवर्किंग ठिकाने हैं, जहां लोग खुलकर अभिव्यक्ति की आजादी का आनंद ले रहे हैं।

सोशल नेटवर्किंग के इस कलयुग में यदि आप खुद के अलावा किसी एक व्यक्ति से भी कोई बात साझा कर रहे हैं तो दावे से नहीं कह सकते कि वह बात गोपनीय है। अब हमारी कोई भी जानकारी निजी नहीं रह गई। कुछ समय पहले तक हम व्हाट्सऐप को बातचीत के लिए सबसे सुरक्षित जगह मान रहे थे, लेकिन वहां भी सेंध लग गई है। फोन या मोबाइल पर की जा रही बातचीत को लेकर महानगरों में यह बात आम है कि आपकी बात कोई तीसरा भी सुन रहा है।

कहने को यह सूचना क्रांति की सदी है लेकिन इस दौर में सबसे अधिक किसी ने समाज का भरोसा खोया है तो वह सूचना ही है। अब हमारे पास सूचना पाने के स्रोतों की संख्या अवश्य अनगिनत तक पहुंच गई है, लेकिन इसके साथ ही साथ उस सूचना पर 'विश्वसनीयता का संकट' पहले से कई गुना बढ़ भी गया है।

हमने बीते बीस सालों में पेड न्यूज से फेक न्यूज तक का सफर तय किया है। सूचना को लगी यह बीमारी दिन प्रतिदिन और अधिक गंभीर होती जा रही है तो इसके पीछे कहीं ना कहीं आम आदमी के हाथ को मिले 'अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता' के औजार 'सोशल मीडिया' की बड़ी भूमिका रही है। समय आ गया है कि हम सूचना क्रांति के दौर में सूचना को लेकर अतिरिक्त सावधान हो जाएं। सोशल मीडिया विश्वविद्यालय के कारखानों में तैयार हो रहे फेक न्यूज के फॉरवार्डेड जहर को आगे फॉरवार्ड करके और अधिक ना फैलाएं।

ISSN No. 2581-3528

सोशल मीडिया के बहुत ज्यादा उपयोग करने के मनोवैज्ञानिक प्रभाव की बात हम अक्सर करते हैं, लेकिन भारत के अंदर इस प्रभाव पर कोई कायदे का अध्ययन देखने को नहीं मिलता। जो हुए भी हैं, उसमें गम्भीरता का अभाव है और उनकी रिपोर्ट भी सामने नहीं आई है। यह कहा जा सकता है कि इस तरह के अध्ययन भारत के विश्वविद्यालयों में भी होने चाहिए। तो यहां के नतीजे भी संभव है कि भारत के बाहर हुए अध्ययनों के नतीजों से अलग ना हो। फिर भी वह भारत के परिप्रेक्ष्य आने की वजह से अधिक सटीक और अधिक विश्वसनीय होंगे।

भारत के अंदर यह देखने को मिल रहा है कि फोन में इंटरनेट की कनेक्टिविटी और स्मार्टफोन वाले बच्चों के समूह में साधारण फोन इस्तेमाल करने वाले बच्चों में हीनता की ग्रंथि पैदा हो रही है। जो बच्चे संसाधनहीन हैं, जो एक अनचाहे प्रतिस्पर्धा में डाल दिए गए, उनके मन में एक अलग तरह की ग्रंथि आ रही है। स्मार्ट फोन ना होने की वजह से उन्हें लगता है कि वे जीवन के एक आधारभूत संसाधन से वंचित रह गए हैं। जबकि वास्तव में ऐसा नहीं हैं।

''जो बच्चा सोशल मीडिया पर जितना अधिक समय बिता रहा है, वह उतना अधिक अपने अभिभावकों, स्कूल और जीवन के प्रति असंतुष्ट है। जो बच्चे सोशल मीडिया पर कम सक्रिय हैं, उनका जीवन के प्रति नजरिया काफी संतुलित है।''

पिछले पांच–सात सालों में बच्चों पर सोशल मीडिया के उपयोग से पड़ने वाले असर पर अनेक अध्ययन हुए हैं। एक अध्ययन बताता है कि जो बच्चे सोशल मीडिया का उपयोग अधिक करते हैं, जीवन के प्रति उनके मन में संतोष भाव कम रहता है। वे चिड़चिड़े हो जाते हैं। यह बच्चों की खुश ना रहने की एक बड़ी वजह बनता जा रहा है। बच्चे अब खेल और घर के बाहर की अपनी सक्रियता छोड़ कर पूरे समय स्मार्ट फोन से चिपके मिल रहे हैं। यह आदत हमारी आने वाली नस्ल को खराब कर रही है। हमें समय रहते चेत जाना चाहिए। यदि हम यह सोच रहे हैं कि बच्चे स्मार्ट फोन इस्तेमाल करके अपनी दुनिया में खुश हैं और हमें परेशान नहीं कर रहे तो हम गलत सोच रहे हैं। हम अपनी थोड़ी सी सुविधा के लिए बच्चों को स्मार्ट फोन के हवाले करके भविष्य के लिए परेशानी मोल ले रहे हैं।

ब्रिटेन के इंस्टीट्यूट ऑफ लेबर इकॉनामिक्स द्वारा 'सोशल मीडिया यूज एंड चिल्ड्रन्स वेलबीइंग' शीर्षक से एक अध्ययन किया। एमिली मैकडूल, फिलिप पावेल, जेनिफर राबर्ट्स और कार्ल टेलर के नेतृत्व में यह अध्ययन हुआ। अध्ययन के दौरान 10 से 15 साल की उम्र के 4000 बच्चों से बातचीत की गई। बच्चों से अध्ययन दल के सदस्यों ने लंबी–लंबी बातचीत की। उनके मन को समझने के लिए बच्चों के जीवन के तमाम पहलुओं पर उनसे बातचीत की गई। उनके अपने घर–परिवार, स्कूल, दोस्त और जीवन से जुड़े सवाल पूछे गए। ये बच्चे सोशल मीडिया पर कितना समय बिताते हैं, इसका अध्ययन टीम ने एक एप की मदद से किया। जिसे प्रामाणिक जानकारी हासिल हो सके।

इस अध्ययन के परिणाम अभिभावकों के लिए आंख खोल देने वाले हैं। यह बात सामने आई कि जो बच्चा सोशल मीडिया पर जितना अधिक समय बिता रहा है, वह उतना अधिक अपने अभिभावकों, स्कूल और जीवन के प्रति असंतुष्ट है। जो बच्चे सोशल मीडिया पर कम सक्रिय हैं, उनका जीवन के प्रति नजरिया काफी संतुलित है। सोशल मीडिया पर कम समय व्यतीत करने वाले बच्चों के पास स्कूल और माता–पिता के लिए अधिक समय है। वह अपने स्कूल और परिवार के लिए सकारात्मक राय रखते हैं। जिन बच्चों को सोशल मीडिया पर ही अधिक समय बिताते पाया गया था, उन्हें लगता था कि उनका जीवन अर्थपूर्ण नहीं है। पाया गया कि सोशल मीडिया का अधिक नकारात्मक प्रभाव लड़कों की तुलना में लड़कियों पर पड़ा है। दूसरी तरफ सोशल मीडिया पर लड़कियां ही उत्पीड़न का अधिक शिकार हैं। साइबर बुलिंग भी अधिक लड़कियों के साथ ही होती है।

भारत में बालिकाओं के अधिकारों और समानता के लिए काम करने वाला एनजीओ प्लान इंटरनेशनल की ओर से किए गए एक सर्वेक्षण में लड़कियों के साथ हो रहे दुर्व्यवहार की बात सामने आई थी। ऑनलाइन उत्पीड़न की वजह से बड़ी संख्या में लड़कियां सोशल मीडिया से दूर होने को मजबूर हुई हैं।

इस लेख का उद्देश्य सोशल मीडिया पर सक्रिय लोगों को हतोत्साहित करना नहीं है। ना ही सोशल मीडिया की कमियां गिनाना है बल्कि इस लेख का उद्देश्य सोशल मीडिया का इस्तेमाल सावधानी से करने के लिए आमजन को प्रेरित करना है। सावधानी इतनी भर रखनी है कि आप सोशल मीडिया का उपयोग करें, ना कि सोशल मीडिया आपका। ■

केशव संवाद मासिक पत्रिका के डिजिटल प्लेटफॉर्म से जुड़े। एवं केशव संवाद को सोशल मीडिया पर **FOLLOW** करें

केशव संवाद

FACEBOOK

Keshav Samvad @keshavsamvad @KeshavSamvad samvadkeshav

ISSN No. 2581-3528

नागरिक पत्रकारिता और उसका उत्तरदायित्व

सोशल मीडिया प्लेटफार्म ने हम सबको बड़ा अवसर दिया है इसका उपयोग सही दिशा में करना चाहिए ताकि समाज का भरोसा पत्रकारिता जगत से पुनर्जीवित हो सके। बैकफुट पर काम करने वाली मीडिया कंपनी और मोजो पत्रकारों को सच्ची निष्ठा से सही मायने में खबर को दिखाने का प्रयास करना चाहिए ताकि समाज का आईना कहलाने की बजाए वे समाज का आईना बनकर जनता के समक्ष पेश हो सकें।

मोहित कुमार
छात्र,पत्रकारिता एवं जनसंचार संकाय
आईआईएमटी कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट ग्रेटर नोएडा

आधुनिक काल खंड में नागरिक पत्रकारिता का स्तर काफी प्रभावशाली होता जा रहा है। प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के अलावा आज जिसकी सबसे अधिक छाप अधिकांश समाज पर पड़ती दिखाई दे रही है वह है सोशल मीडिया। सोशल मीडिया का इस्तेमाल लोग पत्रकारिता की एक नई विधा के लिए करते हैं जिसको हम मोजो जर्नलिज्म के नाम से जानते हैं।

नागिरक पत्रकारिता का सरोकार सोशल मीडिया के माध्यम से प्रभावित हुआ है। देश और दुनिया के प्रत्येक क्षेत्र में नागरिक पत्रकारिता का समावेश देखने को मिल जाएगा। वर्तमान में समाज अपने आस–पास होने वाली घटनाओं और परिवर्तनों को स्वंय देखने के साथ–साथ प्रसारित करने का अभ्यस्त होता जा रहा है। इसके लिए मोजो जर्नलिज्म का सबसे अधिक प्रयोग किया जाता है। इसके तहत लोग अपने आस–पास घट रही घटनाओं को जन–जन तक पहुंचाने के लिए मोबाइल का इस्तेमाल करते हैं।

मीडिया की टीआरपी वाली संस्कृति और ब्रेकिंग न्यूज शैली ने आम आदमी के जीवन को उदासीन कर दिया है। आजकल साहित्यिक पत्रकारिता का अस्तित्व कम हो गया है। सोशल मीडिया में नागरिक पत्रकारिता का वर्चस्व हर जगह देखने को मिल रहा है। जिसकी सबसे बड़ी वजह है कि आजकल फेक जानकारी लोगों को काफी ज्यादा प्रभावित कर रही है। इससे आम आदमी के जीवन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। खबर की वस्तुनिष्ठता समाप्त होती दिख रही है। मीडिया के स्वरूप को जिस आईने से देखा जाता था, आज वो आईना धुंधला पड़ता नजर आ रहा है।

देश की हकीकत को दर्शाने का एकमात्र साधन पत्रकारिता को ही माना जाता है। समाज का हर एक तबका मीडिया से जुड़ा होता है। सोशल मीडिया के माध्यम से तेजी से फैलने वाली भ्रामक खबरों ने मीडिया के स्वरूप पर बदनुमा दाग लगा दिया है। जिसका प्रभाव आज चारों तरफ देखने और सुनने को मिल रहा है। आज के दौर में पत्रकारिता को व्यापार के नजरिए से देखने वाले

ISSN No. 2581-3528

इसकी विश्वसनीयता को संकट में डाल रहे हैं।

मालूम हो, नागरिक पत्रकारिता को तीव्रता से उड़ान भरने का अवसर तो मिल रहा, लेकिन विश्वसनीयता के मायने सवालों के घेरे में पड़े हुए है। इसका कारण तथ्य, स्पष्टता, संतुलन, वस्तुगत, व्यक्तिगत, भ्रामकता, के संदर्भों पर प्रकाश का परिपक्व ही है। उदाहरणतया, किसी बच्चे के लालन–पालन में असली मां और सौतेली मां का फर्क साफ समझ आता है ठीक वैसे ही पत्रकारिता को यदि कोई इसके बाहर का व्यक्ति करके दिखाता है तो उसमें त्रुटियां हो सकती हैं।

इसी तरह बिना संपादक के कोई खबर का स्पष्टीकरण करना गैर जिम्मेदाराना कर सकता है। इस तरह की खबरों का सारांश संदेहात्मक होता है। किसी भी खबर की पुष्टी तथ्यों और स्पष्टता से की जा सकती है। आजकल की पत्रकारिता का यही हाल बना हुआ है।

भारतीय यूजर्स में 61 फीसदी लोग सोशल मीडिया का उपयोग गलत जानकारी और अफवाह उड़ाने के लिए करते है, जबकि 39 फीसदी लोग इसका उपयोग तथ्यात्मक घटनाओं को मौजूदा हालातों से जोड़कर दुनिया के सामने पेश करने का प्रयास करते हैं।

वर्तमान समय में नागरिक पत्रकारिता पर सरकार को फोकस करने के साथ–साथ इसके लिए नियमों को तय करना चाहिए जिससे लोग एक दायरे में रहकर खबरों और जानकारियों को प्रकाशित कर सकें। इससे आने वाले समय में सकारात्मक पत्रकारिता का घनत्व बढ़ने की संभावना हमेशा बनी रहेगी। नागरिक पत्रकारिता संविधान के अनुसार जिम्मेदरी को दर्शाता है। नागरिक पत्रकारिता का ज्यों–ज्यों विकास होगा, प्रचार–प्रसार उतना ही प्रबल होगा और शिकायतों व अपराधों पर उतनी ही लगाम लगेगी। नागरिक पत्रकारिता की सफलता का एक उदाहरण "सीजी नेट स्वर" के माध्यम से स्पष्ट किया गया है।

नागरिक पत्रकारिता की मुख्य धारा में संपादक की भूमिका का अध्याय नहीं होता है। वो स्वंय संपादक और स्वंय लेखक के रूप में उभरकर सामने प्रस्तुति करते हैं। साहित्यिक व प्रिंट के वरिष्ठ जानकार मोहन जयपाल ने परिभाषित करते हुए कहा है कि नागरिक पत्रकारिता का अभिप्राय साझेदारी पर आधारित एक ऐसी पत्रकारिता से है जिसमें आम नागरिक स्वंय सूचनाओं को संकलित करने के साथ विश्लेषण, रिपोर्टिंग और प्रकाशन की भूमिका खुद ही निभाता है। संचार के क्षेत्र में नागरिक पत्रकारिता का विस्तार बढ़ने से ग्रामीणों और शहरी इलाकों में जागरुकता का बड़ा बदलाव देखने को मिला है। शहर के साथ–साथ आज ग्रामीण इलाकों में भी तकनीकी क्षेत्र में परिवर्तन हो रहा है। समाज आज के दौर में नागरिक पत्रकारिता से अपने आप को जोड़ रहा है।

भारतीय समाज में नागरिक पत्रकारिता के अनेक साधन लाँच हुए हैं जिनके माध्यम से आज घर बैठे अपनी बात मनचाही जगह पहुंचाई जा सकती है और मनचाही घटनाओं से जानकारी जुटाई जा सकती है। भारत में सोशल मीडिया पर अभ्यस्त लोगों की संख्या में यू–ट्यूब पर 44.8 करोड़, फेसबुक पर 41 करोड़, इंस्टाग्राम 21 करोड़, ट्विटर 1.75 करोड़ और व्हाट्सएप पर करीब 53 करोड़ लोग नागरिक पत्रकारिता का निर्वाहन कर रहे है।

अनुमानित आंकड़ों के मुताबिक, भारतीय यूजर्स में 61 फीसदी लोग सोशल मीडिया का उपयोग गलत जानकारी और अफवाह उड़ाने के लिए करते है, जबकि 39 फीसदी लोग इसका उपयोग तथ्यात्मक घटनाओं को मौजूदा हालातों से जोड़कर दुनिया के सामने पेश करने का प्रयास करते हैं।

भारत में मोबाइल उपभोक्ताओं की संख्या 116.01 करोड़ के आस–पास है, जबकि लैंड लाइन उपभोक्ताओं की संख्या 2.17 है। दरअसल लोग आज भी टेलीफोन को ही संचार का माध्यम मानते हैं। मोबाइल इस्तेमाल करने वालों को लेकर मिले आंकड़ों के मुताबिक इसमें ग्रामीण इलाकों के 57.13 फीसदी लोग शामिल हैं जबकि शहर में यह रिकॉर्ड 94.86 फीसदी हो जाता है।

लैंडलाइन उपभोक्ताओं को लेकर दर्ज की गई जानकारी के मुताबिक, ग्रामीण इलाकों में यह आंकड़ा 0.34 प्रतिशत है जबकि शहर में यह 4.46 फीसदी है। वहीं, इंटरनेट उपयोगकर्ताओं का अनुमानित आंकड़ा शहरी इलाकों में 73.87 फीसदी है जबकि ग्रामीण इलाकों में 29.31 फीसदी का आंकलन किया गया है।

समाज में नागरिक पत्रकारिता के अनुसरण पर जबावदेही की जिम्मेदारी स्वंय उठानी पड़ती है। मेरा मानना है कि सोशल मीडिया प्लेटफार्म ने हम सबको बड़ा अवसर दिया है इसका उपयोग सही दिशा में करना चाहिए ताकि समाज का भरोसा पत्रकारिता जगत से पुनर्जीवित हो सके। बैकफुट पर काम करने वाली मीडिया कंपनी और मोजो पत्रकारों को सच्ची निष्ठा से सही मायने में खबर को दिखाने का प्रयास करना चाहिए ताकि समाज का आईना कहलाने की बजाए वे समाज का आईना बनकर जनता के समक्ष पेश हो सकें। ■

ISSN No. 2581-3528

विजयादशमी से दीपावली तक भारतीय त्यौहारों की लड़ी

ज्योति सिंह

शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं निर्वाण शान्तिप्रदं
ब्रह्माशम्भुफणीन्द्रसेव्यमनिशं वेदांतवेद्यंविभुम्।
रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरूं मायामनुष्यंहरिं
वन्देऽहं करूणाकरं रघुवरं भूपालचूड़ामणिम्।।

बदलते मौसम के साथ हल्की–हल्की ठंड लपेटे जब वातावरण ले रहा होता है करवटें, तभी कहीं दस्तक देती है एक दावत उस उल्लास भरे त्यौहार की जो अपने नाम को साकार करता, चारों दिशाओं को समेटे चार अक्षर का एक शब्द दसों दिशाओं को कर देता है हरा भरा।

दशहरा शक्तिपर्व, विजयपर्व, उल्लासपर्व अनेक परंपराओं और मान्यताओं को साथ लिए बन जाता है राष्ट्रीय एकता का महापर्व उत्साह भरा दशहरा।

'दश' और 'हरा' से मिलकर बना दशहरा रावण के 'दस सिरों' को हर कर भगवान राम ने राक्षस राज के आतंक का किया अंत और अन्याय पर न्याय को मिली विजय। इस विजय पर्व को आज भी क्षत्रिय शस्त्र और वाहन की पूजा कर के मनाते हैं। ये त्यौहार किसी जाति विशेष से नहीं बंधा है, सभी वर्ग के लोग इसे हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। दशहरे को 'विजयादशमी भी कहा जाता है जो माँ भगवती के ही एक नाम 'विजया' के नाम पर है। आश्विन माह की शुक्ल पक्ष की दशमी को जब तारा उदय होता है तो उस समय विशेष को विजय मुहूर्त कहते है। इस काल को शिद्धिकाल के रूप में भी माना जाता है।

आइए चले अतीत के उस गौरवशाली युग की ओर जहाँ का काल खण्ड इस महापर्व का साक्षी बना, सतयुग बीतने के बाद बारी थी त्रेतायुग की, वो कालखण्ड जिसमें मर्यादा पुरुषोत्तम की जीवन गाथा ने आने वाले युगों को प्रभावित कर जो अमिट छाप छोड़ी दशहरा उसी का पावन प्रतीक है। राम युद्ध की निर्णायक वेला में इस पर्व को बीज पढ़ते है जब अनेक प्रयासों के बाद भी विजय पताका राम सेना की पहुंच से दूर बनी हुई थी। ऐसे में श्रीराम ने की शक्ति की आराधना जिसका वर्णन बड़े ही प्रभावशाली तरीके से महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला नें किया है राम की शक्ति पूजा में।

साधु, साधु, साधक धीर, धर्म-धन धन्य राम
कह, लिया भगवती ने राघव का हस्तथाम
होगी जय, होगी जय, हे पुरूषोत्तम नवीन
कह महाशक्ति राम के वदन में हुई लीन।

इस दिन केवल अन्याय पर न्याय और बुराई पर अच्छाई की ही विजय नहीं हुई थी बल्कि राम ने इसे बुराई में भी अच्छाई ढूंढने का पर्व बना दिया था। राम ने रावण के अवगुणों की अनदेखी करते हुए उसके गुणों को नहीं भुलाया साथ ही उसके बुद्धि और बल की प्रशंसा करते हुए गुरु समान दर्जा भी दिया।

हमारा देश कृषि प्रधान होने के कारण सभी तीज त्यौहार, जलवायु परिवर्तन और नई फसलों के आगमन के स्वागत के लिए मनाये जाते हैं, जबकि किसान अपने खेत में सुनहरी फसल उगाकर अनाज के रूप में संपत्ति घर लाता है तो उसके उल्लास, उमंग और खुशी का ठिकाना नहीं रहता। घर की छोटी कन्याएं गेहूँ की बाल को परिवार के पुरुषों के कानों, मस्तक या पगड़ी पर रखती हैं। दशहरे में नवदुर्गाओं की माता अपराजिता देवी की विशेषपूजा की जाती है। जिन्हें सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की शक्तिदायिनी, ऊर्जा देने वाली और आदिकाल की श्रेष्ठ फल देने वाली देवी कहा गया है। इनका पूजन सर्वसुख देने वाला माना जाता है।

संकटों का तम घनेरा, हो न आकुल मन ये तेरा
संकटों के तम छटेंगें, होगा फिर सुंदर सवेरा
फिर हमें संदेश देने आ गया पावन दशहरा।

दशहरे में रामलीला का रंग ही निराला है। रामलीला में रामायण और रामचरितमानस में वर्णित पात्रों के जीवन प्रसंगों का सुंदरता और भावनात्मक जुड़ाव के साथ मंचन किया जाता है। भारतीय संस्कृति में कोई भी उत्सव व्यक्तिगत न होकर सामाजिक होता है।

ISSN No. 2581-3528

इसीलिए उत्सवों को मनोरंजनपूर्ण, शिक्षाप्रद और सामाजिक सहयोग बनाये रखने के लिए संगीत नृत्य, नाटक और लीलाओं का मंचन किया जाता है।

राष्ट्र सेविका समिति की स्थापना के लिए वंदनीय मौसी जी लक्ष्मीबाई केलकर ने विजयादशमी का पावन दिन ही चुना महाराष्ट्र के वर्धा में 25 अक्टूबर 1936 को जब समिति की स्थापना की तो उस समय महिलाओं का पढ़ना लिखना तो दूर की बात घर से बाहर निकलना तक आसान नहीं था। ऐसे समय एक महिला जिसने पांचवी कक्षा भी पास नहीं की थी परंतु उनका मनोबल हिमालय से ऊँचा था विचार महान थे भारतीय इतिहास की महान महिलाओं से प्रेरणा लेते हुए लेते हुए उन्होनें ठान लिया कि महिलाएं परिवार की धुरी हो सकती है तो राष्ट्र की क्यों नहीं हो सकती परिवार की देखभाल करने के साथ–साथ महिलाएं अपने बच्चों को अच्छे संस्कार भी दे सके और देश–समाज के लिए योगदान भी दे सके। उनका प्रयास भविष्य में एक विशाल संगठन का रूप ले लेगा उस समय किसी को ये आभास नहीं था। आज लाखों भारतीय महिलाएं निःस्वार्थ भाव से अपने पारिवारिक दायित्व निभाते हुए राष्ट्र निर्माण में योगदान देते हुए मौसी जी के सपने को साकार कर रही है। विजयादशमी दसों इंद्रियों पर विजय का पर्व है। असत्य पर सत्य का, बहिर्मुखता पर अंतर्मुखता का, अन्याय पर न्याय का, दुराचार पर सदाचार का, तमोगुण पर देवीगुण का, दुष्कर्मों पर सत्कर्मों का, भोग पर योग का, असुरत्व पर देवत्व का और जीवत्व पर शिवत्व की विजय का पर्व है।

हमारे त्यौहार वैज्ञानिक रूप से बहुत खास है हर त्यौहार मौसम के हिसाब से निश्चित किया गया है, तभी तो इन दिनों मौसम इतना खुशनुमा होता है, शरद ऋतु की सुहानी ठंडी–ठंडी बयार, रिश्ते नातों में प्यार, चारों और खुशनुमा हलचल, घर, बाजार हाट सभी जगह उमंग का माहौल लिए छमछम करती, नई नवेली सी चली आती है दिवाली।

दीवाली अकेले नहीं आती, साथ लाती है, खुशियां, प्यार, उत्साह, उमंग, मिलन, जुड़ाव, मिठास, ज्योति और कुछ स्नेहिल त्यौहारों की टोली।

दीपावली कोई एक त्यौहार नहीं त्यौहारों की लड़ी है जो करवा चौथ से शुरू होकर अहोई अष्टमी, फिर धनतेरस, छोटी दीवाली यानी हनुमान जयंती फिर लक्ष्मीपूजन यानी दीपावली, गोवर्धन और अंत मे भइयादूज ये सात त्यौहार एक साथ धूम मचाते हुए आते हैं और सभी के मन में उत्साह भर देते है। इन सभी त्योहारों की लड़ी को मिला कर बनती है दीवाली, इसे यूं ही रोशनी का त्यौहार नहीं कहा जाता इस अंधकार पर प्रकाश की विजय। हमारे उपनिषदों में तो कहा भी गया "तमसो मा जोतिर्गमय" यानि अंधकार से प्रकाश की ओर चलो, बढ़ो। अटल बिहारी बाजपेई जी की पंक्तियां कितने सुन्दर दर्शन का चित्रण करती है।

भरी दुपहरी में अँधियारा
सूरज परछाई से हारा
अंतर तम का नेह निचोड़ें
बुझी हुई बाती सुलगाएँ
आओ फिर से दिया जलाएँ

हम इसे सिर्फ प्रकाश पर्व ही नहीं कह सकते यह प्रकाश के साथ ही साथ स्वच्छता का भी पर्व है। कई दिनों पहले ही से महिलाएं पुरुष बच्चे घरों और दुकानों की सफाई शुरू कर देते हैं. खूब उत्साह से मरम्मत, रंग–रोगन और सफेदी कराते हैं। तभी तो घर–मोहल्ले, बाजार सब साफ–सुथरे सजे–धजे नजर आते हैं। सुन्दर सुन्दर

आकाश दीप लटकाये जाते हैं जिनकी मोहक छटा अलग ही मन मोहती है। पुराने समय में बच्चे स्वयं आकाश दीप बनाकर अपने–अपने घरों में टांगते थे लेकिन अब इनका बाजार भी खूब सजता है। नजीर अकबराबादी ने दीपावली का वर्णन अपनी पंक्तियों में क्या खूब किया है

हमें अदाएँ दीवाली की जोर भाती हैं
कि लाखों झमकें हर एक घर में जगमगाती हैं
चिराग जलते हैं और लौएँ झिलमिलाती हैं
मकां-मकां में बहारें ही झमझमाती हैं।
खिलौने नाचें हैं तस्वीरें गत बजाती हैं
बताशे हँसते हैं और खीलें खिल खिलाती हैं

त्योहारों की इस लड़ी की तैयारी की शुरुआत दशहरे के साथ ही हो जाती है। लोग नए–नए कपडे सिलवाते हैं। इतना ही नहीं इस दौरान सिर्फ लोग ही नहीं प्रकृति भी करवटें बदलती है और धीरे से मुस्कुराती गुलाबी सर्दी अपने आने की दस्तक शरद पूर्णिमा से देती

ISSN No. 2581-3528

है। पौराणिक मान्यताएं शरदऋतु पूर्णाकार गोल थाल सा चंद्रमा, संसार भर में उत्सव का माहौल प्रकृति की इन सुन्दर आभाओं के मिले जुले रूप का कोई नाम है तो वो है 'शरदपूनम'। वो रात जब इंतजार होता है उस पहर का जिसमें चाँद 16 कलाएं दिखाता हुआ धरती पर अमृत वर्षा करता है। इस अमृत वर्षा का लाभ लेने को चाँदनी में खुले गगन तले खीर रखी जाती है, जिसे रात में 12 बजे के बाद खाया जाता है, माना जाता है। कि इस तरह कुछ बीमारियां भी दूर होती हैं। कुछ लोग तो चांदनी में रात में सुई में धागा भी पिरोते हैं मान्यता है कि इससे आँखों कि रोशनी तेज होती है। वर्षा ऋतु का ढलता हुआ सौंदर्य और शरद ऋतु के बालरूप का यह सुंदर संजोग हर किसी के मन को मोहित करता है। शरद पूर्णिमा से ही हेमंत ऋतु की शुरुआत होती है। जो पूरे वर्ष का सबसे प्यारा मौसम माना जाता है इसमें प्रकृति भी अपनी खूबसूरती का प्रदर्शन करने में पीछे नहीं रहती, खूब हरियाली बिखेरती है, हेमंत में तीन माह पड़ते है कार्तिक, अगहन, पौष, जिसमें कार्तिक में आता है करवाचौथ।

त्यौहार हमारी संस्कृति और परंपरा का हिस्सा हैं जुड़े हैं हम इस सभ्यता से, तभी तो हम सभ्य है। करवाचौथ वो त्यौहार है जो परिवार में महिला का महत्व प्रदर्शित करता है, त्योहारों की इस लड़ी में सबसे पहला त्यौहार महिला की महत्ता का ही है, हमारी संस्कृति में महिला का दर्जा इतना ऊपर है कि सबसे पहला त्यौहार उन्हीं का है लक्ष्मी रूप धरकर जब स्त्री घर का भरण पोषण करने वाले पुरुष का सत्कार करती है तो घर में एक ऊर्जा का संचार होता है, जिस घर में आपसी संबंध अच्छे होंगे यह अन्य परिवारी जन भी उत्साहित होकर त्यौहार मनाएंगे। सोचिए जिस घर में गृहस्थ के आपसी संबंधी ही सुगम ना हो वहाँ कैसा त्यौहार, कैसी दिवाली, कहा भी गया है बिन गृहणी घर भूत का डेरा। सोचिए जिस घर में महिला ही नहीं होगी वहाँ ये त्यौहार कैसे मन पाएगा, कितना अकेला और उदास रहेगा वो पुरुष इसलिए हमारे त्यौहार बहुत ही सोच समझ कर हमारे पूर्वजों ने बनाए हैं।

करवाचौथ के दिन हर सुहागन महिला अपने अटल सुहाग, पति की लम्बी उम्र और अच्छे स्वास्थ्य की मंगलकामना के लिए निर्जल व्रत करती है। इसे कार्तिक मास की कृष्णपक्ष की चतुर्थी को मनाया जाता है जाता है, जो चंद्र दर्शन के बाद ही पूरा होता है। करवाचौथ महज एक ब्रत नहीं है बल्कि सूत्र है, उस विश्वास का कि हम साथ–साथ रहेंगे, आधार है जीने का कि हमारा साथ न छूटे।

भारतीय त्यौहार परिवार की डोर में हर रिश्ते के साथ गुथे रहते हैं। पति पत्नी के अटूट प्रेम दिवस के उपरांत बच्चों की सुरक्षा, स्वास्थ्य, लम्बी उम्र और खुशहाली की कामना के साथ हर माँ वात्सल्य से ओतप्रोत रहते हुए करवाचौथ के चार दिन बाद अहोई अष्टमी का निर्जल व्रत रखती है और शाम को तारा निकलने पर अर्ध्य देकर पूर्ण करती हैं।

त्यौहारों में परिवार का महत्व और परिवार में पति पत्नी का प्रेम और फिर संतान से फलित परिवार एक सुन्दर परिकल्पना के साथ हमारे समातन संस्कारों का खूबसूरती के साथ प्रदर्शन किया जाता है।

दीपावली से ठीक दो दिन पहले आती है धनतेरस। इस दिन बाजारों में चारों तरफ जनसमूह उमड़ पड़ता है बरतनों की दुकानों पर विशेष सजावट और भीड़–भाड़ दिखाई देती है, क्योंकि मान्यता है कि इस दिन बरतन खरीदना शुभ होता है। कुछ लोग इस दिन सोना चांदी भी खरीदते हैं हर परिवार अपनी–अपनी जरूरत के हिसाब से कुछ न कुछ खरीदारी जरूर करता है। इस दिन तुलसी या घर के द्वार पर शाम को एक दीपक जलाया जाता है।

इससे अगले दिन नरक चतुर्दशी यानी छोटी दीपावली रूप चौदस और हनुमान जयंती मनाई जाती है। मान्यता है कि इस दिन तेल लगाकर चिचड़ी की पत्तियां, हल्दी और कुमकुम पानी में डालकर या उबटन लगाकर नहाने से रूप में निखार आता है नरक से मुक्ति मिलती है और स्वर्ग की प्राप्ति होती है। शाम को दीपदान की प्रथा है जिसे यमराज के लिए किया जाता है। यह हनुमानजी की उपासना का भी विशेष दिन माना जाता है इसलिये ये पांच पर्वो की कड़ी के मध्य में रहने वाला त्यौहार ऐसा है जैसे मंत्रियों के बीच राजा।

शुभं करोति कल्याणम् आरोग्यम् धमसंपदा।
शत्रुबुद्विविनाशाय दीपकाय नमोऽस्तुते।।
दीपो ज्योति परंब्रह्म दीपो ज्योतिर्जनार्दनः।
दीपो हरतु में पापं संध्यादीप नमोऽस्तुते।।

अगले दिन आती है दीपावली। इस दिन घरों में सुबह से ही तरह–तरह के पकवान बनाए जाते हैं। बाजारों में खील–बताशे, मिठाइयां, खांड के खिलौने लक्ष्मी–गणेश की मूर्तियाँ बिकने लगती है। जगह जगह पर आतिशबाजी और पटाखों की दुकानें सजी होती

ISSN No. 2581-3528

है। सुबह से ही लोग रिश्तेदारों, मित्रों, सगे–संबंधियों के घर मिठाइयां और उपहार बांटने लगते हैं। दीपावली की शाम लक्ष्मी और गणेश की पूजा की जाती है। पूजा के बाद लोग अपने–अपने घरों के बाहर दीपक और मोमबतियां जलाते हैं। चारों और चमकते दीपक बहुत सुंदर दिखाई देते हैं। रंग–बिरंगे बिजली के बल्बों से बाजार और गलियां जगमगा उठते हैं। बच्चे तरह–तरह के पटाखों और आतिशबाजियों का आनंद लेते हैं।

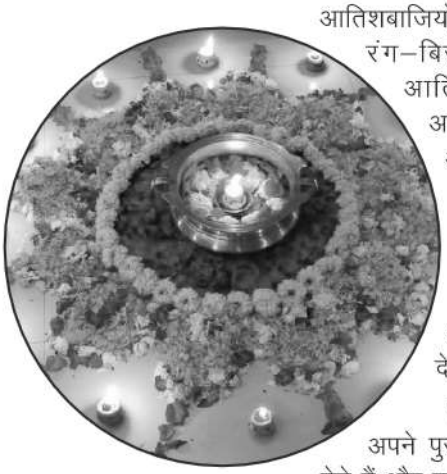

रंग–बिरंगी फुलझड़ियाँ आतिशबाजियां और अनारों के जलने का आनंद हरेक आयु के लोग लेते हैं। देर रात तक कार्तिक की अंधेरी रात पूर्णिमा से भी अधिक प्रकाशवान दिखाई देती है।

दीपावली पर व्यापारी अपने पुराने बही खाते बदल देते हैं और दुकानों पर लक्ष्मीपूजन करते हैं। उनका मानना है कि ऐसा करने से धन की देवी लक्ष्मी की उन पर विशेष अनुकंपा रहेगी। किसानों के लिए इस पर्व का विशेष महत्व है। खरीफ की फसल पककर तैयार हो जाने से किसानों के खलिहान समृद्ध हो जाते हैं। किसान अपनी समृद्धि का यह पर्व उल्लास पूर्वक मनाते हैं। कविराज गोपाल दास नीरज जी ने दीपावली पर बहुत सुंदर कविता कहीं है।

जलाओ दिये पर रहे ध्यान इतना,
अंधेरा धरा पर कहीं रह न जाये,
मगर दीप की दीप्ति से सिर्फ जग में,
नहीं मिट सका है धरा का अंधेरा,
उतर क्यों न आयें नखत नयन के,
नहीं कर सकेंगे हृदय में उजेरा,
कटेंगे तभी यह अंधरे घिरे अब,
स्वर्ग धर मनुज दीप का रूप आये,
जलाओ दिये पर रहे ध्यान इतना
देश धरा पर कहीं रह न जाये,

दीपावली की अगली सुबह गोवर्धन पूजा होती है। लोग इसे अन्नकूट भी कहते हैं। इस त्यौहार में प्रकृति के साथ मानव का सीधा सम्बन्ध दिखाई देता है गोवर्धन पूजा में गोधन यानी गार्यों की पूजा की जाती है। शास्त्रों में गाय को उतना ही पवित्र माना गया है जितना कि नदियों में गंगा। गाय को लक्ष्मी रूपी भी कहा गया है। जैसे लक्ष्मी को सुख समृद्धि की देवी माना गया है उसी तरह गाय भी अपने दूध से स्वास्थ्य के रूप में धन देती है। गया का बछड़ा खेतों में अन्न उगाता है। गाय सम्पूर्ण मानव जाति के लिए पूजनीय और आदरणीय है। इस के प्रति श्रद्धा प्रकट करने के लिए ही कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा के दिन गोर्वधन की पूजा की जाती है। कहा जाता है

कि भगवान श्रीकृष्ण ने मूसलाधार वर्षा में डूबते ब्रजवासियों को बचाने के लिए सात दिन तक गोर्वधन पर्वत अपनी सबसे छोटी उंगली पर उठाकर रखा जिससे गोप–गोपिकाएँ उसकी छाया में सुखपूर्वक रहे। सातवें दिन भगवान ने गोवर्धन को नीचे रखा तभी से यह उत्सव अन्नकूट के नाम से मनाया जाने लगा। इस दिन लोग अपने गाय–बैलों को सजाते हैं और गोबर का पर्व बनाकर पूजा करते हैं।

अगले दिन भाई दूज का पर्व होता है। भाई दूज को यम द्वितीया भी कहते हैं। यह दीपोत्सव का समापन दिवस भी है। इस दिन भाई और बहन के एक साथ यमुना नदी में स्नान करने की परंपरा है। बहिन अपने भाई के माथे पर तिलक लगाकर उसके मंगल की कामना करती है और भाई भी बहन को भेंट देता है।

जलता हुआ दीपक लिख जाता है संस्कारों की कहानी, हर तरफ जमगाते, रोशन दीये दीपावली की पहचान है। सदियों से दिवाली पर दीये जलाने की परंपरा कायम है, जो अमावस के अंधेरे को प्रकाशमय करके हमारे मन में भी उत्साह और ज्योति का संचार करती है। कब से हर घर में दीये जलाने की परंपरा शुरू हुई यह कोई नहीं जानता, लेकिन अंधकार पर प्रकाश की विजय का ये पर्व समाज में उल्लास, भाईचारे और प्रेम का संदेश फैलाता है। ये सामूहिक और व्यक्तिगत दोनों ही तरह से मनाया जाने वाला ऐसा विशिष्ट पर्व है जो धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक विशिष्टता रखता है। हर तरफ दीवाली मनाने के कारण और तरीके अलग–अलग हैं पर सभी जगह कई पीढ़ियों से यह त्योहार चला आ रहा है।

'ज्योति मुखरित हो, हर घर के आँगन में,
कोई भी कोना, ना रजनी का डेरा हो,
खिल जाएँ व्यथित मन, आशा का बसेरा हो,
करें विजय तिमिर पर, अपने मन के बल से,
दीपों की दीप्ती यह संदेसा लाई है,
करें मिल कर स्वागत, दीवाली आई है'। ■

ISSN No. 2581-3528

सनातन धर्म में हर पल पर्व होता है

रवि पाराशर
वरिष्ठ पत्रकार एवं लेखक

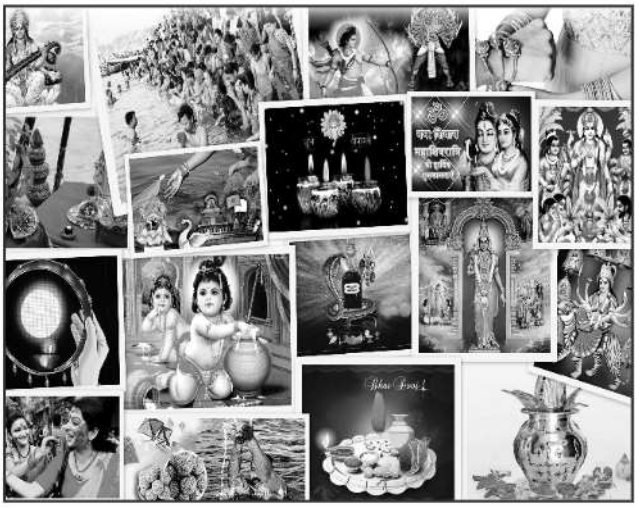

सनातन यानी शाश्वत, अविनाशी, अनादि, अनंत, नित्य, निरंतर इत्यादि। सनातन सत्य है कि मनुष्य उत्पत्ति धरती, आकाश, जल, अग्नि और वायु– इन पांच तत्वों से होती है। हर व्यक्ति में इन पांच तत्वों की निर्णायक उपस्थिति रहती है। किसी तत्व की थोड़ी कम, किसी की थोड़ी अधिक। व्यक्ति के गुण–धर्म इसके आधार पर ही भिन्न–भिन्न होते हैं। प्रकारांतर से देखें तो आकाश, धरती, जल, अग्नि और वायु का समुच्चय ही सनातन है।

मनुष्य या व्यष्टि से होते हुए समाज या समष्टि तक की यात्रा बहुत सरल और सहज तब होती है, जब सुसंस्कारों के बीज सही तरह से बोए जाएं। कहने का अर्थ यह हुआ कि व्यक्ति के जन्म मात्र से ही उसके समाज सापेक्ष निर्माण का आरंभ नहीं होता। कल जो खलनायक थे या आज जो दुष्ट हैं, वे अपने परिवार के ज्ञान–अज्ञान की सीमाओं या जन्म स्थान के विशिष्ट भूगोल या किसी और भौतिक कारण मात्र की वजह से ऐसे नहीं थे या हैं। उन्हें सही संस्कार नहीं मिले, इस कारण वे ऐसे थे अथवा हैं। यानी जीवन की उत्पत्ति के लिए पंच तत्व तो अनिवार्य रूप से आवश्यक हैं, लेकिन सच्चरित्र व्यक्ति का निर्माण इतने भर से ही नहीं होता। इसके लिए समाज हितकारी संस्कार ही महत्वपूर्ण कारक है। मोटे तौर पर इसे इस तरह समझें कि हम पैदा तो निर्वस्त्र होते हैं, लेकिन जीवन भर निर्वस्त्र रहते नहीं। दुनिया में अलग–अलग भौगोलिक परिस्थितियों अथवा विचारों के कारण व्यक्तियों की वेशभूषा अलग–अलग भले होती हो, लेकिन इसके पीछे का कारण सिद्धांततः एक ही होता है।

हम भारतीयों को यह संस्कार विशेष ही शेष विश्व से अलग करता है। पंच तत्वों की चिरंतन सत्य अवधारणा के साथ सुसंस्कारों का तालमेल ही सनातन संस्कृति का निर्माण करता है। हर संस्कृति के खलनायकों की तरह सनातन संस्कृति के भी अपने मौलिक खलनायक हैं। सनातन संस्कृति आदि से अंत तक प्रकृति पर आधारित है, इसलिए भारतीय जीवन मूल रूप से उत्सवधर्मी है। हम धरती, आकाश, जल, अग्नि और वायु के साथ ही विशिष्ट सकारात्मक संस्कारों से बनते हैं, इसलिए प्रकृति का जितना सम्मान हमारी सनातन संस्कृति में किया जाता है, उतना किसी और संस्कृति में नहीं।

धरती की कोख से जीवनदायी हरियाली फूटती है, तो हम उत्सव या त्यौहार मनाते हैं। अनंत आकाश का आभासी वितान जब हमारी कल्पनाओं में उड़ान के रंग भरता है, तो हम प्रफुल्लित होकर उत्सव मनाने लगते हैं। प्रकाश जब हमारे मन के अंधकार को पूरी चेतना के साथ जागृत करता है, प्रकाश का ताप जब धरती की गोद से उपजी अमरता भरी हरियाली की अल्हड़ उंगलियां थाम कर चेतना के ऊर्ध्वमुखी संसाधनों का विकास करता है, तब हम उत्सव मनाने लगते हैं। अग्नि का संहारक तेज जब नियंत्रित होकर हमारी क्षुधा के शमन के लिए रोटी–साग पकाता है, तब हम उत्सव मनाने लगते हैं और जब हरे–भरे पेड़ हवा के सहारे झूमने लगते हैं, अनमोल फूलों की मादकता भरी गंध जब हवा के रथों पर सवार होकर हमारे मन–मष्तिष्क को महकाने लगती है, तब हम उत्सव मनाने लगते हैं।

धरती पर हम चलते हैं, घरों और गंतव्यों के चक्कर काटते हुए जीवन में निरंतर आगे बढ़ते हैं, धरती और आकाश हमें विस्तार देते हैं, प्रकाश देते हैं, अग्नि देते हैं, जल देते हैं, हवा देते हैं, क्षितिज हमारे जीवन का व्यावहारिक और सैद्धांतिक आधार है। हमें खाने को कुछ न मिले, तो हम मर जाते हैं, पीने को पानी न मिले, तो भी हम मर जाएंगे और यदि हवा न मिले, तब तो और जल्दी मर जाएंगे। हमें खाना, पानी और हवा एक साथ चाहिए, लगातार चाहिए। जब हमें यह लगातार यानी नित्य मिलता है, तब हम लगातार यानी नित्य उत्सव ही तो मनाते हैं। वसुधैव कुटुंबकम की अवधारणा को मन में धारण किए हम सनातन धर्मी हर पल को ही उत्सव की तरह अनुभव करते हैं।

सुबह सोकर उठने पर हम सभी जीवनदायी तत्वों को प्रणाम करते हैं। नित्यकर्म और स्नान के बाद हम ध्यान करते हैं, सूर्य को जल चढ़ाते हैं। भोजन के समय हम प्रकृति के प्रति कृतज्ञता जताते हुए कोई भूखा न रहे, ऐसी कामना करते हैं। दिन भर जीवन के क्रम में हम प्रकृति के प्रति आदर भाव मन में रखते हैं। सोते समय भी हम सबके कल्याण की कामना करते हैं, तो हम हर समय जीवन का उत्सव ही तो मना रहे होते हैं। सनातन घरों में नित्य–प्रति होने वाला पूजा–पाठ हो या फिर किसी के जन्मदिन या किसी अन्य शुभ अवसर पर होने वाला धार्मिक कर्मकांड, होली हो, दशहरा–दीवाली हो या फिर और कोई घोषित सामूहिक पर्व, हम प्रकृति के प्रति अपने उद्‌भट प्रेम की ही अभिव्यक्ति कर रहे होते हैं। हम सदैव ऐसे ही रहें, यह कामना करते हैं।

अक्टूबर महीना हमारे कई सामूहिक उत्सवों का समय होता है। हमें पूरी सनातन परंपरा से अपने सभी उत्सव मनाने चाहिए। लेकिन कोविड–19 जैसी वैश्विक महामारी को भी ध्यान में रखकर उचित आचरण करने चाहिए, क्योंकि हम मानते हैं सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामयाः....। ■

ISSN No. 2581-3528

बॉलीवुड समीक्षा

अतुल गंगवार
लेखक, वरिष्ठ पत्रकार

मुंबई की मायानगरी एक बार फिर अपने स्याह अंधेरों को लेकर चर्चा में है। इस बार चर्चा की वजह है फिल्म अभिनेता शाहरुख खान का बेटा आर्यन खान। वजह, उसका एक क्रूज से गिरफ्तार होना जहां नशे की पार्टी चल रही थी। मामला शायद इतना बड़ा नहीं होता लेकिन आर्यन के पिता का नाम शाहरुख खान है तो मामला बड़ा हो गया। इसके तार जहां तक कल्पनाओं की उड़ान ली जा सकती थी वहां तक जोड़े जाने लगे। तमाम तरह की अटकलें लगाई जाने लगीं और कहा गया कि आर्यन ने शाहरुख को मुंह दिखाने लायक नहीं छोड़ा। ऐसा लग रहा है जैसे इस पूरे प्रकरण में अगर कोई दोषी है तो वह है आर्यन। हां दोष है उसका, उसने शाहरुख खान के घर जन्म लिया। जहां उसके स्वयं के कथनानुसार उसे अपने पिता से मिलने के लिए मुलाकात का वक्त लेना पड़ता था। उसे शायद घर में तमाम सुख सुविधाएं तो मिली लेकिन वह परवरिश नहीं मिली जिस पर चलकर वह एक अच्छा शहरी बन पाता, एक अच्छा इंसान बन पाता। इस देश में जहां प्रत्येक माता–पिता अपने बच्चों के भविष्य की बात करते हैं तो आशा करते हैं कि वह बड़े होकर कुछ ऐसा अवश्य करेंगे जिससे उनका नाम रोशन होगा। वहीं एक पुराने इंटरव्यू में शाहरुख ये कहते नजर आते हैं कि वह चाहते कि आर्यन वह सब कुछ करें जो वह नहीं कर पाए। आर्यन ड्रग्स लें। आर्यन लड़कियों के साथ सैक्स करें। अब जिस पिता की अपने पुत्र से ये ही आशा होगी तो इस हिसाब से तो उन्होंने अपने पिता का नाम रोशन ही किया है। अपने पिता की ख्वाहिशों को पूरा किया है।

आर्यन वह सब कुछ करें जो वह नहीं कर पाए। आर्यन ड्रग्स लें। आर्यन लड़कियों के साथ सैक्स करें। अब जिस पिता की अपने पुत्र से ये ही आशा होगी तो इस हिसाब से तो उन्होंने अपने पिता का नाम रोशन ही किया है। अपने पिता की ख्वाहिशों को पूरा किया है।

आर्यन मायानगरी के पहले शख्स नहीं हैं जिसने ऐसा कुछ कारनामा किया है। पहले भी संजय दत्त नशे का शिकार रह चुके हैं। मुंबई बम ब्लास्ट में उन पर हथियार रखने का आरोप भी लग चुका है। जिसमें उन्होंने सजा भी काटी है। उनकी बायोपिक में उनका किरदार निभा रहे रणबीर कपूर अपने सैक्स संबंधों की बात करते हुए बताते हैं कि उनके तीन– साढ़े तीन सौ लड़कियों से संबंध रहें है। सलमान खान शराब पीकर फुटपाथ पर लोगों को कुचलने के कथित आरोप में फंस चुके हैं। सैफ अली खान, सलमान खान पर हिरन के शिकार का भी आरोप लग चुका है। सुशांत सिंह राजपूत हत्या–आत्महत्या मामले में भी नशे का खेल सामने आया था जिसमें कई बड़ी मछलियां जाल में फंसी थी। अब जाहिर है मछलियां बड़ी थी तो जाल तो कटना ही था, मछलियों को निकलना ही था।

शाहरुख खान का घर मन्नत अपनी कुछ विशेषताओं के लिए जाना जाता है। इंडस्ट्री के लोग कहते हैं कि बादशाह खान के इस घर में प्रवेश के लिए बहुत कुछ खोना पड़ता है। कहा जाता है कि गौरी खान की अक्सर यहां होने वाली पार्टियां उन्मुक्त होती हैं। नशे के प्रकार की कोई सीमा नहीं। उनका एक खास ग्रुप है जो इसका हिस्सा होता है। अब इन पार्टियों में शामिल होने वाले शाहरुख और गौरी के बेहद करीबी होते हैं। आर्यन ने तो बचपन से ही इन पार्टियों को छुपकर देखा होगा। तो उसने क्या गलत किया। उसने तो वही किया जो उसने देखा। शायद कोई उसे सही गलत का फर्क समझा पाता, तो आज वह जेल में नहीं होता।

हर बार जब भी बॉलीवुड से जुड़ी किसी गंदगी का खुलासा होता है तो लगता है शायद इस बार बॉलीवुड के लोग सुधर जायें। पर ऐसा होता नहीं है। ऐसा लगता है पैसे, ताकत और शोहरत का नशा उनके सर चढ़कर बोलता है। इस मामले में भी शायद कुछ ऐसा ही हो। कुछ दिन जेल में रह कर आर्यन बाहर आ जायें। वक्त के साथ आप और हम इस मामले को भूल जायें। साल दो साल बाद एक फिल्म रिलीज हो जिसके नायक आर्यन खान हों और करोड़ों लोग अपने मेहनत की गाढ़ी कमाई उन पर लुटाएं, उनका बैंक बैलेंस बढ़ाएं।

लेकिन क्या अब वक्त नहीं आ गया है नशे में मदहोश बॉलीवुड के होश ठिकाने लगाने का? जिस तरह की गंदगी ये लोग इस समय ओटीटी प्लेटफॉर्म पर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर फैला रहें है। जिस तरह से भारतीय पारिवारिक मूल्यों का मजाक उड़ाया जा रहा है। संस्कृति, इतिहास को तोड़ मरोड़ कर, विकृत करके दिखाया जा रहा है। सनातन धर्म को लगातार कटघरे में खड़ा किया जा रहा है। ऐसे में आज आपके और हमारे जैसे दर्शकों का कर्तव्य बनता है कि इस तरह के फिल्मकारों और उनके काम का बहिष्कार किया जाए। ऐसे लोग जिनके अपने पारिवारिक मूल्य नहीं है क्या वह हमारे नायक हो सकते हैं? शाहरुख खान जैसे पिता हमारे रोल मॉडल हो सकते हैं? नहीं। इसलिए अब वक्त है कि इन तमाम लोगों को बेनकाब करके उन्हें उनकी सही जगह दिखाई जाये। ये वह गंदगी है जिसे अगर आप आज खत्म करने की सोचेंगे तो भी बरसों लग जायेंगे उसे खत्म करने में। पर कही से और कभी तो शुरुआत करनी होगी तो क्यों ना आज से, यहीं से शुरुआत करें। ■

ISSN No. 2581-3528

कैसे बनें डिफेंस रिपोर्टर

अनीता चौधरी
पत्रकार

सेना से जुडी हर एक बात रोंगटे खड़ी करने वाली होती हैं। उनकी वीरगाथा के बारे में जानना हर व्यक्ति के लिए उत्सुकता का विषय होता है। मगर सेना के बारे में असली कहानियां सिर्फ जनसंपर्क अधिकारियों या आधिकारिक बयानों के माध्यम से ही आने वाली नहीं होती हैं। सेना की असली कहानियां उन सैनिकों के माध्यम से आती हैं जो सीमा पर सबसे अग्रिम पंक्ति में खड़े होते हैं और गोलियों की तड़तड़ाहट से दुश्मनों के दिल को दहलाते हैं। मगर देश की सीमा सुरक्षा और रक्षा क्षेत्र से जुडी इन बहादुरी भरी कहानियों को आँखों देखी दिनचर्या के रूप में जानना इतना आसान नहीं होता है। ये तभी संभव है जब सीमा सुरक्षा में लगे इन सैनिकों से सीधी बातचीत को कोई हम तक पहुंचाये। हमारे लिए हमारे सैनिकों की बहादुरी भरे सच्चे किस्से हम तक पहुंचाने का एकमात्र माध्यम होते हैं मीडिया के रूप में रक्षा पत्रकार। देश की सुरक्षा में लगे अग्रिम पंक्ति में खड़े इन सैनिकों से सीधी बात तभी संभव है जब आप रक्षा पत्रकार हों और रक्षा मंत्रालय या भारत सरकार की अनुमति आपके पास हो।

रक्षा मंत्रालय की तरफ से भारतीय पत्रकारों के लिए रक्षा संवाददाताओं के पाठ्यक्रम भी चलाये जाते हैं। जिसे डिफेंस कॉरेसपोंडेंट कोर्स या डीसीसी कोर्स के नाम से जाना जाता हैं।

वैश्विक संचार के इस युग में अगर देखें तो सरकारों ने अपनी सार्वजनिक कूटनीति में बहुत विस्तार किया है। विशेष रूप से मीडिया के माध्यम से रक्षा से जुड़े मुद्दों को लोगों तक पहुंचाने के लिए पत्रकारों को कुछ नियमों के साथ काफी हद तक छूट दी गयी है। अपने कवरेज के माध्यम से मीडिया घरेलू और अंतरराष्ट्रीय जनता के लिए भी प्रभावी ढंग से रक्षा सम्बन्धी घटनाओं को लोगो के सामने ला रही है ताकि भारत के सैन्य शक्ति से पूरा विश्व अवगत हो सके। मगर सभी तरह की रिपोर्टिंग की तुलना में डिफेन्स रिपोर्टिंग एक बेहद ही संवेदनशील और जिम्मेदार रिपोर्टिंग है। दरअसल अज्ञानता और गलत सूचना सेना के लिए दुश्मन की गोली से कहीं अधिक घातक होती है। मुश्किल से मुश्किल स्थिति में भी सेना के जटिल मामलों को सरल तरीके से पारदर्शिता के साथ, सेना सुरक्षा नियमों का पालन करते हुए, सीमा और सेना से जुडी खबरों को लोगों तक पहुंचाना ही रक्षा क्षेत्र की पत्रकारिता कही जाती है।

डिफेन्स रिपोर्टिंग क्या है? : रक्षा और युद्ध की रिपोर्टिंग जटिल होती हैं। रिपोर्टिंग के दौरान कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। ऐसे में आपके लिए सेना से जुड़ी चौतरफा जानकारी और परस्पर सम्बन्ध बेहद आवश्यक है। यहां तक कि उचित भाषा, सैन्य रैंकों और रेजिमेंटों से जुडी मूल बातें और नियम रक्षा क्षेत्र की सटीक रिपोर्टिंग के लिए चुनौतियां बन सकती हैं। डिफेन्स पत्रकारिता के लिए सैन्य, सीमा और रक्षा से जुड़े एक–एक बिंदु की जानकारी आवश्यक है तभी आप एक विश्वसनीय रिपोर्ट लोगों तक पहुंचा सकते हैं। जिस तरह वित्तीय, खेल या कोर्ट मामलों के लिए विशेष पत्रकार अपने–अपने क्षेत्रों में रिपोर्टिंग करते हैं ठीक उसी तरह रक्षा पत्रकार भी होते हैं लेकिन इनके लिए रिपोर्टिंग के नियम थोड़े सख्त और जिम्मेदारी भरे होते हैं। रक्षा संवाददाता की संवेदनशील रिपोर्टिंग में देश की सैन्य और सीमा सुरक्षा की भी जिम्मेदारी निहित होती है।

भारत में रक्षा पत्रकार कैसे बनें? : डिफेंस पत्रकार बनने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि आप पत्रकारिता की पढ़ाई के दौरान ही रक्षा अध्ययन, अंतरराष्ट्रीय संबंधों, सैन्य इतिहास या संबंधित क्षेत्रों की डिग्री अर्जित कर लें उसके बाद डिफेंस रिपोर्टिंग में अपना करियर बनाने के लिए आगे आएं। छात्रों के पास स्नातक के दौरान ही विभिन्न विषयों को चुनने का विकल्प होता हैं यही नहीं कुछ वोकेशनल कोर्सेज भी चलते हैं जिनको करने के बाद आप डिफेंस संबंधित बेसिक जानकारी हासिल कर सकते हैं। रक्षा संवाददाता के कन्धों पर सेना के एक जवान की तरह ही पुरे देश की सैन्य शक्ति और सुरक्षा से जुडी उनकी अवधारणा की जिम्मेदारी होती है। सेना के साथ मिलकर स्टोरी कवरेज के दौरान सैन्य ठिकानों पर काम करने के लिए आवश्यक है कि आप सेना से जुडी सम्पूर्ण जानकारी अपने पास रखें। आपकी डेफेंसे कवरेज देश के अंतर्राष्ट्रीय रिश्तों को भी प्रभावित करती है इसलिए आपकी रक्षा पत्रकारिता हमेशा गंभीर और संवेदनशील होनी चाहिए जहां त्रुटियों की गुंजाईश न के बराबर हो। इसका मतलब यह है कि जब आप, सैन्य क्षेत्र, युद्ध क्षेत्र या अन्य संघर्ष क्षेत्र में पत्रकारिता के लिए जब जाएं तो आपकी लेख या कवरेज में जिम्मेदार जानकारी पूरी तरह से दिखानी चाहिए। तभी आपके पाठकों या दर्शकों की आपकी पत्रकारिता पर विश्वसनीयता बढ़ेगी। आपकी कवरेज संवेदनशीलता के साथ–साथ सैन्य नियमावली युक्त भी होनी चाहिए। आपकी डिफेन्स मीडिया स्टोरी में इनफार्मेशन और पारदर्शिता के साथ–साथ गंभीरता बहुत महत्वपूर्ण है। अपने लेख या इलेक्ट्रॉनिक मीडिया कवरेज के दौरान किस हद तक कितनी जानकारी साझा करनी है, इस तालमेल पर भी आपकी जबरदस्त पकड़ होनी चाहिए। अति उत्साहित डिफेंस पत्रकारिता घातक साबित हो सकता है। यही नहीं अति उत्साह से भरे रक्षा पत्रकारिता आपकी क्रेडिबिलिटी पर भी सवाल खड़े कर सकते है। कवरेज के दौरान आपके द्वारा साझा की गयी देश की रक्षा क्षेत्र से जुडी कोई भी एक संवेदनशील जानकारी आपके पत्रकारिता के भविष्य के लिए ग्रहण बन सकता है। सेना और रक्षा मंत्रालय दोनों सिर्फ आपको ही नहीं बल्कि संस्थान को भी 'शो कॉज नोटिस' देने के बाद आपके रक्षा रिपोर्टिंग पर रोक लगा सकती है। रक्षा रिपोर्टिंग के दौरान सामने आने वाली

ISSN No. 2581-3528

जोखिमों को जानने और समझने के लिए, एक डिफेंस रिपोर्टर के लिए जरूरी होता है कि वो देश की सेना की जटिलता को समझे और एक सैनिक बनकर रिपोर्टिंग के दौरान सैन्य सुरक्षा की तरफ अपनी जिम्मेदारी निभाते हुए देश की डिफेन्स शक्ति के नए आसमानी उड़ानों को या दुश्मनों के साथ चल रहे मुठभेड़ को सच्चाई के साथ सेना या रक्षा मंत्रालय को विश्वास में लेते हुए लोगों तक पहुंचाये। रक्षा संवाददाता के लिए जरूरी होता है कि वो विषम परिस्थिति में भी कठिनाई भरे लगातार यात्रा लिए तैयार रहे, टेक्नो सेवी रहे और अपनी रिपोर्ट के माध्यम से खतरों से भरी आंखों देखी जानकारी को जल्द से जल्द लोगों तक अपने लेख या कैमरे के माध्यम से पहुंचाये।

मीडियाकर्मी और मीडिया संस्थानों को अपने लेख या स्टोरी कवरेज के दौरान सैन्य नियमों से परिचित होना अति आवश्यक होता है। नियमों की अनदेखी आपको ब्लैकलिस्ट की कैटेगरी में डाल सकता है। यदि आपको रक्षा क्षेत्र में काम करने का पहले से अनुभव है या पहले से ही राष्ट्रीय सुरक्षा और सैन्य सम्बन्धी विषयों की कोई भी एक डिग्री हासिल है तो सेना और रक्षा मंत्रालय की तरफ से आपको प्राथमिकता दी जाएगी। यदि आपके पास फोटोग्राफी या वीडियोग्राफी का अनुभव है, तो यह निश्चित रूप से आपकी योग्यताओं में और मददगार साबित होगाद्य

रक्षा मंत्रालय की तरफ से भारतीय पत्रकारों के लिए रक्षा संवाददाताओं के पाठ्यक्रम भी चलाये जाते हैं। जिसे डिफेंस कॉरेसपोंडेंट कोर्स या डीसीसी कोर्स के नाम से जाना जाता हैं।

डिफेंस कॉरेसपोंडेंट कोर्स करने के लिए रक्षा पत्रकार के रूप में आपके पास संस्थान का रिकमेंडेशन लेटर होना चाहिए, डिफेंस रिपोर्टिंग का थोड़ा अनुभव होना चाहिए, उम्र 35 साल तक की ही होनी चाहिए, आपकी आईडी की इंटेलिजेंस क्लीयरेंस होनी चाहिए और मेडिकली फिट होने चाहिए। डिफेंस कॉरेसपोंडेंट कोर्स रक्षा मंत्रालय के जनसम्पर्क निदेशालय के माध्यम से होता है। रक्षा मंत्रालय में जनसंपर्क निदेशालय यानी डीपीआर सूचना के द्वारपाल के रूप में कार्य करता है। यह रक्षा मंत्रालय और सशस्त्र बलों सहित रक्षा मंत्रालय के सभी प्रतिष्ठानों के कार्यक्रमों, नीतियों और गतिविधियों की जानकारी के प्रसार के लिए संचार का एकमात्र अधिकृत चैनल होता है। रक्षा मंत्रालय में जनसम्पर्क निदेशालय रक्षा से जुड़े मामलों पर सम्बन्धित विभाग या व्यक्ति की मीडिया से बातचीत करता है और पूरी जानकारी देने में मदद करता है। रक्षा मंत्रालय के तहत होने वाले कार्यक्रमों और मंत्रालय के प्रमुख नीतिगत फैसलों के बारे में भी मीडिया और जनता के बीच सूचना के प्रसार के लिए जनसंपर्क निदेशालय (डीपीआर) नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करता है। नई दिल्ली में रक्षा मंत्रालय के अपने मुख्यालय और देश भर में 25 क्षेत्रीय कार्यालयों के साथ डीपीआर प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में व्यापक प्रचार सुनिश्चित करने के लिए और मीडिया को सहायता प्रदान करने के लिए जिम्मेदार होता है। यह नियमित साक्षात्कार, पत्रकार सम्मेलन का आयोजन करने के साथ–साथ रक्षा मंत्रालय और सशस्त्र बलों के नेतृत्व और वरिष्ठ अधिकारियों के साथ मीडिया से बातचीत की सुविधा भी प्रदान करता है।

जनसम्पर्क निदेशालय यानी डीपीआर रक्षा मामलों के बारे में पत्रकारों को अपनी जानकारी बढ़ाने के लिए मीडियाकर्मियों के लिए रक्षा संवाददाताओं का कोर्स कराता है। रक्षा संवाददाता पाठ्यक्रम (डीसीसी) रक्षा मंत्रालय के जनसंपर्क निदेशालय द्वारा आयोजित सबसे प्रतिष्ठित पाठ्यक्रमों में से एक है। यह कोर्स एक रिपोर्टर को उन्हें विशेषज्ञ रक्षा पत्रकार बनाने में यथासंभव मदद करता है। इस कोर्स में सैन्य बलों की और सीमा सुरक्षा नियमों की बारीकियों से परिचित कराया जाता है। कोर्स के दौरान तीनों सेनाओं, डीआरडीओ और तटरक्षक बल के प्रख्यात वक्ता और रक्षा विशेषज्ञ विभिन्न सैन्य विषयों पर पत्रकारों के साथ अपनी विशेषज्ञता, जानकारी और विचार साझा करते हैं। प्रमुख आयोजनों के लिए मीडिया प्रचार में आधिकारिक तौर पर किन–किन बारीकियों को ध्यान में रखना चाहिए कोर्स के दौरान ये सभी बातें बताई जाती हैं। भारत में डीपीआर द्वारा विदेशों में होने वाले विभिन्न सैन्य अभ्यासों और असाइनमेंट और उनके प्रोटोकॉल के बारे में भी इस कोर्स के दौरान पत्रकारों को अवगत कराया जाता है।

रक्षा मंत्रालय के बड़े फैसलों को भी व्यापक रूप से प्रचारित करने का काम भी डीपीआर का ही है। डीपीआर द्वारा देश भर में विभिन्न महत्वपूर्ण रक्षा स्थानों के लिए मीडिया टूर का आयोजन भी किया जाता है। ताकि पत्रकार रक्षा क्षेत्र से जुड़े बड़े आयोजनों और यात्राओं से भी अच्छी तरीके से परिचित हो सकें। जनसंचार निदेशालय गणतंत्र दिवस समारोह से सम्बन्धित सभी मीडिया कवरेज के लिये जिम्मेदार होता है। लाल किले पर स्वतंत्रता दिवस समारोह, संयुक्त कमांडरों के सम्मेलन और राष्ट्रपति भवन में रक्षा अलंकरण समारोहों के सम्बोधन और आयोजन, एनसीसी रैली जैसे अन्य महत्वपूर्ण आयोजनों का भी उचित प्रचार–प्रसार और मीडियकर्मियों को स्टोरी कवरेज में सुविधा प्रदान करने की जिम्मेदारी भी डीपीआर की ही होती है।

रक्षा पत्रकारिता में किन नियमों का रखें ध्यान? : अन्य पत्रकारिता क्षेत्रों के विपरीत, रक्षा पत्रकारिता में तकनीकि की जानकारी होना बहुत जरूरी है। सटीक तथ्यों पर जोर देने के साथ तकनीकि रूप से देश की सैन्य शक्ति को समझाना भी डिफेंस रिपोर्टर की परिपक्वता की निशानी होता है। डिफेंस कवरेज के लिए तकनीकि जानकारी उपयोगी तो है मगर जरूरी नहीं है। एक रक्षा पत्रकार के पास साक्षात्कार करने की अच्छी क्षमता और पारस्परिक कौशल भी जरूर होना चाहिए तभी आप अपने सोर्स के माध्यम से न्यूज की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। रक्षा और सीमा सुरक्षा का ज्ञान भी बेहद मददगार साबित होता है रिपोर्टिंग के दौरान सबसे अधिक महत्वपूर्ण है आपके विश्लेषण करने की क्षमता। छोटी से छोटी जानकारी को आप कितना न्यूजवर्दी बना पाते है ये बहुत महत्वपूर्ण होता है। ■

ISSN No. 2581-3528

ग्वालियर दुर्ग का समृद्ध चौथा द्वार घर-घर द्वार

ऐतिहासिक धरोहरों की श्रंखला

संदीप कुमार श्रीवास्तव
धरोहर छायाकार

शिल्प, सौन्दर्य एवं वैभव से पूंर्ण ग्वालियर का ऐतिहासिक किला इतिहास, संस्कृति एवं कलात्मक वैभव की दृष्टि से अक्षुण्ण है। ग्वालियर दुर्ग भारतीय और मध्यकालीन हिंदू वास्तुकला की स्वर्णिम धरोहर है। जहां अदृश्य अज्ञात प्रवेश द्वारों के अनसुलझे रहस्यों में चौथे द्वार ''घर–घर द्वार'' के साक्ष्य, पांचवें द्वार की प्रामाणिक छायांकन और दुर्लभ मूर्तिया अनगिनत रहस्यों को उद्घाटित करते है।

गौरवशाली राजवंशों के अनूठे इतिहास संस्मरणों को समेटे हुए ग्वालियर किले को 'जिब्राल्टर' अर्थात भारत के 'दुर्गों का मोती' कहा जाता है। विश्व विरासत शहर में शामिल ग्वालियर दुर्ग हिन्दू स्थापत्य कला का अद्वितीय व अनुपम उदाहरण है, जो वास्तुकला अलंकरण, भित्तिचित्रों, चटकदार रंगों, झरोखों व भूल भुलैया गलियारों के सौन्दर्य मोहपास में बंधे पर्यटको को अपने ओर आकर्षित करता है।

प्राचीन काल से ही ग्वालियर, गोपाचल, गोपागिरि, या गोत्वागिरि के नाम से प्रसिद्ध रहा है वर्तमान ग्वालियर महाभारतकाल में 'गोपराष्ट्र' के नाम से विख्यात था, वहीं मिहिर कुल हूण के राज्य के पन्दहवें वर्ष (सन् 530 ई.) में मातृचेट के शिलालेख में इस क्षेत्र को 'गोपभूधर' कहा गया। राजा मानसिंह तोमर ने विक्रम सम्वत् 1552 के शिलालेख में ग्वालियर का उल्लेख ''गोवर्धन'' के नाम से किया गया। वहीं मानसिंह तोमर के समकालीन मानिक कवि की बेताल पच्चीसी में सन् 1489 ई. में सबसे पहले ग्वालियर नाम का प्रयोग मिलता है। सिन्धिया राजवंश स्थापित होने के बाद ग्वालियर को 'ग्वाल्हेर' के नाम से भी जाना जाने लगा।

किसी भी दुर्ग के सैन्य संचालन हेतु उसके प्रवेश द्वार अत्यन्त महत्वपूर्ण होते हैं। समृद्ध व अपराजेय ग्वालियर दुर्ग के अनसुलझे रहस्यों में चौथा द्वार भी है, जिसे सुनकर भले ही आश्चर्य होगा, लेकिन इस द्वार का साक्ष्य व उल्लेख ब्रिटिश लेखक जे.डब्ल्यू.डी. जॉन स्टोन लिखित पुस्तक ''ग्वालियर 1905'' में उपलब्ध ऐतिहासिक नक्शे में दर्ज है, जिसका प्रकाशन जौन एण्ड एडवर्ड बम्बस लिमिटेड ऑक्सफोर्ड स्ट्रीट लन्दन में किया गया। जिसमें उपलब्ध ओल्ड ग्वालियर फोर्ट के नक्शे पर ''घर–घर डोर क्लोज्ड'' लिखा है। हाल ही में ग्वालियर के खोजी वृत्त श्री मुकुन्दराव शिन्दे के मार्गदर्शन में छायाकार संदीप कुमार श्रीवास्तव ने ग्वालियर दुर्ग के अज्ञात ऐतिहासिक चौथे द्वार, पांचवे द्वार व दुर्लभ मूर्तिशिल्पों को सप्रमाणिक छायांकन करके ''विस्मृत धरोहर''छायाचित्रों की प्रदर्शनी से कला प्रेमियों, इतिहासविदों, पुरातत्वविदों को इस नये अनछुये तथ्य का दर्शन कराने का प्रयास किया।

ज्ञातत्व है कि सैंकड़ों सालों के इतिहास का गवाह ग्वालियर दुर्ग का किला 98 मीटर ऊँची दुर्गम पहाड़ी पर बना हुआ है, किले तक पहुंचने के तीन रास्ते हैं। पहला पूर्व की ओर आलमगीरी (ग्वालियर गेट) द्वार से होकर हथियापौर द्वार होते हुये मान मन्दिर की ओर प्रवेश होता है, दूसरा प्रवेश द्वार पश्चिम में उरूवाही द्वार की घाटी व तलहटी से होते हुये ऊपर जाता है, जबकि तीसरा रास्ता कोटेश्वर मन्दिर के सामने से ढोंढापौर द्वार से किले में प्रवेश करते हैं। जो ऊपर कर्ण मन्दिर के पश्चिम में स्थित है, वर्तमान में यह रास्ता बन्द कर दिया गया है।

बताते चलें सैंकड़ों वर्ष पूर्व बन्द ''घर–घर गेट (द्वार)'' के मुख्य द्वार एवं मीनार पर अलंकृत ब्लू. (नीला) एवं यलो (पीला) टाइल्स मान मन्दिर के गहरे नीलेध्धीले रंग तोमर कालीन समृद्ध कला से हू–ब–हू मेल खाते हैं जो सौन्दर्यात्मक प्रेक्षकों को आकर्षित करता है। ग्वालियर दुर्ग के चौथे द्वार ''घर–घर गेट'' के प्रांगढ़ में सैन्य दृष्टि से बड़े–बड़े बुर्जों पर चौकसी क्षेत्र व गनिंग प्वाइंट सुरक्षा का सूचक है, पास में ही दुर्लभ मूर्ति शिल्प श्री गणेश, महिंषासुर मर्दिनी एवं स्तनपान कराती मातृदेवी सुशोभित है, आश्चर्य का विषय है कि दुर्लभ उत्कीर्ण मूर्तिशिल्प में शुभ के अधिष्ठाता श्री गणेश के साथ श्री लक्ष्मी या सरस्वती विराजित नहीं हैं, जबकि महिंषासुर मर्दिनी देवी दुर्गा संहारक के रूप में एवं मातृत्व देवी उत्कीर्ण हैं, जो इतिहास की दृष्टि से दुर्लभ अलंकरण हैं। प्रांगण में ही विशालकाय बावड़ी है, जहां जलधारा के साक्ष्य आज भी उपलब्ध हैं, बावड़ी के विशालकाय खम्भों की मोटाई इतनी है कि चार लोग मिलकर इसे पकड़ें तो भी शायद इसे नापना मुश्किल सा होगा। घर–घर द्वार का मुख्य परकोटा बन्द कर दिया गया, जहां चुनाई व पत्थरों की भराई स्पष्ट दिखाई देती है, साथ ही दुर्ग की तलहटी में ही तीसरे द्वार ढोंढापौर के पास में एक पांचवे द्वार का साक्ष्य एकत्र किया है, जो आपातकाल की स्थिति में उपयोगी रहा होगा घर–घर द्वार व ढोंढापौर द्वार के शिल्प, अलंकरण, टूटी दीवार, बिखरे खण्डहर व किले की हद का सूचक पत्थर, दुर्लभ मूर्तिशिल्प, व मुगडिया आज भी अपनी समृद्धता व वैभव को बयां करती हैं ग्वालियर दुर्ग के समृद्ध वैभव का दर्शन करते हुये राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय के पूर्व कुल सचिव डॉ. डीएस चन्देल कहते हैं कि ग्वालियर अंचल की पुरासंपदा को सहेजने की आवश्यकता है। ताकि भविष्य की भावी पीढ़ी हमारी ऐतिहासिक धरोहरों से रूबरू हो सके। माधव महाविद्यालय के इतिहासविद् सहायक प्राध्यापक डॉ. मनोज अवस्थी कहते हैं कि छायाकार संदीप ने ग्वालियर की एक अज्ञात अनछुये रहस्य से पर्दा उठाने का साहसिक कार्य किया है, इस महत्वपूर्ण द्वार को संरक्षित करने हेतु सभी को आगे आना होगा। दुर्ग के खण्डहर में तब्दील होती विभीषिका का दंश है, तो कहीं खण्डहरों में सौन्दर्य तलाश कर शोध के लिये एक उम्मीद की किरण अन्तर्मन को चैतन्य करने की कोशिश करती है।

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि गालव ऋषि की यह तपोभूमि विराट पुरातात्विक, कलात्मक एवं सांस्कृतिक सम्पदा संजोये, अनोखे दुर्ग से शोभित संगीत सम्राट तानसेन के शारस्वत संगीत से गुंजित और महाराजा मानसिंह एवं मृगनयनी के अमर प्रेम की कथाभूमि रही है, जहां इतिहास के गर्त में असंख्य पुरातात्विक रहस्य छिपे हैं। ■

ISSN No. 2581-3528

केशव संवाद अक्टूबर अंक की समीक्षा

डॉ. प्रियंका सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र
शम्भू दयाल पीजी कॉलेज, गाजियाबाद

केशव संवाद का अक्टूबर अंक आत्मनिर्भर उत्तर प्रदेश विशेषांक में उत्तर प्रदेश के बदलते परिदृश्य एवं नए भारत का नया उत्तर प्रदेश के विभिन्न पहलुओं को समायोजित करता हुआ अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण अंक है। यह अंक आत्मनिर्भर व स्वावलंबन के सपने को साकार कर उत्तर प्रदेश की धरातलीय सच्चाई को सुधि पाठकों के समक्ष बहुत ही जिम्मेदारी के साथ प्रस्तुत किया है।

आर्थिक समृद्धि के लिए मील का पत्थर जेवर एयरपोर्ट विषय पर डॉक्टर अनिल निगम जी लिखते हैं कि अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट के बनने से गौतमबुध नगर जिले का ही नहीं संपूर्ण उत्तर प्रदेश की पूरी तस्वीर ही बदल जाएगी। क्योंकि एयरपोर्ट और फिल्म सिटी से आकर्षित होकर कई उद्योग स्थापित होंगे जिससे उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था के साथ–साथ देश की अर्थव्यवस्था भी सुदृढ़ होगी। ऐतिहासिक धरोहरों को सहेजता उत्तर प्रदेश विषय पर प्रो. आराधना जी लिखती हैं कि उत्तर प्रदेश में बौद्ध, जैन क्लामचेक व सनातन धर्म के अनुयाई एक साथ रहे और एक दूसरे के सामाजिक सांस्कृतिक आर्थिक व धार्मिक जीवन को प्रभावित व समृद्ध करते रहे।

उत्तर प्रदेश की जनसंख्या नियंत्रण कानून शीर्षक के अंतर्गत डॉ. प्रदीप कुमार जी ने जनसंख्या नीति को स्पष्ट करते हुए समय–समय पर सरकार द्वारा इस दिशा में उठाए गए कदम, योजनाओं और कानून के विषय में भी विस्तारपूर्वक स्पष्टीकरण दिया है। प्रोफेसर डॉ. हरेंद्र सिंह जी ने उत्तर प्रदेश में राम गमन पथ और आर्थिक विकास की संभावनाएं विषय के अंतर्गत मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम और संपूर्ण भारतीय परिवार का प्रतिनिधित्व करते उनके परिवार के विषय में जानकारी देते हुए राम गमन पथ को भी विस्तारपूर्वक व्यक्त किया है। साथ ही पर्यटन की दृष्टि से आर्थिक संभावना को भी दृष्टिगोचर किया है। एक जिला एक उत्पाद में अनुपमा अग्रवाल जी ने बताया कि कैसे 'ओडीओपी' ने उत्तर प्रदेश को विश्व पटल पर विशिष्ट पहचान दिलाई। साथ ही सरकारी वित्तीय सहायता ने लघु एवं कुटीर उद्योगों को एक बार पुनः जीवन दान देने का कार्य भी किया है।

'इथेनॉल उद्योग एवं आत्मनिर्भर उत्तर प्रदेश' विषय पर डॉ अखिलेश मिश्र जी ने बताया कि किस प्रकार उत्तर प्रदेश अपनी भौगोलिक संरचना एवं सांस्कृतिक धरोहरों के कारण विदेशी आक्रांताओं के आक्रमण को झेलते हुए भी अपने पैरों पर खड़े रहने के साथ देश की प्रगति एवं संवृद्धि में योगदान देता रहा है। इथेनॉल के विषय में विस्तार पूर्वक जानकारी के लिए लेख अवश्य पढ़ें।'मुजफ्फरनगर में गुड़ उद्योग सीमित संसाधन और सीमित अवसर' शीर्षक के तहत मुजफ्फरनगर जिले के जिलाधिकारी चंद्र भूषण सिंह जी लिखते हैं कि, 'वर्तमान में प्रत्येक व्यक्ति अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक होने के कारण चीनी की बजाय हाइजीनिक गुड़ प्रयोग कर रहा है। जिससे बाजार में गुड़ की मांग निरंतर बढ़ रही है फलस्वरूप ग्रामीण भारत की अर्थव्यवस्था के सपनों को साकार किया जा रहा है।'

संकल्प से सिद्धी करता उत्तर प्रदेश में डॉ. उर्विजा शर्मा जी ने बताया कि दूसरों पर दोषारोपण एवं छिद्रान्वेषण करने से श्रेष्ठ है कि स्वयं आत्म–मंथन कर आत्म सुधार करें तभी हमारे संकल्पों से न केवल प्रदेश वरन् देश भी सिद्धि प्राप्त कर आत्मनिर्भर बन सकेगा। डॉ. प्रियंका सिंह जी ने सांस्कृतिक अर्थशास्त्र के पटल पर अयोध्या विषय में सांस्कृतिक नगरी अयोध्या को पर्यटन के दृष्टिकोण से अति महत्वपूर्ण मानते हुए भविष्य में रोजगारपरक भी माना है। आत्मनिर्भर उत्तर प्रदेश में युवाओं का योगदान विषय पर डॉ. राहुल त्यागी जी ने मिशन युवा शक्ति, थिंक ग्लोबल एक्ट लोकल, डिफेंस कॉरिडोर, बौद्धिक संपदा अधिकार इत्यादि विषयों पर प्रमुखता से प्रकाश डाला है। उत्तर प्रदेश में श्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में आगे बढ़ती स्त्रियां शीर्षक द्वारा डॉ अंशु जोशी जी ने आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना में महिलाओं की महती भूमिका के साथ स्त्रियों की सुरक्षा, स्वावलंबन तथा सशक्त बनाने वाली योगी आदित्यनाथ जी के नेतृत्व में संचालित 'मिशन शक्ति' के विषय में भी जानकारी दी है। डॉ नीलम कुमारी जी ने उत्तम प्रदेश बनता उत्तर प्रदेश में सशक्त मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी के अन्य कार्यों की विवेचना करते हुए बताया है कि प्रदेश सरकार का सुरक्षा व सुशासन का मॉडल दुनिया भर में सराहा जा रहा है। आत्मनिर्भरता को पंख लगाता विदेशी निवेश के अंतर्गत नेहा कक्कड़ जी ने भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए मोदी सरकार द्वारा सशक्त भारत की अवधारणा के तहत विदेशी कंपनियों के भारत आने के मार्ग और आत्मनिर्भर उत्तर प्रदेश रोजगार अभियान को रोचकता से व्यक्त किया है। आत्मनिर्भर उत्तर प्रदेश और किसान के तहत डॉ यशवीर सिंह जी ने उत्तर प्रदेश के सशक्त किसानों की अनेक समस्याओं के साथ महती भूमिका को भी विस्तारपूर्वक वर्णित किया है। अनीता चौधरी जी ने प्रशासनिक व्यवस्था और अपराध नियंत्रण में मील का पत्थर बना उत्तर प्रदेश शीर्षक में प्रदेश में अपराध के तुलनात्मक आंकड़ों को प्रदर्शित करने के साथ ही बताया कि योगी सरकार की नीतियों के कारण प्रदेश अपराध और अपराधी मुक्त राह पर अग्रसर है। डॉ शशि शर्मा जी ने चुनौतियों को अवसर में बदलता उत्तर प्रदेश के अंतर्गत प्रदेश को भारत का हृदय स्थल कहा है साथ ही मुसीबतों को निरंतर निपटाते हुए चहुं मुखी उन्नति की ओर भी ध्यान आकर्षित किया है। अंत में मुक्ता शर्मा जी की मौलिक रचना 'बन रहा है और संवर रहा है। प्रतिदिन अब निखर रहा है। मेरा प्रदेश उत्तर प्रदेश उत्तम प्रदेश।' ने संपूर्ण पत्रिका के इस विशेष संकलन को सार्थक और संपूर्ण कर दिया।

केशव संवाद पत्रिका के इस विशेषांक का विमोचन भाऊराव देवरस सरस्वती विद्या मन्दिर नोएडा में किया गया। विमोचन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. भगवती प्रकाश शर्मा, कुलपति गौतमबुद्ध विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा और मुख्य वक्ता के रूप में उत्तर प्रदेश सरकार के जल शक्ति मंत्री डॉ महेन्द्र सिंह जी सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। इस दौरान अतिथियों द्वारा पत्रिका के सम्पादक मंडल का सम्मान भी किया गया। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए उत्तर प्रदेश सरकार के जल शक्ति मंत्री डॉ. महेन्द्र सिंह ने कहा कि द्वापर में एक केशव हुए और एक कल युग में, आज हम केशव संवाद पत्रिका के विशेषांक आत्मनिर्भर उत्तर प्रदेश का विमोचन कर रहे है। इसके नाम में भी केशव है। यह एक अतुलनीय संयोग ही तो है की द्वापर में केशव जब धरती पर आए तो उन्होंने उत्तर प्रदेश को ही चुना। जिस प्रदेश में इतने केशव हो तो वह प्रदेश आत्मनिर्भर कैसे नहीं होगा। ■

ISSN No. 2581-3528

मीडिया सुर्खियां

20 सितम्बर : उत्तर प्रदेश के वाराणसी में खुले दुनिया के पहले 'स्कूल ऑफ राम' में अक्टूबर से ऑनलाइन पढ़ाई शुरू होगी। एक महीने का 'रामचरित मानस : ओसियन ऑफ साइंस' सर्टिफिकेट कोर्स शुरू किया जाएगा। इस कोर्स के जरिए छात्र भगवान श्रीराम और तुलसीदास के जीवन दर्शन का अध्ययन करेंगे। इसके साथ ही रामचरित मानस की घटनाओं में विज्ञान की मौजूदगी और नीति शास्त्र के अलावा निर्जीव विज्ञान, सजीव विज्ञान और सामाजिक विज्ञान के बारे में भी छात्रों को जानकारी दी जाएगी।

21 सितम्बर : भारत सरकार ने एयर मार्शल वीआर चौधरी जो कि वर्तमान में वाइस चीफ ऑफ एयर स्टाफ है, उन्हें अगला वायुसेनाध्यक्ष के रूप में नियुक्त करने का निर्णय लिया है। वर्तमान वायु सेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल आरकेएस भदौरिया 30 सितंबर 2021 को सेवा से सेवानिवृत्त हो रहे हैं।

22 सितम्बर : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अमेरिका में ग्लोबल कोविड–19 समिट में शिरकत करते हुए कोरोना को लेकर विचार रखे हैं, समिट को संबोधित करते हुए मोदी ने कहा, हमें महामारी के आर्थिक प्रभावों को दूर करने पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है। इसके लिए, वैक्सीन प्रमाणपत्रों की पारस्परिक मान्यता के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय यात्रा को आसान बनाया जाना चाहिए।

23 सितम्बर : विश्व स्वास्थ्य संगठन ने एक रिपोर्ट में जिक्र किया है कि वायु प्रदूषण की वजह से हर वर्ष वैश्विक स्तर पर करीब 70 लाख लोगों की मौत हो रही है और इसे रोकने के लिए और सख्त गाइडलाइंस ना सिर्फ बनाने की जरूरत है बल्कि उसे अमल में भी लाया जाना चाहिए। इसके लिए खास तौर पर हमें ऐसे उद्योगों को विकसित करने की आवश्यकता है जो प्रदूषण के लिए जिम्मेदार कणों के उत्सर्जन पर रोक लगा सकें।

25 सितम्बर : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने न्यूयार्क में संयुक्त राष्ट्र महासभा के 76वें सत्र को संबोधित किया। भारत इस बार संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की अध्यक्षता कर रहा है। इस दौरान उन्होंने कई अहम मुद्दे उठाए।

26 सितम्बर : सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस एनवी रमना ने न्यायपालिका में महिलाओं के लिए 50 फीसदी आरक्षण की पैरवी की है। उनका कहना है कि यह महिलाओं का हक है, जो उन्हें मिलना चाहिए।

27 सितम्बर : मिसाइल टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में भारत को एक और अहम कामयाबी हासिल हुई हैं। रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन ने ओडिशा के चांदीपुर रेंज से आकाश मिसाइल के अपडेटेड वर्जन 'आकाश प्राइम' का सफल परीक्षण किया है।

28 सितम्बर : अलीगढ़ के एक मदरसे में तीन से चार बच्चों को जंजीर में बांधकर रखने का मामला सामने आया है। वीडियो सामने आने के बाद पुलिस ने सभी बच्चों को छुड़ा लिया है।

29 सितम्बर : अफगानिस्तान की सत्ता में बीते 15 अगस्त को काबिज होने के बाद तालिबान ने पहला औपचारिक पत्र भारत को भेजा है, जिसमें उसने काबुल तक फ्लाइट ऑपरेशंस शुरू किए जाने की अपील नागरिक उड्डयन महानिदेशालय से की है। फिलहाल नागरिक उड्डयन मंत्रालय इसकी समीक्षा कर रहा है। भारत ने अफगानिस्तान पर तालिबान के कब्जे के बाद 15 अगस्त को काबुल के लिए अपनी सभी कमर्शियल फ्लाइट्स के संचालन पर रोक लगा दी थी।

30 सितम्बर : पाकिस्तान के पश्चिमोत्तर शहर पेशावर में अज्ञात बंदूकधारियों ने सिख हकीम सरदार सतनाम सिंह (खालसा) की गोली मारकर हत्या कर दी।

1 अक्टूबर : हैदराबाद में पिछले 15 दिनों में 5 ऐसी घटनाएं सामने आई है जिसमें हिंदू लड़कों पर हमला किया गया और उनको पीटा गया है। सवाल ये कि आखिर क्यों हैदराबाद में हिंदू युवकों को निशाना बनाया जा रहा है।

♦ सुप्रीम कोर्ट ने किसान महापंचायत की ओर से जंतर–मंतर पर सत्याग्रह की अनुमति की मांग को लेकर दायर याचिका पर तल्ख टिप्पणी करते हुए कहा, श्आप पहले ही शहर का गला घोंट चुके हैं और अब आप शहर में प्रवेश करना करना चाहते हैं? सुप्रीम कोर्ट ने तल्ख लहजे में कहा, श्आपके अधिकार हो सकते हैं, लेकिन अधिकार आम नागरिकों के भी हैं। आप लोगों की सुरक्षा को भी बाधित कर रहे हैं।

02 अक्टूबर : चीन के साथ सीमा पर तनाव के बीच भारतीय सेना ने लद्दाख सेक्टर में वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC) पर K9 वज्र स्वचालित हॉवित्जर रेजिमेंट को तैनात किया है। यह तोप लगभग 50 किमी की दूरी पर दुश्मन के ठिकानों पर हमला कर सकती है। इस पर सेना प्रमुख जनरल मनोज मुकुंद नरवणे ने कहा कि ये तोपें ऊंचाई वाले इलाकों में भी काम कर सकती हैं, फील्ड ट्रायल बेहद सफल रहे। हमने अब एक पूरी रेजिमेंट जोड़ ली है, यह वास्तव में मददगार होगी।

3 अक्टूबर : मुंबई में समुद्र में हो रही क्रूज रेव पार्टी के मामले में एनसीबी 8 लोगों से पूछताछ कर रही है। इसमें शाहरुख खान के बेटे आर्यन खान भी हैं। समंदर के बीच क्रूज पर पार्टी करने के लिए जूतों, अंडर गारमेंट्स, पर्स के हैंडल और कपड़ों के बीच में छिपाकर ड्रग्स ले जाई गई थी।

4 अक्टूबर : राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के खिलाफ टिप्पणी को लेकर मुंबई पुलिस ने गीतकार जावेद अख्तर के खिलाफ एफआईआर दर्ज की है उन्होंने कथित तौर पर आरएसएस और तालिबान को एक समान बताया था। स्थानीय वकील संतोष दुबे की शिकायत पर मुलंद के थाने में यह प्राथमिकी दर्ज की गई है।

5 अक्टूबर : श्रीनगर में आतंकवादियों ने इकबाल पार्क क्षेत्र में श्रीनगर की प्रसिद्ध फार्मेसी के मालिक माखनलाल बिंदरू की उनके व्यवसायकि परिसर में गोली मारकर हत्या कर दी। कश्मीरी पंडित

ISSN No. 2581-3528

समुदाय से बिंदरू उन कुछ लोगों में शामिल थे जिन्होंने 1990 के दशक में जम्मू कश्मीर में आतंकवाद शुरू होने के बाद पलायन नहीं किया। वह अपनी पत्नी के साथ यहीं रहे और लगातार अपनी फार्मेसी 'बिंदरू मेडिकेट' को चलाते रहे।

6 अक्टूबर : छत्तीसगढ़ में भगवान श्रीराम के वनवास काल से जुड़े स्थलों को विश्व स्तरीय पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने के लिए प्रारंभ की गई राम वन गमन पर्यटन परिपथ में पग–पग पर भगवान श्रीराम के दर्शन होंगे। छत्तीसगढ़ भगवान श्रीराम के ननिहाल के रूप में सम्पूर्ण विश्व में अपनी अलग पहचान रखता है, वनवास काल का ज्यादा समय भगवान श्रीराम ने यहां व्यतीत किया था, यहां के ऋषि आश्रम, प्रकृति के मध्य वनवास काटा, इसलिए यहां की जनश्रुतियों, लोककथाओं, आम जनजीवन में भगवान श्रीराम रचे–बसे हैं।

7 अक्टूबर : पहले गुजरात के मुख्यमंत्री और फिर देश के प्रधानमंत्री पद पर रहते हुए नरेंद्र मोदी बीते 20 वर्षों से सरकार में हैं। उन्होंने आज ही के दिन 2001 में गुजरात के मुख्यमंत्री पद की शपथ ली थी और फिर प्रधानमंत्री बनने से पहले लगातार 13 वर्षों तक इस पद पर रहे।

8 अक्टूबर : श्रीनगर के एक स्कूल में एक महिला प्रिंसिपल और एक शिक्षक की हत्या के खिलाफ लोगों में काफी नाराजगी देखी जा रही है। इन हत्याओं के खिलाफ जम्मू से श्रीनगर तक सिख समुदाय के लोगों सड़कों पर निकले और पाकिस्तान के खिलाफ अपनी आक्रोश जाहिर किया।

9 अक्टूबर : पूर्वी लद्दाख में वास्तविक नियंत्रण रेखा पर तनाव को लेकर भारत और चीन के बीच एक बार फिर बातचीत होगी। 13वें दौर की इस वार्ता में समाधान को लेकर जरूरी कदमों पर चर्चा होगी।

10 अक्टूबर : एनआईए ने जम्मू कश्मीर में प्रॉपगैंडा मैगजीन 'वॉयस ऑफ हिंद' को लेकर 16 स्थानों पर छापेमारी की है। यह छापेमारी भारत के खिलाफ जेहाद छेड़ने के लिए युवाओं को भड़काने की आईएसआईएस की साजिश से जुड़े मामले में की गई है।

♦ गाय संरक्षण की मांग को हिंदू समुदाय के मौलिक अधिकारों का हिस्सा बनाने की मांग के बाद इलाहाबाद हाई कोर्ट ने कहा कि संसद को भगवान राम, भगवान कृष्ण, रामायण और इसके रचयिता वाल्मीकि के अलावा गीता और इसके रचयिता महर्षि वेद व्यास को 'राष्ट्रीय सम्मान' देने के लिए कानून लाना चाहिए। हाई कोर्ट के जस्टिस शेखर कुमार यादव ने यह टिप्पणी एक मामले की सुनवाई के दौरान की। उन्होंने कहा कि संविधान किसी को नास्तिक होने की अनुमति देता है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि कोई देवी–देवताओं के खिलाफ अश्लील टिप्पणी कर सकता है।

11 अक्टूबर : कश्मीर में आतंकियों द्वारा अल्पसंख्यकों को निशाना बनाया गया है। इसी को देखते हुए कश्मीर में अल्पसंख्यकों के लिए हेल्पलाइन नंबर जारी किया गया है। कश्मीर के आईजीपी विजय कुमार ने बताया कि कश्मीर पुलिस ने अल्पसंख्यक संकट हेल्पलाइन– 0194–2440283 स्थापित की है। उन्होंने कहा कि इमरजेंसी में कोई भी 0194–2440283 पर सहायता के लिए कॉल कर सकता है।

12 अक्टूबर : सेंट्रल ड्रग स्टैण्डर्ड कंट्रोल ऑर्गनाइजेशन की सब्जेक्ट एक्सपर्ट कमिटी ने भारत बायोटेक की कोवैक्सीन को 2 से 18 साल के बच्चों को देने की सिफारिश की है, कमेटी ने कंपनी द्वारा 2 से 18 साल तक के बच्चों पर हुए क्लीनिकल ट्रायल की रिपोर्ट के आधार पर अपनी सिफारिश की है, मंजूरी मिलने के बाद यह जायडस कैडिला के सूई रहित जायकोव–डी के बाद दूसरा टीका होगा जिसे 18 साल से कम उम्र के लोगों को देने के लिये आपातकालीन इस्तेमाल की मंजूरी मिलेगी।

13 अक्टूबर : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने प्रगति मैदान में 'गतिशक्ति–राष्ट्रीय मास्टर प्लान' की शुरुआत की। इस योजना के तहत सरकार के 16 मंत्रालय एक पोर्टल से जुड़ेंगे। इससे सभी मंत्रालय एक–दूसरे के काम पर नजर रख सकेंगे। इस योजना से बुनियादी संरचना विकास से जुड़े कार्यक्रमों में तेजी आएगी। स्वतंत्रता दिवस के मौके पर लाल किले की प्राचीर से पीएम मोदी ने इस योजना की घोषणा की थी।

14 अक्टूबर : भारत को संयुक्त राष्ट्र के सदस्य राज्यों द्वारा मानवाधिकार परिषद के रिकॉर्ड छठे कार्यकाल के लिए चुना गया है। संयुक्त राष्ट्र, जिनेवा में भारत ने उपलब्धि की घोषणा की और कहा, 'हम वैश्विक प्रचार और मानवाधिकारों के संरक्षण के लक्ष्य की दिशा में परिषद के साथी सदस्यों के साथ मिलकर काम करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।'

15 अक्टूबर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने अंडमान–निकोबार में सेल्युलर जेल का दौरा किया और उस सेल में भी गए जहां विनायक दामोदर सावरकर को अंग्रेजों के समय उन्हें कैदी बनाकर रखा गया था।

16 अक्टूबर विश्व खाद्य दिवस संयुक्त राष्ट्र संघ की 1945 में खाद्य एवं कृषि संगठन के स्थापना दिवस 16 अक्टूबर के सम्मान में विश्वभर में प्रतिवर्ष मनाया जाता है।

18 अक्टूबर : ढाका में दुर्गापूजा त्योहार के दौरान पिछले सप्ताह मंदिर में तोड़फोड़ के विरोध में अल्पसंख्यक समुदाय के प्रदर्शन के बीच बांग्लादेश में हमलावरों के एक समूह ने हिंदुओं के 66 घरों को क्षतिग्रस्त कर दिया और करीब 20 घरों में आग लगा दी। 1974 में पहली जनगणना के समय बांग्लादेश में हिंदू आबादी 13.5 प्रतिशत थी, लेकिन 2011 में 8.5 प्रतिशत रह गई।

19 अक्टूबर : गुलशन कुमार द्वारा स्थापित कंपनी टी–सीरीज ने अपने नाम एक और नया रिकॉर्ड स्थापित किया है। टी–सीरीज के यूट्यूब चैनल पर 'हनुमान चालीसा' वीडियो को करीब 2 बिलियन (200 करोड़) व्यूज मिल चुके हैं। भारत में 2 बिलियन व्यूज पाने वाला यह एकमात्र वीडियो है।

20 अक्टूबर : अयोध्या में भव्य दीपोत्सव में रामजन्मभूमि परिसर 30 हजार दीयों से आलोकित होगा। रामजन्मभूमि परिसर के साथ ही 38 प्रमुख मंदिरों में करीब डेढ़ लाख दीपक जलाए जाएंगे। भगवान राम के अनुज भरत की तपस्थली भरतकुंड को भी 20 हजार दीपों से रोशन किया जाएगा।

21 अक्टूबर : कोरोना के खिलाफ जंग में भारत ने नया मुकाम हासिल किया है। आज देश ने 100 करोड़ वैक्सीन के आंकडे को पार लिया।

(संयोजन : प्रतीक खरे)

ISSN No. 2581-3528

प्रेरणा दिवस : नवम्बर माह

01 नवम्बर- स्वतंत्रता सेनानी तारकनाथ दास द्वारा सैन फ्रांसिस्को में गदर आंदोलन की शुरुआत। **जन्मतिथिः** पद्म भूषण रामकिंकर उपाध्याय,रामचरितमानसपर 49 वर्ष तक लगातार प्रवचन।

इतिहास 1 नवम्बर, 1984 में इंदिरा गांधी की हत्या के बाद देश भर में सिख विरोधी दंगा हुआ, इसमें हजारों सिखों को निर्ममता से मौत के घाट उतार दिया गया।

02 नवम्बर- जन्मतिथिः भारत के अंतिम हिंदू सम्राट महाराजा रणजीत सिंह।

03 नवम्बर - पुण्यतिथि : मेजर सोमनाथ शर्मा, मरणोपरांत परम वीर चक्र

04 नवम्बर - जन्मतिथिः क्रांतिकारी वासुदेव बलवंत फड़के। **जन्मतिथि :** क्रांतिकारी भाई परमानन्द

जन्मतिथि : सुदर्शन सिंह चक्र, दार्शनिक व प्रख्यात संत।

05 नवम्बर - जन्मतिथि : देशबंधु चित्तरंजन दास।

06 नवम्बर - दूसरे विश्व युद्ध के दौरान जापान ने नेताजी सुभाष चंद्र बोस को अंडमान और निकोबार द्वीप समूह सौंपे।

07 नवम्बर - वंदेमातरम की रचना। **जन्मतिथि :** विपिन चंद्र पाल। गोवंश रक्षा हेतु महान आंदोलन (दिल्ली में संसद भवन के सामने)

जन्मतिथिः नोबेल पुरस्कार विजेता डॉ. चंद्रशेखर वेंकटरामन।

08 नवम्बर - जन्मतिथिः लालकृष्ण आडवाणी।

09 नवम्बर - जन्मतिथिः इंद्र विद्यावाचस्पति, क्रांतिकारी, संपादक वीर अर्जुन। **पुण्यतिथिः** डॉ. धोंडो केशव कर्वे, महाराष्ट्र, भारत रत्न, पद्म भूषण। **जन्मतिथि :** डा. लक्ष्मीमल सिंघवी, संविधान विशेषज्ञ।

10 नवम्बर - बलिदान दिवस : अमर हुतात्मा भाई मतिदास, सतिदास एवं दयाला। **जन्मतिथि :** दत्तोपंत ठेंगडी जी

11 नवम्बर - जन्मतिथि : अनसूया साराभाई, भारत में स्त्री श्रम आंदोलन की अग्रदूत।

12 नवम्बर - पुण्यतिथिः महामना मदन मोहन मालवीय, भारत रत्न। **जन्मतिथि :** समाजसेवी क्रांतिकारी सेनापति बापट, महाराष्ट्र।

13 नवम्बर - जन्मतिथि : मुकुंद रामाराव जयकर, जलियांवाला हत्याकांड से संबंधित रिपोर्ट इतिहास में अमर है।

14 नवम्बर - जन्मतिथि : वनस्पति शास्त्री बीरबल साहनी

15 नवम्बर - जयंती : बिरसा मुंडा। **पुण्यतिथिः** महात्मा हंसराज, संस्थापक डी ए वी कालेज, आर्य समाजी, समाज सुधारक।

जन्मतिथि : कार्तिक शुक्ल एकादशी के दिन संत नामदेव की जयंती।

16 नवम्बर - पुण्यतिथि : ऊदा देवी, 1857 के 'भारतीय स्वतंत्रता संग्राम' की वीरांगना **पुण्यतिथिः** करतार सिंह सराभा, क्रांतिकारी राष्ट्रीय प्रेस दिवस। **जन्मतिथि :** पत्रकार बाबूराव विष्णु पराड़कर

17 नवम्बर - बलिदान : लाला लाजपत राय।

पुण्यतिथिः अशोक सिंघल जी, विहिप

18 नवम्बर - जन्मतिथि : बटुकेश्वर दत्त, क्रांतिकारी। जन्मतिथि : तेजस्वी कार्यकर्ता मोरु भाऊ मुंजे चुशूल में मेजर शैतान सिंह और उनके 114 साथियों का अप्रतिम बलिदान।

19 नवम्बर - जन्मतिथि : रानी लक्ष्मीबाई।

पुण्यतिथिः देवरहा बाबा, श्रीराम जन्म भूमि आंदोलन

जन्मतिथि : एकनाथ जी रानाडे, शिल्पी विवेकानंद शिला।

जन्मतिथि : भाऊराव देवरस जी, श्री गुरु नानक देव जी का प्रकाश पर्व।

21 नवम्बर - पुण्यतिथि : रामेश्वर कंवर, मध्यप्रदेश वनांचल के 'गहिरा गुरु' **22 नवम्बर - जन्मतिथि :** झलकारी बाई।

23 नवम्बर - जन्मतिथि : चमत्कारी संत सत्यसाईं बाबा, पुट्टपर्थी, आंध्रप्रदेश। **पुण्यतिथि :** प्रकाशवीर शास्त्री, आर्यसमाजी, संस्कृत हिंदी विद्वान **पुण्यतिथि :** सखाराम गणेश देउसकर

24 नवम्बर - पुण्यतिथिः केरल में धर्मरक्षक स्वामी सत्यानंद सरस्वती। **जन्मतिथि :** लाचित बरफुकन

25 नवम्बर -जन्मतिथिः पंडित राधेश्याम कथा वाचक

26 नवम्बर - राष्ट्रीय संविधान दिवस विश्व पर्यावरण संरक्षण दिवस

27 नवम्बर - पुण्यतिथि : लक्ष्मीबाई जी केलकर, संस्थापिका, राष्ट्र सेविका समिति **जन्मतिथि :** गणेश वासुदेव मावलंकर, स्वतंत्रता सेनानी, लोकसभाके प्रथम अध्यक्ष

28 नवम्बर - पुण्यतिथिः संत ज्योतिबाफुले **जन्मतिथिः** क्रांतिकारी भाई हिरदाराम, हिमाचल प्रदेश

29 नवम्बर - जन्मतिथि : ठक्कर बाप्पा, समाज सेवक, गुजरात

30 नवम्बर- जन्मतिथि : गेंदालाल दीक्षित, प्रख्यात क्रांतिकारी, संस्थापक शिवाजी समिति

(संयोजन : प्रतीक खरे)

Prabhat Products
Incredible Taste!
Saffron Blended
RATNA®
KHUSHBOO KI BAHAR
ELAICHI
SILVER COATED
SAFFRON BLENDED
CARDAMOM SEEDS
RATNA®
ELAICHI
SILVER COATED
RATNA®
KHUSHBOO KI BAHAR
ELAICHI
SILVER COATED
FLAVOURED CARDAMOM SEEDS
Prabhat Products | Consumer Care Cell : 0120-4088118 Email : info@ratnazarda.com

Industrial Training Institute

व्यावसायिक शिक्षा के बढ़ते कदम
आई.टी.आई. है जहां, रोज़गार है वहां

अर्हकारी शैक्षणिक योग्यता की मेरिट के आधार पर आई.टी.आई. में ऑनलाइन प्रवेश प्रक्रिया प्रारम्भ

प्रशिक्षण के मुख्य व्यवसाय	अवधि/अर्हता
वेल्डर, स्वीइंग टेक्नोलॉजी	एक वर्ष/8वीं उत्तीर्ण
वायरमैन, पेन्टर	दो वर्ष/8वीं उत्तीर्ण
कम्प्यूटर ऑपरेटर एंड प्रोग्रामिंग असिस्टेंट, फिजियोथेरेपी टेक्नीशियन, फायर टेक्नोलॉजी एण्ड इण्डस्ट्रियल सेफ्टी मैनेजमेंट, फूड प्रोडक्शन जनरल, ट्रेवल एण्ड टूर असिस्टेंट	एक वर्ष/10वीं उत्तीर्ण
फिटर, टर्नर, मशीनिष्ट, मशीनिष्ट ग्राइण्डर, इलेक्ट्रीशियन, इलेक्ट्रीशियन (पावर डिस्ट्रीब्यूशन), टेक्नीशियन पावर इलेक्ट्रॉनिक सिस्टम, इलेक्ट्रोप्लेटर, ड्राफ्टमैन मैकेनिकल, ड्राफ्टमैन सिविल, टेक्नीशियन मेडिकल इलेक्ट्रॉनिक्स, रेडियोलॉजी टेक्नीशियन	दो वर्ष/10वीं उत्तीर्ण

मिशन रोज़गार

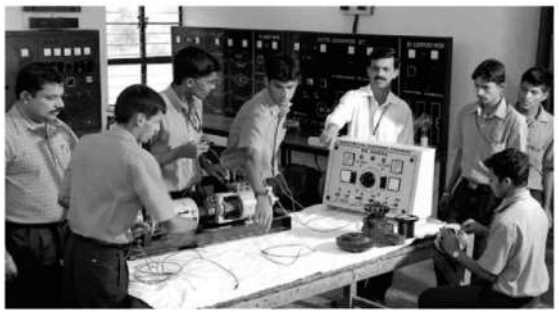

- कुल 305 राजकीय आई०टी०आई० में संचालित 70 व्यवसायों में प्रवेश हेतु 119831 सीटें उपलब्ध।
- कुल 2749 निजी आई०टी०आई० में संचालित 51 व्यवसायों में प्रवेश हेतु 374716 सीटें उपलब्ध।
- महिलाओं के प्रशिक्षण हेतु 12 विशिष्ट राजकीय संस्थान के अतिरिक्त 47 महिला शाखाएं स्थापित।
- प्रदेश में अल्पसंख्यक बाहुल्य क्षेत्रों में 43 राजकीय आई०टी०आई० स्थापित।
- आई०टी०आई० से उत्तीर्ण प्रमाण पत्र धारक, उत्तर प्रदेश के पॉलिटेक्निक में प्रवेश हेतु अर्ह होने पर डिप्लोमा के पाठ्यक्रम के द्वितीय वर्ष में सीधे प्रवेश।
- अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति वर्ग के अभ्यर्थियों के लिए निःशुल्क प्रशिक्षण सुविधा उपलब्ध।

आई०टी०आई० से प्रशिक्षण के लाभ

- राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान में ड्यूअल सिस्टम प्रशिक्षण योजना (14356 सीटें) तथा OJT (ऑन द जॉब ट्रेनिंग) योजना के अंतर्गत उद्योगों में प्रशिक्षण उपलब्ध।
- अप्रेंटिसशिप प्रशिक्षण से कौशल और व्यावसायिकता को बेहतर बनाने के अवसर।
- छात्रवृत्ति-शुल्क प्रतिपूर्ति की व्यवस्था।
- स्वरोजगार हेतु सरकार द्वारा मुद्रा लोन योजनान्तर्गत बिना गारंटी के ऋण उपलब्ध।
- आई०टी०आई० प्रशिक्षित युवक-युवतियों हेतु सरकारी विभागों तथा अर्द्ध सरकारी/निगम/परिषद व निजी प्रतिष्ठानों में रोजगार के पर्याप्त अवसर सुलभ।

प्रवेश प्रक्रिया से सम्बन्धित विस्तृत विवरण www.scvtup.in पर उपलब्ध है।

हेल्पडेस्क : 0522-4047658, 4150500
9628372929, 7897992063

वेबसाइट : www.scvtup.in | ई-मेल : help@admissionscvtup.in
@scvtup | @scvtup | @scvtup | State Council for Vocational Training

व्यावसायिक शिक्षा एवं कौशल विकास विभाग, उत्तर प्रदेश

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

जल जीवन मिशन (हर घर जल)

एफ0टी0के0/एच0टू0एस0 वाइल्स का उपयोग करते हुये समस्त जनपदों के ग्राम पंचायतों में स्थित पेयजल स्रोत की जल गुणवत्ता जॉच एवं निगरानी

- एफ0टी0के0 एवं एच0टू0एस0 वाइल्स द्वारा 11 पैरामीटर का परीक्षण किया जा सकेगा– पी0एच0, टरबीडिटी, नाईट्रेट, फ्लोराइड, आइरन, रेसिडुअल क्लोरिन, हार्डनेश, क्लोराइड, एलक्नाइटी एवं आर्सनिक एवं बेक्ट्रोलोजिकल।
- यूट्यूब चैनल– https://www.youtube.com/channel/UCT-5OpWaUhITWkpiBIhSI9w/ videos एवं यूट्यूब पर FTK TUTORIAL SWSMP UP के नाम से एफ0टी0के0 उपयोग विधि दी गयी है।
- एफ0टी0के0 किट के अन्तर्गत मौजूद निर्देश पुस्तिका में क्यू0आर0 कोड उपलब्ध है, जिससे किसी भी एन्ड्राव्यड फोन से स्कैन कर एफ0टी0के टुटोरियल यूट्यूब चैनल को देखा जा सकता है।
- एफ0टी0के0 के माध्यम से शुद्ध पेयजल के महत्व को बताना एवं सार्वजनिक रूप से ग्रामीण स्तर की समस्त पेयजल स्रोतों की स्वय शुद्धता को सुनिश्चित करना।

हर घर नल से शुद्ध पेयजल लाना है, जीवन को खुशहाल बनाना है।

हर घर जल
जल जीवन मिशन

राज्य पेयजल एवं स्वच्छता मिशन

(नमामि गंगे तथा ग्रामीण जलापूर्ति विभाग)

उ0प्र0 जल निगम कम्पाउण्ड, 6, राणा प्रताप मार्ग, लखनऊ–22600

हर घर जल
जल जीवन मिशन

जल जीवन मिशन (हर घर जल)

Har Ghar Jal
Jal Jeevan Mission

2024 तक प्रदेश के हर घर को नल संयोजन देते हुये नियमित रुप से पर्याप्त मात्रा में निर्धारित गुणवत्ता वाला पेयजल उपलब्ध कराया जाना है।

हर घर नल, नल से जल

जल जीवन मिशन के उद्देश्य:-

- प्रत्येक ग्रामीण परिवार को नल कनेक्शन उपलब्ध कराना।
- स्कूलों, आंगनबाड़ी केन्द्रों, ग्राम पंचायत भवनों, स्वास्थ्य केन्द्रों तथा सामुदायिक भवनों को नल संयोजन उपलब्ध कराना।
- स्थानीय समुदाय में पाइप पेयजल योजना के प्रति स्वामित्व की भावना उत्पन्न करना।
- योजना का सफल अनुरक्षण एवं संचालन सुनिश्चित करना।
- विभिन्न हितधारकों को इस प्रकार भागीदार बनाना कि जल हर किसी का सरोकार बने।

हर घर नल से जल लाना है, जीवन को खुशहाल बनाना है।

राज्य पेयजल एवं स्वच्छता मिशन

(नमामि गंगे एवं ग्रामीण जलापूर्ति विभाग)
उ0 प्र0 जल निगम कम्पाउण्ड, 6 राणा प्रताप मार्ग लखनऊ -226001

Har Ghar Jal
Jal Jeevan Mission